04 - मप्र में ब्लू इकॉनामी लाना असली कसौटी

05 - हिंदी की वैश्विक पत्रकारिता: प्रिंट से ऑनलाइन की यात्रा

06 - 'स्वाधीनता के गान' में गूँजा वतन परस्ती का पैगाम

07 - स्कूलों में एक साथ गूंजा जागरूकता का संदेश

A Daily News Magazine
भोपाल
शुक्रवार, 10 जुलाई, 2026

सुबह सवेरे

भोपाल एवं इंदौर से एक साथ प्रकाशित

वर्ष 23, अंक 308, नगर संस्करण, पृष्ठ 8, मूल्य रू. 2

subahsaverenews@gmail.com
facebook.com/subahsaverenews
www.subahsavere.news
twitter.com/subahsaverenews

प्रसंगवश

सांस्कृतिक पत्रकारिता के आयाम और चुनौतियां

अजय बोकिल

कहते हैं कि 'संस्कृति ऐसी जटिल समग्रता है, जिसमें ज्ञान, विश्वास, कला, नैतिकता, कानून, रीति-रिवाज और समाज की इकाई के रूप में मनुष्य द्वारा अर्जित अन्य क्षमताएं और आदतें शामिल हैं। इस कथन को सही माना जाए तो कला और संस्कृति की पत्रकारिता अपने आप में बहुत विशद और गहन विषय है, जिसके लिए पूरी गंभीरता, ज्ञान सम्पन्नता और सांस्कृतिक चेतना की आवश्यकता है। दुर्भाग्य से पारंपरिक पत्रकारिता में इसे दोयम दर्जे का स्थान ही मिल पाया है। इसका कारण संभवतः यह है कि सांस्कृतिक रिपोर्टिंग की 'सेलेबिलिटी' बहुत कम होती है। ऐसे में मुख्य धारा के मीडिया में अभी भी वह 'परिशिष्टीय पत्रकारिता' से आगे नहीं बढ़ सकी है। जबकि कला और संस्कृति की गतिविधियां समाज के प्रबुद्ध वर्ग में गहरी हलचल पैदा करती हैं। अखबारों में अभी भी वह 'अनिवार्य' के दायरे से बाहर है तो टीवी न्यूज चैनलों में तो सिरे से गायब है। अपनी समग्रता में कला एवं सांस्कृतिक गतिविधियां तथा आंदोलन समकालीन समाज के अंतर्मन की सामूहिक सांस्कृतिक अभिव्यक्ति होते हैं। जो धीरे-धीरे विरासत में बदल जाते हैं।

सांस्कृतिक अथवा कला पत्रकारिता भी पत्रकारिता की ही एक उप शाखा है। जिसमें कला गतिविधियों की खबरें, कला एवं साहित्यिक समीक्षाएं तथा समकालीन लोकप्रिय संस्कृति का समावेश है। अब इसके दायरे में शास्त्रीय और लोक कलाओं के साथ साथ अब लाइफ स्टाइल, सामाजिक विमर्श, चिंतनशील नैतिक मुद्दों को शामिल कर लिया गया है। सांस्कृतिक पत्रकारिता के भी कई सौंदर्यपरक रूप और अनुशासन हैं। फिर भी इसका मुख्य उद्देश्य कला और साहित्य जगत तथा सामान्य संवेदनशील व रचनात्मक रूझान वाले पाठकों के बीच एक चैतन्य पुल का काम करना है। कला, साहित्य, लोककला के अलावा आध्यात्मिक पत्रकारिता तथा लाइफ स्टाइल पत्रकारिता भी इसकी प्रमुख विधाएं हैं। अब तो विज्ञान कथाएं भी इसमें शामिल हो गई हैं।

यूरोप में सांस्कृतिक पत्रकारिता की शुरूआत 1710 में ब्रिटिश पत्रि का 'द स्पेक्टेटर' से मानी जाती है। इसकी शुरूआत साहित्यिक निबंधों के प्रकाशन से हुई और धीरे-धीरे इसका विस्तार क्लासिकल कला- साहित्य से लोकप्रिय संस्कृति और लाइफ स्टाइल तक हो गया। जबकि अमेरिका में कला पत्रकारिता की शुरूआत 19वीं सदी से मानी जाती है। इसके तहत वास्तुशिल्प, नृत्य कला, साहित्य, संगीत, थियेटर और चाक्षुष कलाओं को कवरेज मिलने लगा। इनसे सम्बन्धित विषयों पर बहसें और उनके आकलन को महत्व मिला। कई नामी कला समीक्षक भी कला पत्रकार के तौर पर काम करने लगे। बीसवीं सदी आते- आते जैसे-जैसे उपभोक्ता संस्कृति का विकास होता गया, कला पत्रकारिता में उच्च कला बोध से युक्त कवरेज के मुकाबिल लोकप्रिय कलाओं जैसे कि जॉज संगीत, चलचित्र, फोटोग्राफी आदि को भी स्थान मिलने लगा। बीसवीं सदी के उत्तरार्द्ध में कला पत्रकारिता में और बदलाव देखा गया। इंटरनेट के आगमन और डिजीटल पत्रकारिता के उद्भव ने कला पत्रकारिता को एक नया आयाम दिया। कवरेज में शास्त्रीय कलाओं की तुलना में लोकप्रिय सांस्कृतिक रूपों और 'मास मार्केट एंटरटेनमेंट' को ज्यादा महत्व? मिलने लगा। साथ ही सांस्कृतिक पत्रकारिता का लोकतांत्रिकरण और लोकव्यापीकरण भी हुआ। सांस्कृतिक पत्रकारिता कुछ हद तक कला आंदोलनों, कला गतिविधियों को निर्देशित भी करने लगी।

भारत की हिंदी पत्रकारिता में सांस्कृतिक पत्रकारिता का आरंभ तो भारतेंदु हरिश्चन्द्र के समय ही हो गया था। उन्नीसवीं सदी में 'कवि वचन सुधा', और हरिश्चंद्र मैगजीन के माध्यम से भारत में सांस्कृतिक जागरण की शुरूआत हुई, जो द्विवेदी युग में और परवान चढ़ी। 'सरस्वती' और हंस' जैसी पत्रिकाएं इसकी ध्वजवाहक बनी। स्वातंर्त्योत्तर युग में 'प्रतीक', 'धर्मयुग', साप्ताहिक हिंदुस्तान, कादम्बिनी, नवनीत आदि पत्रिकाओं ने सांस्कृतिक पत्रकारिता में महत्वपूर्ण योगदान दिया। 'नईदुनिया' जैसे अखबारों ने पूर्णकालिक कला संवाददाता रखने की परंपरा शुरू की, जिसे आज और कुछ प्रमख अखबार फॉलो कर रहे हैं। भारत में उन्नीसवीं शताब्दी के अंत में आई नवजागरण चेतना और बीसवीं शताब्दी के आरंभ में आई सुधार की बयार में सांस्कृतिक पत्रकारिता ने अपनी महती भूमिका निभाई। यही 'सांस्कृतिक पुर्नजागरण' राष्ट्रीय चेतना की आत्मा बन गई। जिसमें अपनी संस्कृति के साथ-साथ राष्ट्रप्रेम भी कूट-कूट कर भरा था।

यह प्रश्न कि सांस्कृतिक पत्रकारिता मुख्या धारा की पत्रकारिता क्यों नहीं बन पाती, इसके कई कारण है। पहला तो है बाजार। यूं कला का भी अपना बड़ा और विशाल बाजार है, लेकिन सामान्य अर्थ में जिस 'अर्थ केन्द्रित' बाजार की बात की जाती है, उसमें वह ज्यादा फिट नहीं होता। सांस्कृतिक रिपोर्टिंग को अभी भी 'लाइट' मूड का माना जाता है। सांस्कृतिक पत्रकारिता के समक्ष चुनौतियों के साथ-साथ इसके विविध आयामों को भी समझना जरूरी है। मसलन सांस्कृतिक पत्रकारिता में कला, साहित्य, रंगमंच, संगीत, सिनेमा, और लोक परंपराओं सहित किसी समाज की जीवनशैली और मूल्यों का समालोचनात्मक विश्लेषण समाहित है, लेकिन यह केवल मनोरंजन या सूचना तक सीमित नहीं है, बल्कि यह किसी राष्ट्र या समुदाय की वैचारिक और भावनात्मक पहचान को समझने और संरक्षित करने का माध्यम है। इसका मुख्यध उद्देश्य एक सामान्य पाठक में कला और संस्कृति के प्रति सकारात्मक समझ पैदा करना है। यह बात कहने में बहुत आसान लगती है, लेकिन है नहीं। एक कला रिपोर्टर को इन्हीं चुनौतियों से जूझते हुए अपनी राह बनानी पड़ती है। कला अथवा सांस्कृतिक पत्र कारिता की चुनौतियों में सबसे बड़ी समस्या प्रशिक्षित और कला की समझ रखने वाले पत्रकारों की कमी है। आमतौर पर कला आयोजनों अथवा कला गतिविधियों की रिपोर्टिंग सतही ज्यादा होती है। उसमें कला मानकों, सिद्धांतों, नियमों की जानकारी कम, ब्यौरे देने की प्रवृत्ति ज्यादा है। दूसरा कारण रफ्तार वाले तथा आज और अभी के दौर में पाठकों और दर्शकों में धैर्य की कमी है। कला रिपोर्टिंग को शेयर मार्केट के उतार-चढ़ाव की तरह नहीं समझा जा सकता। पिछले कुछ समय से पारंपरिक मीडिया को डिजीटल और सोशल मीडिया से कड़ी चुनौती मिल रही है। लेकिन वहां 'क्लिकबेट' और एल्गोरिदम के दबाव में केवल सनसनी फैलाकर 'लाइक्स' बटोरने वाली पत्रकारिता ही फल-फूल रही है। जबकि किसी भी कला गतिविधि की आत्मा तक पहुंचना ही सच्ची सांस्कृतिक रिपोर्टिंग है। सांस्कृतिक पत्रकारिता का अर्थ केवल साहित्यिक, नाट्य या फिल्म समीक्षा लिखना ही नहीं है। बर्लिन विश्वविद्यालय के शिक्षक और छात्रों के बारे में कहा जाता है कि वो कला के नए प्रारूपों पर प्रयोग और परीक्षण करते हैं। सांस्कृतिक राजनीति को समझाने के तरीके सीखते हैं और सांस्कृतिक परिदृश्य में वर्तमान रुझानों और विकासों की समझ विकसित करने और उनका वर्णन करना भी सीखते हैं।

माना जाता है कि कला पत्रकारिता आज सभी जगह संकट में है। 2017 अप्रैल में पत्रिका 'अमेरिकन थियेटर' ने चेताया था कि 'कला पत्रकारिता अब जिंदा रहने के लिए संघर्ष कर रही है।' क्योंकि अखबारों में कला साहित्य का कवरेज घटता जा रहा है। कला रिपोर्टरों की नौकरियों पर गाज गिर रही है। भारत में भी हालात बहुत अलग नहीं है। दरसअल सांस्कृतिक रिपोर्टिंग और कला-संस्कृति का नाता परस्पर पूरक का है। भारत में सांस्कृतिक चेतना बहुत प्राचीन है और कालजयी है। इसलिए तमाम दिक्कतों के बावजूद इसकी समुचित अभिव्यक्ति मीडिया में होनी ही चाहिए।

सुप्रभात

विस्मृत घाव पुराना फिर से
पीड़ादायक हो जाएगा।
जग से पीर न कहना साथी,
जग निर्णायक हो जाएगा।
कितना दुख तुमने भोगा है,
कितनी रैन जगे हैं नयना?
कितने सपने लुटे तुम्हारे,
कितनी बार ठगे हैं नयना?
क्यों एकाकीपन प्यारा है,
क्यों सुख का हर घट रीता है?
कैसे पल-पल मृत्यु माँगकर,
कोई सदियों तक जीता है?
इस सबके ऊपर क्षण भर का
सुख परिचायक हो जाएगा।
जग से पीर न कहना साथी..................................
अनुमानों को तथ्य बताने वाले, झूठे ईश मिलेंगे।
बिन सुनवाई निर्णय देने वाले न्यायाधीश मिलेंगे।
सबको दोष पराए दिखते अपने कौन देख पाता है?
इसीलिए शायद दर्पण में उत्तर दक्खिन हो जाता है।
दण्डधरों की महाभीड़ में कौन सहायक हो जाएगा?
जग से पीर न कहना साथी..................................

-अभिषेक औदिच्य

कालापीपल में सीएम मोहन का ग्रैंड रोड शो

किसानों को अब साल में एक बार चुकाना होगा लोन

रेलवे ओवर ब्रिज और नई सड़कों की घोषणा, कहा- इसी महीने लागू होगा यूसीसी

शाजापुर (नप्र)। सीएम मोहन यादव ने शाजापुर के कालापीपल को बड़ी सौगात दी है। उन्होंने 30.86 करोड़ रुपए की लागत के विभिन्न विकास कार्यों की सौगात दी है। साथ ही सीएम ने वहां रोड शो किया है और किसानों को संबोधित किया है। सीएम मोहन यादव ने शाजापुर को नई सड़कें और रेलवे ओवर ब्रिज देने की घोषणा की।

किसानों को छह-छह महीने के ब्याज से दी मुक्ति- उन्होंने कहा कि जो धरती को हरियाली का उपहार देते हैं, वही आने वाले कल को आकार देते हैं। किसान मुस्कुराए तो मुस्कुराता जहां है, इन्हीं की मेहनत से महकता अपना हिंदुस्तां है। उन्होंने कहा कि किसानों का 6-6 महीने के ब्याज का झंझट खत्म हो जाएगा। अब हम एक साल के लिए लोन देंगे। किसानों के लिए हमारी सरकार सबकुछ करने के लिए तैयार है। मैं कांग्रेस के मित्रों से पूछना चाहता हूं कि आपको परेशानी क्या है। आप बताइए नर्मदा कहां और शाजापुर कहां। फिर भी, यहां के 118 गांवों में नर्मदा जल आता है। आने वाले दिनों में जो-जो गांव बचे हैं, वहां भी पानी देंगे, पूरे क्षेत्र में पानी देंगे।

बीजेपी की सरकार में बढ़ा सिंचाई का रकबा

उन्होंने कहा कि रहिमन पानी राखिए, बिन पानी सब सून, पानी गए न ऊबरे, मोती-मानुस चून। खेत में किसान और सीमा पर जवान, दोनों का सम्मान, ये है भाजपा की पहचान। हमने पारस पत्थर तो नहीं देखा, लेकिन यह पक्की बात है कि अगर सूखे खेत को पानी मिल जाए, तो वह सोना उगलने लगता है। उन्होंने कहा कि राज्य से 250 से ज्यादा नदियां निकलती हैं। नर्मदा, पार्वती, कालीसिंध, चंबल, केन बेतवा जैसी नदियां बहती रहीं और कांग्रेस के लोग सरकार चलाते रहे। कांग्रेस केवल सत्ता चाहती है। जब बीजेपी की सरकार बनी तब जाकर सिंचाई का रकबा 44 लाख हैक्टेयर हुआ।

खेती और घर के लिए अलग-अलग बिजली

सीएम मोहन यादव ने कहा कि पहले रात में लाइट नहीं जलती थी, अब दिन में लाइट जलती है। किसान सिंचाई के लिए डीजल की टंकी लेकर दौड़ता था, जगह-जगह धक्के खाता था, लेकिन बिजली नहीं मिलती थी। हमारी सरकार में गांव की लाइट अलग, खेत की लाइट अलग है। आने वाले समय में हमारी सरकार और सौगात देगी। बरसात के बाद जब किसान गेहूं-चने की खेती करेंगे, तो आपको लाइट दिन में ही मिलेगी। आपको रात को पानी डालने की जरूरत ही नहीं होगी।

कांग्रेस को माफी मांगनी चाहिए- उन्होंने कहा कि कांग्रेस को अपने पापों के लिए किसानों से माफी मांगनी चाहिए। किसान को भगवान के समान पूजने के काम, अगर कोई सरकार करती है, तो भारतीय जनता पार्टी की सरकार करती है। सीएम ने कहा कि किसानों की आमदनी बढ़ाने के लिए हमारी सरकार एक के बाद एक काम करती जा रही है। किसान के लिए लागत कम, आमदनी डबल होनी चाहिए। अब हम किसान से एमएसपी पर फसल खरीदेंगे।

आंध्र प्रदेश में कोरोना से एक व्यक्ति की मौत

4 दिन इलाज चला, दोनों फेफड़े खराब हो गए थे

दो जिलों में 5 पॉजीटिव केस मिल

अमरावती (एजेंसी)। आंध्र प्रदेश के कडप्पा में 46 साल के एक व्यक्ति की कोविड-19 से मौत हो गई। व्यक्ति को पिछले महीने 24 जून को वेल्लोर के सीएमसी अस्पताल में भर्ती कराया गया था। जांच में उसे निमोनिया पाया गया। कोविड की आशंका पर 26 जून को टेस्ट किया गया, जिसमें रिपोर्ट पॉजिटिव आई। जांच में पता चला कि उसके दोनों फेफड़े गंभीर रूप से संक्रमित होकर निमोनिया की चपेट में आ गए थे। इलाज के दौरान 28 जून को उसकी मौत हो गई। जिला चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी रवि बाबू ने बताया कि मृतक शराब पीता था। स्वास्थ्य विभाग के अनुसार, मृतक को सांस फूलने और खांसी की शिकायत के बाद अस्पताल लाया गया था। मृतक के संपर्क में आए लोगों की पहचान कर उनकी ट्रेसिंग भी की जा रही है।

कडप्पा और तिरुपति में 5 नए पॉजिटिव केस मिले

कोरोना से मौत के बाद राज्यभर में समीक्षा कराई गई। इस दौरान कडप्पा और तिरुपति जिलों में 5 और पॉजिटिव मामले सामने आए हैं। मेडिकल एजुकेशन डायरेक्टर ने राज्य के सरकारी अस्पतालों से आइसोलेशन बेड, आईसीयू बेड, ऑक्सीजन, वेंटिलेटर, दवाइयों, रैपिड टेस्ट किट, एंबुलेंस और मेडिकल स्टाफ की उपलब्धता का ब्यौरा मांगा है। कोरोना वायरस का पहला मामला दिसंबर 2019 में चीन के वुहान शहर में सामने आया। शुरुआत में इसे अज्ञात कारणों वाले निमोनिया के मामलों के रूप में देखा गया। बाद में वैज्ञानिकों ने इसे नए कोरोना वायरस के रूप में पहचाना।

हिन्दी पत्रकारिता का पाथेय और दो सदी

आरएनटीयू में दो दिनी राष्ट्रीय संगोष्ठी, अग्रणी पत्रकारों का समागम

समय की सतहों पर उभरीं जाने कितनी इबारतें चमकीला चेहरा लिए नुमाया होती हैं। इन इबारतों में बेमिसाल सिलसिले होते हैं। इन सिलसिलों में ठहर गये कुछ किरदार अपने होने की तस्दीक़ करते हैं। ये वे पुरुषार्थी होते हैं जो कभी भी अपने किये का लेखा-जोखा नहीं रखते लेकिन समय की पोथी में उनकी साधना का हिसाब ज़रूर दर्ज होता है। बरस बीत जाते हैं। फिर कोई लम्हा आता है और विरासत बन चुकी उनकी साधना तथा तप के आगे पीढ़ियाँ अपना माथा झुका देती है।

दौड़, होड़, वर्चस्व और रिझाने के पैमानों में ख़ुद को नापती आज की पत्रकारिता के सामने एक ऐसा स्मृति प्रसंग है जहाँ 'हिन्दुस्तानियों के हित के हेत' ली गयी शपथ पर बरकरार रहने वाले युगल किशोर शुक्ल और 'उदन्त मार्तण्ड' होने के अर्थ पढ़े जा रहे हैं। दो सौ साल पहले तीस मई को हिन्दी पत्रकारिता ने अपनी यात्रा का पहला पाँव वक्त की ज़मीन पर जिस पुरज़ोर यक़ीन से भरकर आगे बढ़ाया था, इक्कीसवीं सदी उसे अपने वजूद में तौलते हुए कई सारे सवालों से भरी है। अहम सवाल शब्द की सत्ता का है। उसके भरोसे और सामने खड़ी चुनौती का है।

लेकिन बकौल दुष्यंत ''ये सूरत बदलनी चाहिए'' तो अपनी ओर सक्षम, ईमानदार कोशिशों की, संकल्पों की, फ़र्ज़ अदायगी की दरकार होती है। भोपाल की सरज़मीं पर रबीन्द्रनाथ टैगोर विश्वविद्यालय जैसे शिक्षा संस्थान ने इस दिशा में अपनी अगुआ उपस्थित दर्ज की है। एक बड़े विश्वासजीवी सांस्कृतिक नेतृत्व की मिसाल बनकर उभरा है यह विश्वविद्यालय। दो सदी की हिन्दी पत्रकारिता को याद करते हुए एक अनूठा समारोही सबक रचने की पहल 9, 10 और 11 जुलाई 2026 को हो रही है। इसी प्रश्नाकुलता से भरकर अपने समकाल को देखते-गुनते विचारों की पृष्ठभूमि में रबीन्द्रनाथ टैगोर विश्वविद्यालय ने पत्रकारिता पर एकाग्र अनुष्ठान परिकल्पित किया है।

निश्चय ही रबीन्द्रनाथ टैगोर विश्वविद्यालय (आरएनटीयू) हिन्दी पत्रकारिता की दो शताब्दियों की गौरवपूर्ण यात्रा का साक्षी बनेगा। संगोष्ठी का विषय ''समकालीन हिन्दी पत्रकारिताः परम्परा, परिवर्तन और भविष्य'' रखा गया है। यह आयोजन विश्व रंग और स्कोप ग्लोबल स्किल्स यूनिवर्सिटी के सहयोग से होगा। कार्यक्रम में साहित्य और हिन्दी पत्रकारिता से जुड़ी देशभर की कई बड़ी हस्तियाँ शिरकत करेंगी। संगोष्ठी में आठ सत्र रखे गए हैं।

शुभारंभ 9 जुलाई को शाम 7 बजे से रवीन्द्र भवन में 'स्वाधीनता के गान' की प्रस्तुति के साथ होगा। इसकी परिकल्पना संतोष चौबे ने की है। शब्द, संगीत और नृत्य के इस अनूठे रूपक को पुरूकथक नृत्य अकादेमी भोपाल के 75 कलाकारों का समूह प्रस्तुत करेगा। इस भव्य मंचन का नृत्य निर्देशन सुप्रसिद्ध नृत्यांगना और कोरियोग्राफर क्षमा मालवीय ने किया है। स्वाधीनता आंदोलन के दौरान लिखी गयी चुनिंदा कविताओं की कथात्मक विषय वस्तु को कला समीक्षक-उद्घोषक विनय उपाध्याय ने अपनी प्रभावशाली आवाज़ में प्रस्तुत किया है। इन कविताओं की धुनें संगीतकार संतोष कौशिक ने तैयार की हैं। ध्वनि प्रभाव तथा तकनीकी संयोजन उमेश तरकसवार तथा आईसेक्ट स्टूडियो के रेकार्डिस्ट आशीष पोतदार ने किया है। ललित निबंधकार श्रीराम परिहार तथा गीतकार रामवल्लभ आचार्य ने एक विशेष परियोजना के तहत **शेष पृष्ठ 2 पर...**

हिंदी पत्रकारिता द्विशताब्दी पर आज विशेष आयोजन

हिंदी पत्रकारिता के गौरवपूर्ण दो सौ वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में आरएनटीयू भोपाल द्वारा समकालीन पत्रकारिता पर आयोजित तीन दिनी विमर्श पर केन्द्रित विशेष परिशिष्ट।

परिशिष्ट के शेष पेज-2-5-8 पर।

भोपाल का तापमान

अधिकतम 20 °c | न्यूनतम 18°c

सुबह सवेरे

भोपाल ■ शुक्रवार, 10 जुलाई 2026

जो अग्नि हमें गर्मी देती है , हमें नष्ट भी कर सकती है ; यह अग्नि का दोष नहीं है।

चाणक्य नीति

संक्षिप्त समाचार

भारत में लॉन्च हुई दुनिया की पहली बेसल इंसुलिन

डायबिटीज मरीजों को हफ्ते में एक बार ही लगाना होगा इंजेक्शन

नई दिल्ली (एजेंसी)। डेनमार्क की दवा कंपनी नोवो नॉर्डिस्क ने बुधवार को भारत में इंसुलिन आइकोडेक लॉन्च की। कंपनी का दावा है कि यह दुनिया की पहली सप्ताह में एक बार दी जाने वाली बेसल इंसुलिन है, जो टाइप-1 और टाइप-2 डायबिटीज के वयस्क मरीजों के लिए है। इसके

आने से रोजाना लगने वाले 365 इंसुलिन इंजेक्शन घटकर साल में 52 रह जाएंगे। कंपनी के मुताबिक, इसका उद्देश्य भारत में इंसुलिन शुरू करने में होने वाली देरी को कम करना है। नोवो नॉर्डिस्क का कहना है कि रोज इंजेक्शन लगाने का डर मरीजों के बीच इंसुलिन थेरेपी शुरू करने में सबसे बड़ी बाधा है, जिसके कारण औसतन सात से नौ साल की देरी हो जाती है। कंपनी ने 700 यूनिट का पैक 2611 में लॉन्च किया है। यानी इसकी कीमत 3.73 प्रति यूनिट पड़ेगी, जो तुलना में सस्ती बताई गई है।

मैं सलमान, मैं राशिद और मैं असलम...

तौबा-तौबा करते हुए पुलिस थाने पहुंचे 47 मुल्जिम

सहारनपुर (एजेंसी)। सहारनपुर के थाना चिलकाना क्षेत्र में गोकशी के मामलों में पहले संलिप्त रहे 47 आरोपी स्वेच्छा से थाने पहुंचे और भविष्य में अपराध की दुनिया से पूरी तरह दूरी बनाने का संकल्प लिया। इनमें ऐसे आरोपी भी शामिल रहे जिन पर

गैंगस्टर एक्ट के तहत कार्रवाई हो चुकी है। थाने पहुंचे सभी लोगों के हाथों में संदेश लिखी तख्तियां थीं। इन पर कानून का सम्मान करने, अपराध से दूर रहने और ईमानदारी से जीवनयापन करने की बातें लिखी गई थीं। गौकशी मामले मे पुलिस की सख्ती होते देख 47 लोग थाने पहुंचे सभी लोगों के हाथों में संदेश लिखी तख्तियां थीं। इन पर कानून का सम्मान करने, अपराध से दूर रहने और ईमानदारी से जीवनयापन करने की बातें लिखी गई थीं।

ममता को कलकत्ता हाईकोर्ट से राहत

टीएमसी के फ्रीज बैंक अकाउंट से पैसे निकालने की मिल गई मंजूरी

कोलकाता (एजेंसी)। कलकत्ता हाई कोर्ट से ममता बनर्जी के गुट को बड़ी राहत मिली है। कोर्ट ने गुरुवार को टीएमसी के रोजाना खर्चों को संभालने के लिए पार्टी के फ्रीज किए गए 3 बैंक खातों से पैसे

निकालने के लिए अनुमति दे दी है। अदालत ने इसके लिए एक स्पेशल ऑफीसर नियुक्त किया है। 18 जून को बिधाननगर पुलिस कमिश्नरेट के साइबर क्राइम पुलिस स्टेशन में शिकायत दर्ज होने के बाद पुलिस ने तीनों बैंक खातों को फ्रीज कर दिया था। आरोप लगा था कि ये तीनों खाते अपराध से मिली रकम रखने की जगह थे। अदालत ने कलकत्ता हाई कोर्ट के रिटायर्ड जज सुब्रत तालुकदार को 30 सितंबर, 2026 तक ममता बनर्जी के नेतृत्व वाले गुट के रोजाना के खर्चों को चलाने के लिए ऑफीसर नियुक्त किया।

आधे देश में बारिश का 'आफतकाल'

● दिल्ली से एमपी और महाराष्ट्र तक भारी बारिश ने ढाया कहर ● झमाझम बारिश से जीना हुआ मुहाल, कई जगह ढहीं इमारतें

नई दिल्ली (एजेंसी)। दिल्ली, मुंबई, गुजरात, महाराष्ट्र, केरल और हिमाचल प्रदेश समेत देश के कई राज्यों में भारी बारिश का कहर जारी है। भारी बारिश के कारण जगह-जगह जलभराव, बाढ़ भूस्खलन और यातायात बाधित होने की घटनाएं सामने आ रही हैं। मंगलवार से दिल्ली-एनसीआर में बारिश का सिलसिला जारी है। इस बीच मौसम विभाग ने 17 राज्यों में भीषण बारिश के साथ आंधी और तूफान को लेकर अलर्ट जारी किया है। महाराष्ट्र के रायगढ़ का एक वीडियो सोशल मीडिया पर जमकर वायरल हो रहा है, जिसमें 3 हजार एलपीजी सिलेंडर पातालगंगा नदी में बहते हुए दिखाए दे रहे हैं। यह वीडियो रायगढ़ में पातालगंगा एलपीजी बॉटलिंग प्लांट का है। अधिकारियों के अनुसार, प्लांट की दीवार गिर गई। इसके बाद पानी सीधे प्लांट के अंदर घुस गया।

● **मध्य प्रदेश में झमाझम, पानी में बहा युवक-** बीते बुधवार को मध्य प्रदेश के 27 जिलों में भारी बारिश हुई। सबसे ज्यादा दमोह में 1.75 इंच बारिश दर्ज की गई। बारिश के कारण नदियों के जलस्तर बढ़ने लगे हैं। इस बीच खरगोन में रूपारेल नदी के तेज बहाव में एक युवक बह गया। उत्तराखंड में भी भारी बारिश का कहर जारी है। पहाड़ से लेकर मैदान तक बुधवार को भारी बारिश हुई। उत्तरकाशी में नालूपानी और यमुनोत्री नेशनल हाईवे पर लैंडस्लाइड हुआ। वहीं, टिहरी में बुधवार को एनएच-707ए पर दुकानों के पास लैंडस्लाइड में एक मकान गिर गया।

● **गुजरात के सूरत में कम से कम 13 लोगों की मौत-** गुजरात के सूरत में भारी बारिश के कारण बाढ़ जैसे हालात बन गए हैं। बुधवार को कई जगहों पर घरों, कमर्शियल कॉम्प्लेक्स और दुकानों में घुस गया। सूरत के निचले इलाकों से 3,400 से ज्यादा लोगों को बचाया गया और 3,800 से ज्यादा लोगों को दूसरी जगहों पर भेजा गया।

इटावा में तीन किसानों की मौत हो गई, जबकि आगरा, बदायूं और मथुरा में मकान व दुकान ढहने से कई लोग घायल हो गए। दिल्ली के रोहिणी सेक्टर-16 में एक पांच मंजिला नवनिर्मित इमारत बुधवार शाम को गिर गई। इमारत के मलबे में दबने से मरने वालों की संख्या बढ़कर चार हो गई है। मौसम विभाग ने अगले तीन घंटे के लिए दिल्ली में मौसम को लेकर अलर्ट जारी किया है। अलग-अलग स्थानों पर गरज के साथ 30 से 40 किमी प्रति घंटे की रफ्तार से आंधी चलने की संभावना है।

केरल में 5 लोगों की मौत

केरल के वायनाड में सुरंग सड़क निर्माण स्थल पर हुए भूस्खलन में मरने वालों की संख्या पांच हो गई है। एक शव बरामद किया गया है, चार लोग अभी भी लापता बताए जा रहे हैं। यह भूस्खलन 7 जुलाई को वायनाड और कोझिकोड जिलों को जोड़ने वाली अनाक्कोम्पोयिल-मेप्पडी सुरंग परियोजना स्थल के पास हुआ। लापता लोगों की तलाश के लिए बचाव अभियान जारी है। वायनाड जिले में अनाक्कम्पोयिल-कल्लाडी-मेप्पाडी ट्विन टनल प्रोजेक्ट (जो अभी बन रहा है) के पास हुए भूस्खलन से क्षतिग्रस्त हुआ एक घर दिखाई दे रहा है। इस घटना के बाद लगातार तीसरे दिन भी बचाव कार्य जारी है। उत्तर प्रदेश में मानसूनी बारिश शुरू है। लगातार हो रही बारिश के बीच वज्रपात में बुधवार को देवरिया, पीलीभीत और

सुप्रीम कोर्ट पहुंचा खाड़ी देशों के बच्चों का मामला

सीबीएसई इवैल्यूएशन स्कीम के खिलाफ होगी सुनवाई

नई दिल्ली (एजेंसी)। संयुक्त अरब अमीरात (यूएई), सऊदी अरब, कुवैत जैसे खाड़ी देशों में पढ़ाई करने वाले सीबीएसई बोर्ड के 12वीं के स्टूडेंट का मामला अब सुप्रीम कोर्ट पहुंच चुका है। सुप्रीम कोर्ट ने बुधवार को 12वीं के उन स्टूडेंट्स द्वारा दायर याचिकाओं पर सुनवाई करने पर सहमित जताई है, जिनके सीबीएसई बोर्ड एग्जाम ईरान-अमेरिका युद्ध की वजह से रद्द हो गए थे। इन याचिकाओं में सीबीएसई की असेसमेंट स्कीम यानी मूल्यांकन योजना को चुनौती दी गई है।

जस्टिस केवी विश्वनाथन और आलोक अराधे की पीठ ने 30 रेगुलर स्टूडेंट्स द्वारा दायर याचिका पर केंद्र

और सीबीएसई को नोटिस जारी किया। ये स्टूडेंट्स मांग कर रहे हैं कि बोर्ड की 27 मार्च, 2026 को जारी की गई मूल्यांकन नीति में बदलाव किया जाए।

खाड़ी देशों ने बताई परेशानी

सीबीएसई ने बहरीन, ईरान, कुवैत, ओमान, कतर, सऊदी अरब और संयुक्त अरब अमीरात (यूएई) में पश्चिम एशिया में युद्ध की वजह से 12वीं की बोर्ड परीक्षाएं रद्द कर दी थीं। इस वजह से स्टूडेंट्स खासे परेशान हो गए। इसके बाद उन्हें इंटरनल असेसमेंट के आधार पर नंबर दिए गए। इस वजह से स्टूडेंट्स को भारत के टॉप इंजीनियरिंग कॉलेजों में दिक्कतें आने लगीं। वे प्रतिष्ठित इंजीनियरिंग कॉलेजों में दाखिल के लिए अयोग्य हो गए।

खाड़ी के कई देशों में अमेरिकी ठिकानों पर ड्रोन अटैक

तेहरान (एजेंसी)। ईरान ने बताया है कि उसने कतर, कुवैत और बहरीन में अमेरिकी सैन्य ठिकानों पर ड्रोन हमले किए हैं। ईरानी सेना के मुताबिक, हमलों में कुवैत के पैट्रियट मिसाइल सिस्टम, कतर के अर्ली वॉर्निंग सैटेलाइट एंटीना

और बहरीन में अमेरिकी सेना के फ्यूल टैंक को निशाना बनाया गया। इन हमलों के लिए बड़ी संख्या में ड्रोन का इस्तेमाल किया गया। इससे पहले अमेरिका ने ईरान पर लगातार दूसरे दिन बड़े पैमाने पर एयरस्ट्राइक की। अमेरिकी सेंट्रल कमांड ने करीब 90 सैन्य ठिकानों को निशाना बनाने का दावा किया। इन हमलों से ईरान के अहवाज में 3 लोगों की मौत हुई है। ईरानी सेना ने कहा कि वह अमेरिकी हमलों का जवाब देती रहेगी।

मात्र 60 मिनट में पटना से मुजफ्फरपुर

बिहार में 'रफ्तार' की नई क्रांति का ऐलान

पटना (एजेंसी)। बिहार में हाई-स्पीड पब्लिक ट्रांसपोर्ट का सपना जल्द हकीकत बन सकता है। राज्य सरकार ने पटना को चार बड़े शहरों से रैपिड ट्रांजिट सिस्टम के जरिए जोड़ने की दिशा में बड़ा कदम उठाया है। परियोजना पूरी होने के बाद राजधानी से मुजफ्फरपुर, गया, भागलपुर और आरा तक का सफर पहले के मुकाबले काफी तेज और आरामदायक हो जाएगा। मुख्यमंत्री सम्राट चौधरी की अध्यक्षता में हुई बिहार कैबिनेट की बैठक में चार

रैपिड ट्रांजिट कॉरिडोर की विस्तृत योजना तैयार कराने को मंजूरी दी गई है।

पटना से मुजफ्फरपुर सिर्फ एक घंटे में

फिलहाल पटना से मुजफ्फरपुर पहुंचने में सामान्य ट्रेनों से करीब तीन घंटे लगते हैं। वंदे भारत एक्सप्रेस यह दूरी करीब डेढ़ घंटे में तय करती है। वहीं, रैपिड ट्रेन शुरू होने के बाद यह सफर महज 60 मिनट में पूरा होने का अनुमान है। रैपिड ट्रेन सामान्य रेलवे और मेट्रो के बीच की आधुनिक परिवहन व्यवस्था है, जिसे रीजनल रैपिड ट्रांजिट सिस्टम कहा जाता है। उद्देश्य निर्बाध कनेक्टिविटी उपलब्ध कराना है।

...पृष्ठ 1 का शेष

आरएनटीयू में दो दिनी राष्ट्रीय संगोष्ठी, अग्रणी पत्रकारों का समागम

इन कविताओं का कालक्रम के अनुसार चयन किया है। आईसेक्ट पब्लिकेशन द्वारा प्रकाशित इस संग्रह की पुस्तक का लोकार्पण भी होगा।

10 जुलाई को विश्वविद्यालय के शारदा सभागार में सुबह 10 बजे से 12 बजे तक उद्घाटन सत्र आयोजित होगा। कार्यक्रम की शुरूआत अनिरूद्ध जोशी के सितार वादन 'मंगलाचरण' से होगी। इसके बाद ''समकालीन हिन्दी पत्रकारिता- परंपरा, परिवर्तन और भविष्य'' विषय पर विजयदत्त श्रीधर, ओम थानवी और विजय मनोहर तिवारी अपने विचार रखेंगे। अध्यक्षता कुलाधिपति संतोष चौबे करेंगे।

इसी दिन दोपहर 12.30 बजे से मुख्यधारा की हिन्दी पत्रकारिता में साहित्य की भूमिका, समकालीन हिन्दी साहित्यिक पत्रकारिता तथा विज्ञान पत्रकारिता जैसे विषयों पर भी अलग-अलग सत्र आयोजित किए जाएंगे। इनमें ओम थानवी, सुधीश पचौरी, मनोज श्रीवास्तव, प्रियदर्शन, कृपाशंकर चौबे, अखिलेश, मुकेश वर्मा, क्षमा शर्मा, गीताश्री, पंकज सुबीर, देवेंद्र मेवाड़ी, कृष्ण कुमार मिश्र, मनीष मोहन गोरे, बलराम गुमास्ता और समीर गांगुली सहित अनेक वरिष्ठ पत्रकार, साहित्यकार और विशेषज्ञ भाग लेंगे। कार्यक्रम के दौरान विश्वविद्यालय द्वारा प्रकाशित पत्रिकाओं की प्रदर्शनी का उद्घाटन भी किया जाएगा। साथ ही हिन्दी पत्रकारिता के इतिहास और विभिन्न पत्रिकाओं के नवीन अंकों का लोकार्पण भी होगा।

तीसरे और अंतिम दिन 11 जुलाई को पत्रकारिता, संस्कृति, कला और वैश्विक परिदृश्य से जुड़े विषयों पर सत्र आयोजित किए जाएंगे। सुबह 10.30 से 12.00 बजे तक कथा सभागार में ''पत्रकारिता की मुख्यधारा में संस्कृति और कलाएँ'' विषय पर सत्र होगा, जिसकी अध्यक्षता वरिष्ठ कला समीक्षक प्रयाग शुक्ल करेंगे। इस दौरान उमेश त्रिवेदी, अजय ब्रह्मात्मज, अरविंद ओझा, विनीता चौबे और संजय पटेल अपने विचार रखेंगे। इसी सत्र में देशज कलाएँ और ज्ञान परंपरा पर एकाग्र आलेख तथा वार्ताओं की पुस्तक 'लोक का आलोक' का लोकार्पण भी किया जाएगा।

दोपहर 12.30 से 2.00 बजे तक ''रंग संवादः संस्कृति और सृजन'' विषय पर विशेष परिचर्चा होगी। अध्यक्षता कला चिंतक अशोक भौमिक करेंगे। सत्र में प्रेमशंकर शुक्ल, अजय बोकिल और शकील अख्तर वक्ता के रूप में शामिल होंगे। इस अवसर पर सांस्कृतिक पत्रिका 'रंग संवाद' के डेढ़ दशक पूरे होने के निमित्त मिली पाठकीय प्रतिक्रियाओं के संग्रह 'बहुवचन' का लोकार्पण किया जाएगा।

इसके बाद प्रतिनिधिमंडल स्कोप ग्लोबल स्किल्प विश्वविद्यालय के लिए प्रस्थान करेगा, जहाँ दोपहर 2.30 बजे विदेश में हिन्दी पत्रकारिता पर आधारित विशेष प्रदर्शनी का उद्घाटन किया जाएगा। कार्यक्रम में स्कोप ग्लोबल स्किल्स विश्वविद्यालय के कुलाधिपति सिद्धार्थ चतुर्वेदी की विशेष उपस्थिति रहेगी।

ऑस्ट्रेलिया में 30 हजार भारतीयों के बीच पहुंचे मोदी

भारतीयों से बोले-आपका शो हाउसफुल और ब्लॉकबस्टर

मेलबर्न (एजेंसी)। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने गुरुवार को ऑस्ट्रेलिया में भारतीय समुदाय को संबोधित किया है। मेलबर्न में हुए इस कार्यक्रम में ऑस्ट्रेलिया के पीएम एंथनी अल्बनीज भी उनके साथ पहुंचे। इस दौरान पीएम मोदी ने कहा कि वह मेलबर्न में भारतीय समुदाय के बीच आकर सम्मानित महसूस कर रहे हैं। भारतीय समुदाय ने जिस जोश और उत्साह का परिचय दिया है, वह

वाकई बेमिसाल है। उन्होंने भारतीय समुदाय से कहा कि आप भारत-ऑस्ट्रेलिया दोस्ती के सबसे मजबूत स्तंभों में से एक हैं। मेलबर्न में भारतीय समुदाय को संबोधित करते हुए पीएम नरेंद्र मोदी ने कहा, मैं उस जमीन के पारंपरिक मालिकों को नमन करते हुए अपनी बात शुरू करना चाहता हूं, जहां हम मिल रहे हैं।

2027 में नीट परीक्षा मात्र 6 दिन चलेगी

● कम्प्यूटर बेस्ड होगी, 1000 से ज्यादा परीक्षा केंद्र बनाए जाएंगे

पेपर लीक विवाद के बाद एनटीए सक्रिय, बदलाव की तैयारी

नई दिल्ली (एजेंसी)। देश की सबसे बड़ी मेडिकल प्रवेश परीक्षा नीट यूजी 2027 में कम से कम छह दिन चलेगी। यह पूरी तरह कंप्यूटर बेस्ड टेस्ट मोड में कराई जाएगी। परीक्षा के लिए देश भर में 1 हजार से ज्यादा परीक्षा केंद्र बनाए जाएंगे। नीट पेपर लीक विवाद के बाद यह बदलाव किए जा रहे हैं। नेशनल टेस्टिंग एजेंसी हर साल मेडिकल कॉलेजों में दाखिले के लिए नीट आयोजित करता है। अभी तक यह परीक्षा पेन-पेपर मोड में होती रही है। नीट यूजी में हर साल करीब 25 लाख कैंडीडेट्स हिस्सा लेते हैं। एनटीए ने सूत्रों के हवाले से बताया है कि परीक्षा की नई योजना अभी तैयार की जा रही है। इंजीनियरिंग प्रवेश

परीक्षा जेईई की तरह नीट भी अलग-अलग दिनों में आयोजित होगी।

एग्जाम मोड में बदलाव की वजह पेपर लीक विवाद- नीट में यह बदलाव 2024 में पेपर लीक और अन्य गड़बड़ियों के विवाद के बाद सामने आया है। इसके बाद केंद्र सरकार ने घोषणा की थी कि नीट यूजी अब पेन-पेपर की बजाय सीबीटी मोड में कराई जाएगी। शिक्षा और स्वास्थ्य मंत्रालय के बीच कई वर्षों से इस बदलाव पर चर्चा चल रही थी, लेकिन परीक्षा सुधारों की प्रक्रिया पेपर लीक विवाद के बाद तेज हुई। इसी परीक्षा के नतीजों के आधार पर डेंटिस्ट्री, आयुर्वेद, यूनानी और सिद्ध चिकित्सा के स्नातक पाठ्यक्रमों में भी दाखिला दिया जाता है।

मप्र में सरकारी बसों के संचालन के 40 रूट तय

इलेक्ट्रॉनिक टिकट मिलेंगे, ट्रैकिंग डिवाइस हर दस सेकेंड में पता चलेगी लाइव लोकेशन

भोपाल (नप्र)। मध्य सरकार ने सरकारी बसों का संचालन करने के लिए 40 लंबे बस रूट तय कर दिए हैं। राज्य सड़क परिवहन स्कीम को लेकर राज्य सरकार ने बस रूटों और सरकार द्वारा दी जाने वाली बस सेवा सुविधा को लेकर तीस दिन में आपत्तियां और सुझाव बुलाए हैं। इसके बाद इन बसों के संचालन की प्रक्रिया शुरू की जाएगी।

खास बात यह होगी कि बसों में इलेक्ट्रॉनिक टिकट मिलेंगे, जिन रूट्स पर ट्रैफिक ज्यादा है वहां अधिक से अधिक बसें दौड़ाकर यात्रियों को सेवा दी जाएगी और बसों में ऐसे ट्रैकिंग डिवाइस लगाए जाएंगे जो हर दस सेकेंड में बस की लोकेशन यात्रियों को वेबसाइट पर बताएंगे।

परिवहन विभाग द्वारा इसको लेकर नोटिफिकेशन जारी करते हुए कहा गया है कि मध्य प्रदेश यात्री बस परिवहन और इंफ्रास्ट्रक्चर लिमिटेड द्वारा नोटिफाइ किए गए रूट्स पर बसों का संचालन किया जाएगा। इसके लिए राज्य परिवहन उपक्रम के नाम पर परमिट जारी किए जाएंगे। साथ ही सार्वजनिक निजी भागीदारी (पीपीपी) मॉडल के अधीन निजी बस संचालकों के साथ एग्रीमेंट भी किया जाएगा। नई परिवहन नीति का उद्देश्य प्रदेश में सार्वजनिक बस परिवहन को व्यवस्थित, सुरक्षित और टाइमबाउंड बनाना है। योजना लागू होने के सात दिन बाद बस संचालन प्रारंभ किया जाएगा।

इन जिलों से अलग-अलग मार्गों पर चलेगी बसें

योजना के अंतर्गत इंदौर, भोपाल, उज्जैन, ग्वालियर, जबलपुर, रीवा, सागर, छिंदवाड़ा, खंडवा, खरगोन, बड़वानी, रतलाम, धार, नीमच, मंदसौर, शिवपुरी, गुना, शाजापुर, देवास, सीहोर, नरसिंहपुर सहित प्रदेश के विभिन्न जिलों को जोड़ने वाले 40 प्रमुख इंटरसिटी मार्ग नोटिफाई किए गए हैं।

ऐसे होगी बसों की सीट संख्या

योजना के अनुसार सामान्य मार्गों पर मिडी बस (23-34 सीट) चलेंगी जो साधारण, सेमी डीलक्स और डीलक्स कैटेगरी की होंगी। इसके साथ ही इंटरसिटी मार्गों पर स्टैंडर्ड बस (35-70 सीट) संचालित की जाएंगी जो एसी डीलक्स, एसी लग्जरी, एसी सुपर लग्जरी कैटेगरी की होंगी।

बीजेपी की कार्यसमिति में जिलाध्यक्षों को देना होगा रिपोर्ट कार्ड

बैठक 18 और 19 को, कार शेयरिंग करने और पीए-पीएसओ को साथ न लाने के निर्देश

भोपाल (नप्र)। भारतीय जनता पार्टी की 18 और 19 जुलाई को ओरछा में होने वाली प्रदेश कार्यसमिति बैठक केवल संगठनात्मक चर्चा तक सीमित नहीं रहेगी। बैठक में जिला स्तर पर संगठन की सक्रियता और कार्यक्रमों की समीक्षा भी की जाएगी। इसके लिए सभी जिला अध्यक्षों को अपने-अपने जिले का विस्तृत रिपोर्ट कार्ड लेकर आने के निर्देश दिए गए हैं। साथ ही यात्रा और व्यवस्थाओं को लेकर भी कई दिशा-निर्देश जारी किए गए हैं।

प्रदेश महामंत्री राहुल कोठारी की ओर से जिला अध्यक्षों और अन्य पदाधिकारियों को भेजे गए पत्र में कहा गया है कि बैठक में शामिल होने वाले सभी जिला अध्यक्ष अपने जिले में हाल के दिनों

में आयोजित कार्यक्रमों और मासिक बैठकों का विस्तृत ब्यौरा साथ लेकर आएं। इन रिपोर्टों के आधार पर संगठनात्मक गतिविधियों की समीक्षा की जाएगी।

वाहन शेयरिंग पर दिया जोर

बैठक की व्यवस्थाओं और खर्च को ध्यान में रखते हुए सड़क मार्ग से ओरछा आने वाले पदाधिकारियों से वाहन शेयरिंग करने की अपील की गई है। संगठन का मानना है कि इससे यात्रा अधिक व्यवस्थित होगी और अनावश्यक वाहनों की संख्या कम रहेगी।

झांसी स्टेशन से मिलेगी परिवहन सुविधा

रेल मार्ग से आने वाले नेताओं और पदाधिकारियों के लिए भी विशेष इंतजाम किए गए हैं। पत्र में बताया गया है कि झांसी रेलवे स्टेशन से ओरछा तक आने-जाने के लिए परिवहन की व्यवस्था उपलब्ध रहेगी, ताकि पदाधिकारियों को किसी प्रकार की असुविधा न हो।

सहायक और अंगरक्षक पर भी निर्देश- प्रदेश संगठन ने बैठक में अनुशासन और व्यवस्थाओं को प्राथमिकता देते हुए पदाधिकारियों से कहा है कि वे अपने साथ सहायक या अंगरक्षक केवल आवश्यकता होने पर ही लाएं। अनावश्यक रूप से अतिरिक्त लोगों को साथ लाने से बचने के निर्देश दिए गए हैं।

18 और 19 जुलाई को होने वाली इस प्रदेश कार्यसमिति बैठक में आगामी संगठनात्मक कार्यक्रमों, राजनीतिक रणनीति और विभिन्न अभियानों को लेकर भी मंथन होने की संभावना है।

शिशु एवं मातृ मृत्यु दर में कमी और एनीमिया के प्रभावी नियंत्रण के लिए

यूनीसेफ के साथ मिलकर करेंगे कार्य : शुक्ल

भोपाल। उप मुख्यमंत्री श्री राजेन्द्र शुक्ल से वल्लभ भवन में यूनीसेफ इंडिया के प्रतिनिधिमंडल ने सौजन्य भेंट की। प्रतिनिधिमंडल में यूनीसेफ इंडिया के उप प्रतिनिधि (कार्यक्रम) श्री जैस्पर मिलर, यूनीसेफ इंडिया की चीफ फील्ड सर्विसेज सुश्री सोलेदाद हेरेरो, यूनीसेफ मध्यप्रदेश के प्रमुख श्री विलियम हैनलोन और मध्यप्रदेश के कम्यूनिकेशन स्पेशलिस्ट श्री अनिल गुलाटी उपस्थित रहे। बैठक में शिशु एवं मातृ मृत्यु दर में कमी, एनीमिया नियंत्रण, कुपोषण, बाल विवाह की रोकथाम तथा उच्च जोखिम गर्भावस्था के प्रभावी प्रबंधन सहित विभिन्न विषयों पर चर्चा की गई।

उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने कहा कि शिशु एवं मातृ मृत्यु दर को कम करने तथा एनीमिया की चुनौती से निपटने के लिए सभी स्तरों पर समन्वित प्रयास आवश्यक हैं। राज्य सरकार जिला स्तर पर विशेषज्ञों की भर्ती कर मानव संसाधन की कमी दूर करने की दिशा में कार्य कर रही है। हीमोग्लोबिन जांच की सुविधा सुदृढ़ करने के लिए आवश्यक उपकरण भी उपलब्ध कराए जा रहे हैं। उप मुख्यमंत्री

श्री शुक्ल ने कहा कि चुनौतियों से प्रभावी ढंग से निपटने के लिए स्वास्थ्य, महिला एवं बाल विकास, पंचायत एवं ग्रामीण विकास तथा अन्य संबंधित विभागों के समन्वय से कार्ययोजना तैयार की जाएगी। उन्होंने इस कार्ययोजना के निर्माण में यूनीसेफ से तकनीकी सहयोग का आग्रह किया।

उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने कहा कि यूनीसेफ राज्य के मास्टर ट्रेनर्स की क्षमता निर्माण में सहयोग कर सकता है, ताकि वे जिलों में प्रशिक्षण देकर उच्च जोखिम गर्भावस्था की समय पर पहचान, सुरक्षित प्रसव और नवजात शिशु देखभाल को मजबूत कर सकें। उन्होंने पंचायतों के सहयोग से राज्य स्तरीय जन-जागरूकता अभियान चलाने की आवश्यकता भी बताई। उन्होंने यूनीसेफ से ऐसे सरल एवं प्रभावी मुख्य संदेश उपलब्ध कराने का आग्रह किया, जिन्हें जनप्रतिनिधियों और स्थानीय नेतृत्व के माध्यम से व्यापक स्तर पर प्रसारित किया जा सके। उन्होंने कहा कि जनभागीदारी और विभागीय समन्वय से एनीमिया, शिशु एवं मातृ मृत्यु तथा बाल विवाह जैसी चुनौतियों पर प्रभावी नियंत्रण स्थापित किया जा सकेगा। शिशु एवं मातृ मृत्यु दर में कमी लाने के मध्यप्रदेश सरकार की प्रतिबद्धता की यूनिसेफ प्रतिनिधि श्री मिलर ने की सराहना:यूनीसेफ इंडिया के उप प्रतिनिधि (कार्यक्रम) श्री मिलर ने शिशु एवं मातृ मृत्यु दर में कमी लाने के लिए मध्यप्रदेश सरकार की प्रतिबद्धता की सराहना की। उन्होंने इस दिशा में राज्य द्वारा लागू किए जा रहे 'सुमन रोडमैप' की प्रशंसा की। साथ ही, राज्य में मदर एंड न्यूबॉर्न चाइल्ड केयर यूनिट्स (एमएनसीयू) की स्थापना की पहल के लिए भी मध्यप्रदेश को बधाई दी। सुश्री सोलेदाद हेरेरो ने कुपोषण और बाल विवाह के परस्पर संबंधों पर चर्चा की।

ग्वालियर-चंबल में आज हेवी रेन, भिंड में रेड अलर्ट

उज्जैन-सागर संभाग भी भीगेंगे; एमपी में अब तक कोटे से 10 फीसदी बारिश ज्यादा

भोपाल (नप्र)। मध्य प्रदेश में मानसून जमकर बरस रहा है। पूरे प्रदेश में सिस्टम एक्टिव है। इस वजह से कहीं तेज तो कहीं रिमझिम बारिश हो रही है। बुधवार को प्रदेश के 20 से ज्यादा जिलों में तेज बारिश हुई। इस वजह से हालात भी बिगड़

गए। कई रास्ते बंद हुए हैं और जनजीवन खासा प्रभावित रहा।

मौसम विभाग ने भिंड में अति भारी बारिश का रेड अलर्ट जारी किया है। वहीं, मुरैना, ग्वालियर, दतिया, शिवपुरी, निवाड़ी, टीकमगढ़, राजगढ़, आगर-मालवा और रतलाम में भारी बारिश का ऑरेंज अलर्ट है। नीमच, उज्जैन, शाजापुर, श्योपुर, गुना, अशोकनगर, विदिशा, सागर, दमोह, छतरपुर और पन्ना में भारी बारिश का अनुमान है। यानी, प्रदेश का उत्तरी हिस्सा अगले 24 घंटे के दौरान तरबतर रहेगा।

आज भोपाल समेत कई जगह बारिश- भोपाल, रायसेन, सीहोर, राजगढ़, इंदौर, झाबुआ, आलीराजपुर, धार, बुरहानपुर, बड़वानी, खंडवा, खरगोन, देवास, नर्मदापुरम, बैतूल, हरदा, जबलपुर, कटनी, नरसिंहपुर, छिंदवाड़ा, पांढुर्णा, सिवनी, बालाघाट, मंडला, डिंडौरी, रीवा, सतना, सीधी, सिंगरौली, मऊगंज, मैहर, शहडोल, उमरिया और अनूपपुर में पानी गिरेगा।

टीकमगढ़ में घुटनों तक पानी में निकली आदिवासी बेटी की डोली- टीकमगढ़ जिले में बारिश के बाद बदहाल सड़कें लोगों के लिए बड़ी परेशानी बन गई हैं। जतारा जनपद की ग्राम पंचायत बैरवार में खराब सड़क और जलभराव के बीच एक आदिवासी बेटी की विदाई घुटनों तक पानी से होकर कराना पड़ी।

टीकमगढ़ जिले की बैरवार ग्राम पंचायत में खराब सड़क और जलभराव के बीच एक आदिवासी बेटी की विदाई घुटनों तक पानी से होकर कराना पड़ी।

वहीं सुभाष पुरम कॉलोनी में निर्माणाधीन अंडरग्राउंड नाले के कारण बड़ा हादसा हो गया। पाइपलाइन निर्माण के दौरान बनाए गए चेंबर बारिश के पानी में डूब गए थे।

शाजापुर में नाला पार कर स्कूल पहुंचे टीचर

इससे पहले बुधवार को प्रदेश के कई जिलों में नदी-नाले उफान पर रहे। सेंधवा में ग्रामीण अंचलों के नदी-नाले उफान पर होने से जनजीवन प्रभावित रहा। शाजापुर में टीचर जान जोखिम में डालकर स्कूल पहुंचते नजर आए। रतलाम में अंडर ब्रिज पर पानी भर गया। मौसम विभाग के अनुसार, दमोह में पौने 2 इंच, नर्मदापुरम में 1.1 इंच, खजुराहो-टीकमगढ़ में पौन इंच, जबलपुर, खरगोन-बैतूल में आधा इंच बारिश रिकॉर्ड की गई। दतिया, धार, ग्वालियर, खंडवा, रतलाम, श्योपुर, उज्जैन, छिंदवाड़ा, मंडला, नरसिंहपुर, नौगांव, सागर, सतना, सिवनी, बालाघाट, मंदसौर, शाजापुर, पन्ना, बड़वानी, देवास, सीहोर में भी बारिश हुई। बारिश की वजह से दिन के तापमान में गिरावट देखी गई। प्रदेश के 5 बड़े शहरों में इंदौर में सबसे कम 28 डिग्री, जबलपुर में 28.5 डिग्री, उज्जैन में 29.2 डिग्री, ग्वालियर में 29.7 डिग्री और भोपाल में 30.4 डिग्री सेल्सियस रहा। प्रदेश में सबसे ज्यादा तापमान सीधी में 33.6 डिग्री और सबसे कम छिंदवाड़ा में 25.4 डिग्री रिकॉर्ड किया गया।

महिलाओं और बच्चों की डिजिटल और साइबर सुरक्षा पर दिया जोर

महिला आयोग और गूगल एक मंच पर

भोपाल (नप्र)। डिजिटल तकनीक के तेजी से बढ़ते उपयोग के साथ महिलाओं और बच्चों की ऑनलाइन सुरक्षा आज देश के सामने सबसे बड़ी सामाजिक और तकनीकी चुनौतियों में शामिल हो गई है। इसी चुनौती से प्रभावी ढंग से निपटने के उद्देश्य से मध्य प्रदेश राज्य महिला आयोग, एनजीओ और गूगल के सहयोग से भोपाल में आयोजित विशेष एनजीओ मीट में डिजिटल सुरक्षा, साइबर अपराधों की रोकथाम और कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई) के सुरक्षित एवं जिम्मेदार उपयोग पर व्यापक विमर्श हुआ।

मध्यप्रदेश राज्य महिला आयोग परिसर में आयोजित कार्यक्रम में आयोग की सदस्य श्रीमती साधना स्थापक ने कहा कि डिजिटल युग ने जितने अवसर उपलब्ध कराए हैं, उतनी ही नई चुनौतियां भी सामने आई हैं। महिलाओं और बच्चों की ऑनलाइन सुरक्षा केवल कानून या तकनीक का विषय नहीं, बल्कि पूरे समाज की साझा जिम्मेदारी है। उन्होंने कहा कि साइबर अपराधों की बदलती प्रकृति को देखते हुए डिजिटल जागरूकता, समय पर शिकायत और सुरक्षित ऑनलाइन व्यवहार को जन-आंदोलन का स्वरूप देना होगा। उन्होंने कहा कि महिलाओं और बच्चों को डिजिटल प्लेटफॉर्म का सुरक्षित उपयोग सिखाना समय की आवश्यकता है। परिवार, शैक्षणिक संस्थानों, सामाजिक संगठनों, तकनीकी प्रशिक्षण संस्थानों और शासन के समन्वित प्रयासों से ही ऐसा डिजिटल वातावरण बनाया जा सकता है, जहां प्रत्येक नागरिक स्वयं को सुरक्षित महसूस करे।

कार्यक्रम में आयोग के सदस्य सचिव सुरेश तोमर भी उपस्थित रहे। 'रिस्पॉन्सिबल नेटिजन' कार्यक्रम के अंतर्गत आयोजित संवाद में महिला एवं बाल कल्याण के क्षेत्र में कार्यरत संस्थाओं ने भाग लेकर जमीनी अनुभव साझा किए।वहीं दूसरी ओर महिला एवं बाल विकास मंत्री सुश्री निर्मला भूरिया के भोपाल स्थित शासकीय निवास पर गूगल और एनजीओ के उच्च स्तरीय प्रतिनिधिमंडल ने सौजन्य भेंट की।

कमाली मंदिर में मूर्तियां हटाने पर विवाद

शॉपिंग कॉम्प्लेक्स निर्माण की सूचना पर श्रद्धालुओं का विरोध, हटाई गईं प्राचीन मूर्तियां फिर स्थापित

भोपाल (नप्र)। भोपाल के घोड़ा नक्कास स्थित कमाली मंदिर परिसर में प्राचीन मूर्तियां हटाए जाने को लेकर गुरुवार को विवाद खड़ा हो गया। मंदिर परिसर में प्रस्तावित शॉपिंग कॉम्प्लेक्स के निर्माण की जानकारी सामने आने के बाद स्थानीय रहवासियों और श्रद्धालुओं ने विरोध जताया। विवाद बढ़ने पर हिंदू उत्सव समिति के अध्यक्ष चंद्रशेखर तिवारी मौके पर पहुंचे। उनके हस्तक्षेप के बाद हटाई

गई मूर्तियों को दोबारा उनके मूल स्थान पर रखा गया।

मौके पर मौजूद लोगों का आरोप था कि मंदिर परिसर में व्यापारिक निर्माण के लिए वर्षों पुरानी देवी-देवताओं की प्रतिमाओं को उनके स्थान से हटाकर दूसरी जगह रख दिया गया था। इसे लेकर क्षेत्र के लोगों ने नाराजगी जताते हुए धार्मिक आस्था से खिलवाड़ का आरोप लगाया।

हिंदू उत्सव समिति के अध्यक्ष चंद्रशेखर तिवारी ने कहा कि कमाली मंदिर का ऐतिहासिक और धार्मिक महत्व है। उनके अनुसार, यह भूमि तत्कालीन नवाब की बेगम द्वारा कमाली बाबा को दान में दी गई थी। उन्होंने दावा किया कि जिस सीमा तक शंखनाद की आवाज पहुंची थी, उतना क्षेत्र मंदिर को समर्पित किया गया था।

तिवारी ने आरोप लगाया कि मंदिर परिसर में पहले से चेतन मार्केट संचालित है, जिससे लाखों रुपए का किराया प्राप्त होता है। इसके बावजूद अब एक और शॉपिंग कॉम्प्लेक्स बनाने की तैयारी की जा रही है। उन्होंने कहा कि सालों पुरानी प्रतिमाओं को उनके मूल स्थान से हटाकर दूसरी जगह स्थापित कर दिया गया, जबकि मंदिर के भव्य पुनर्निर्माण का वादा किया गया था। लाल पत्थरों से मंदिर निर्माण की घोषणा के बावजूद छह वर्ष बीत जाने के बाद भी निर्माण कार्य पूरा नहीं हो सका।

उन्होंने कहा कि हिंदू उत्सव समिति और समाज के लोगों ने इसका विरोध दर्ज कराया है। हटाई गई प्रतिमाओं को वापस लाकर पुनः मूल स्थान पर स्थापित कराया गया है। उनका कहना है कि धार्मिक परंपराओं के अनुरूप प्रतिमाओं का विधिवत चरणोद्धार कर इसी स्थान पर स्थायी रूप से स्थापित कराया जाएगा।

फिलहाल इस पूरे मामले को लेकर क्षेत्र में चर्चा का माहौल है। मंदिर प्रबंधन की ओर से इस विवाद पर आधिकारिक प्रतिक्रिया सामने नहीं आई है। वहीं स्थानीय लोग मंदिर की मूल संरचना और धार्मिक स्वरूप को बनाए रखने की मांग कर रहे हैं।

भोपाल में मानसिक रूप से कमजोर नाबालिग से गैंगरेप

भोपाल (नप्र)। राजधानी भोपाल के कटारा हिल्स थाना क्षेत्र में मानसिक रूप से कमजोर 16 वर्षीय नाबालिग से गैंगरेप का मामला सामने आया है। आरोपियों ने वारदात का वीडियो भी बनाया और करीब पांच दिन बाद उसे पीड़िता के भाई के मोबाइल पर भेज दिया। पुलिस के अनुसार, वीडियो अन्य लोगों के साथ भी साझा किया गया। वीडियो देखने के बाद परिजन बुधवार रात पीड़िता को लेकर कटारा हिल्स थाने पहुंचे और शिकायत दर्ज कराई। पुलिस ने गैंगरेप, पॉक्सो एक्ट और आईटी एक्ट समेत अन्य धाराओं में केस दर्ज कर जांच शुरू कर दी है।

मामले में एक नाबालिग को हिरासत में लिया गया है, जबकि उसका साथी फरार है। पुलिस हिरासत में लिए गए नाबालिग से पूछताछ कर रही है कि उसने और उसके साथी ने पहले भी पीड़िता के साथ ऐसी कोई वारदात की थी या नहीं।

दोस्ती का दबाव बनाते थे आरोपी - पुलिस के मुताबिक, पीड़िता ने स्कूल जाना छोड़ दिया था। मोहल्ले के दो लड़के कई दिनों से उससे दोस्ती करने और अपने साथ घूमने चलने का दबाव बना रहे थे, लेकिन वह उनसे बातचीत नहीं करती थी।

ट्रक में घुसी कार, परिवार के 4 लोगों की मौत

सीपीआर देते ही युवती की सांसें लौटीं; इसे ही परीक्षा दिलाने चित्रकूट जा रहे थे परिजन

उमरिया (नप्र)। मध्य प्रदेश के उमरिया में गुरुवार तड़के 3 से 4 बजे के बीच एक तेज रफ्तार अर्टिगा कार सड़क पर खड़े ट्रक में जा घुसी। हादसे में कार के परखच्चे उड़ गए। उसमें सवार 4 लोगों की मौत हो गई।

हादसा कोतवाली थाना क्षेत्र की सिविल लाइन चौकी के पास नेशनल हाईवे- 43 पर हुआ। पुलिस के मुताबिक, सभी अनूपपुर जिले के लीला गांव के रहने वाले थे। ये लोग अर्टिगा कार से चित्रकूट जा रहे थे। भरौला के पास सिद्ध बाबा क्षेत्र में कार अचानक बेकाबू होकर ट्रक में जा घुसी।

मृतकों में सरपंच, उनकी हेड कॉन्स्टेबल पत्नी भी - अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक आलोक शर्मा के अनुसार, हादसे में सरपंच कुलपत सिंह (37), इनकी हेड कॉन्स्टेबल पत्नी सविता सिंह मार्को (32), इनके 3 वर्षीय बेटे रुद्र प्रताप, भाई की बेटी प्रियंका सिंह (24) की मौत हो गई। वहीं प्रियंका की बहन खुशबू मार्को (22) घायल है।

बताया जा रहा है कि खुशबू की चित्रकूट में परीक्षा थी। परिवार उसे लेकर वहीं जा रहा था। बताया जा रहा है कि हादसे के बाद खुशबू की भी सांसें थम चुकी थीं। अस्पताल में डॉक्टरों ने उसे सीपीआर दिया, जिससे उसकी सांसें लौट आईं। इसके बाद उसे जबलपुर रेफर कर दिया गया।

कार बुरी तरह क्षतिग्रस्त, अंदर फंसा शख्स - हादसे के बाद कार बुरी तरह क्षतिग्रस्त हो गई थी। एक शख्स अंदर ही फंस गया था। सूचना मिलते ही कोतवाली पुलिस और 108 एंबुलेंस की टीम मौके पर पहुंची। टीम ने काफी मशक्कत के बाद फंसे हुए शख्स को बाहर निकाला, लेकिन जिला अस्पताल पहुंचने पर डॉक्टरों ने उसे मृत घोषित कर दिया। इसके बाद इलाज के दौरान एक और घायल ने दम तोड़ दिया।

संपादकीय

भारतीय मिसाइलों की मांग

दुनिया में भारतीय मिसाइलों की बढ़ती मांग न केवल समूचे देश के लिए गौरव की बात है, बल्कि यह हमारे रक्षा विशेषज्ञों, डीआरडीओ, वैज्ञानिकों और तकनीशियों की काबिलियत की भी वैश्विक स्वीकृति है। भारत अगर पहले ही इस क्षेत्र में कदम रख देता तो शायद हम दुनिया के पांच शीर्ष हथियार निर्माताओं और निर्यातकों में होते। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी इंडोनेशिया यात्रा के दौरान इंडोनेशिया और भारत के बीच भारत की 'ब्रह्मोस' सुपरसोनिक क्रूज़ मिसाइलों की खरीद का समझौता हुआ है। इस रक्षा सौदे को लेकर दोनो देशों में सहमति बनी, जिसमें इंडोनेशिया ने ब्रह्मोस मिसाइल सिस्टम के साथ-साथ स्वदेशी 'अस्त्र' (Astra) एयर-टू-एयर मिसाइलें खरीदने का भी फैसला किया है। गौरतलब है कि इंडोनेशिया ने लगभग (200 मिलियन डॉलर (2,500 करोड़ रुपये) के सौदे के तहत ब्रह्मोस मिसाइलों की दो बैटरी खरीदने का अनुबंध किया है। इससे पहले वियतनाम और फिलीपींस भी इस घातक मिसाइल प्रणाली को प्राप्त करने के लिए भारत से करार कर चुके हैं। इसके अलावा इंडोनेशिया स्वदेशी 'अस्त्र एमके-1' बियॉन्ड विजुअल रेंज एयर टू एयर मिसाइलों का भी पहला विदेशी ग्राहक बन गया है। भारतीय सेना द्वारा 'ऑपरेशन सिंदूर' में इन मिसाइलों के सफल प्रदर्शन को देखने के बाद इंडोनेशिया ने इन्हें अपनी वायुसेना में शामिल करने का निर्णय लिया है। भारत और इंडोनेशिया के बीच इस समझौते का रणनीतिक महत्व भी है। क्योंकि जहां चीन भारत को चारों ओर से घेरने की रणनीति पर काम कर रहा है, वहीं भारत ने भी हिंद महासागर ने चीन पर लगाम लगाने की दिशा में कदम बढ़ा दिए हैं। उल्लेखनीय है कि हिंद प्रशांत महासागर में मलक्का जलडमरूमध्य क्षेत्र में चीन की बढ़ती आक्रामकता को देखते हुए यह समझौता भारत और दक्षिण-पूर्व एशिया के बीच रणनीतिक संबंधों को बहुत मजबूत करता है। अहम बात यह है कि भारतीय रक्षा उत्पादों की मारक क्षमता, सटीकता की परीक्षा ऑपरेशन सिंदूर में सफलतापूर्वक हो चुकी है। उल्लेखनीय है कि ब्रह्मोस मिसाइल ध्वनि की गति से लगभग तीन गुना (मैक 2.8 से 3) तेज उड़ान भरने और 450 किलोमीटर तक सटीक वार करने में सक्षम है। यूएई, सऊदी अरब, मिस्र, ब्राजील, चिली, दक्षिण अफ्रीका जैसे देश भी इसे खरीदने में गहरी दिलचस्पी दिखा रहे हैं। यहां तक कि रूस भी इसे अपनी सेना में शामिल करने पर विचार कर रहा है। इंडोनेशिया से पहले फिलीपींस और वियतनाम भी ब्रह्मोस की मांग कर चुके हैं। यह वो देश हैं, जो चीन की दादागिरी से परेशान हैं। इसी तरह आकाश सतह से हवा में मार करने वाली भारत की पहली स्वदेशी वायु-रक्षा मिसाइल है जिसे किसी विदेशी ग्राहक ने खरीदा है। आर्मेनिया इसका पहला खरीदार बना है। इसके अलावा कुछ और देशों ने भी लड़ाकू विमानों, क्रूज मिसाइलों और ड्रोन्स को मार गिराने वाले इस सिस्टम में अपनी रुचि दिखाई है। साथ ही अस्त्र मिसाइल, पिनाका मल्टी बैरल रॉकेट लांचर और तोप भी विश्व के कई देशों में मांग है। इन प्रमुख हथियारों के अलावा, भारत दुनिया के 80 से अधिक देशों को डॉर्नियर-228 विमान, रडार, सिम्युलेटर, माइन-प्रोटेक्टेड वाहन, बुलेटप्रूफ जैकेट, थर्मल इमेजर और इलेक्ट्रॉनिक युद्ध प्रणालियों का भी निर्यात कर रहा है। अब यूएई ने भी भारतीय हथियारों की खरीद में रूचि दिखाई है। नए ग्राहकों में थाईलैंड, मोरक्को, मॉरीशस, म्यांमार और श्रीलंका भी शामिल हैं। यह जानना दिलचस्प है कि भारत सरकार ने 2029 तक तीन लाख करोड़ रुपये (31 अरब) के घरेलू रक्षा उत्पादन का लक्ष्य रखा है। भविष्य में टैक्टिकल ड्रोन्स का बाजार भी 30-35 अरब रुपये से बढ़कर 120-140 अरब रुपये तक पहुंचने की उम्मीद है, जो रक्षा क्षेत्र के लिए एक बड़ा अवसर है। इसका लाभ उठाने हमे शोध और विकास पर भी भरपूर खर्च करना होगा।

नजरिया

राज कुमार सिन्हा

लेखक सामाजिक कार्यकर्ता हैं।

मप्र में ब्लू इकॉनामी लाना असली कसौटी

मध्यप्रदेश में हाल ही में अपनी नई एकीकृत मत्स्य नीति 2026 लागू कर मत्स्य क्षेत्र में 'ब्लू इकॉनामी' के एक महत्वपूर्ण आधार के रूप में विकसित करने की दिशा में बडा कदम उठाया है। इसी क्रम में 6 जुलाई को जबेदी अल कुवैत की अग्रणी कंपनी और कामदार्स केयर इंदौर के बीच मत्स्य पालन के लिये 7 हजार 430 करोड़ रुपये का अनुबंध संपादित हुआ। इस निवेश से इंदिरा सागर, बरगी बाणसागर और बारना जलाशय में केज कल्चर सहित बैकवर्ड और फॉरवर्ड लिंकेज आधारित इंफ्रास्ट्रक्चर विकसित किया जाएगा। इस मौके पर प्रदेश के मुख्यमंत्री ने कहा कि एकिकृत मत्स्योद्योग नीति 2026 के अन्तर्गत गतिविधियों को अंतर्राष्ट्रीय विस्तार दिया जा रहा है।

मध्यप्रदेश में लगभग 15 से 16 लाख लोग प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से मत्स्य व्यवसाय से जुड़े माने जाते हैं। अधिकांश मछुआरे गरीबी रेखा या उसके आसपास जीवन यापन करते हैं। बाजार का नियंत्रण ठेकेदारों या मध्यस्थों के पास होने से मछुआरों को वास्तविक लाभ कम मिलता है। जलाशयों को ठेकेदार या बाहरी व्यक्तियों को दिया जाता है। छोटे मछुआरे अधिकार विहीन और ठेकेदारों के अंदर मजदूर बन कर रह जाते हैं। जलाशय के नीलामी में स्थानीय मछुआरा की सहकारी समिति भाग ही नहीं ले पाता है। क्योंकि लीज की दरें बहुत अधिक होती है, प्रक्रियाएं जटिल और सरकारी अधिकारी एवं ठेकेदार के बीच गठजोड़ के कारण गरीब समूह भाग भी नहीं ले पाते। बड़े संविदाकार और मत्स्य विभाग के नियम छोटे मछुआरों को ठेका पद्धति में शामिल होने की संभावना को सीमित करता है। बाज़ार में दलालों पर निर्भरता, उचित मूल्य का अभाव और मत्स्य भंडारण या कोल्ड चेन न होने से मछली तुरंत बेचनी पड़ती है जो शोषण का मुख्य कारण है। अधिकांश मछुआरे दुर्घटना, मौसम, बाजार से नुकसान में सुरक्षा रहित रहते हैं। मध्यप्रदेश सरकार ने अपने पिछले 2008 की मछुआरा नीति में बदलाव करते हुए 2026 की नई मछुआरा नीति घोषित किया है। मध्यप्रदेश की 2008 की मछुआरा नीति और 2026 की नई एकीकृत मत्स्य नीति में कई महत्वपूर्ण बदलाव दिखाई देते हैं। 2008 की नीति मुख्यतः जलाशयों के पट्टा प्रबंधन और पारंपरिक मत्स्य पालन पर केंद्रित थी, जबकि 2026 की नीति आधुनिक तकनीक, उत्पादन वृद्धि, निजी निवेश और व्यावसायिक मत्स्य पालन को बढ़ावा देने वाली नीति के रूप में सामने आई है।

2008 की नीति में मुख्य जोर तालाबों और जलाशयों के पट्टों के वितरण तथा मछुआ सहकारी समितियों की भूमिका पर था। जिला पंचायतों को जलाशय प्रबंधन का अधिकार दिया गया था। 2026 की नीति में मत्स्य क्षेत्र को 'एग्री-बिजनेस' और 'ब्लू इकॉनामी' के रूप में विकसित करने पर जोर है। इसमें उत्पादन बढ़ाने, निवेश आकर्षित करने और निर्यात क्षमता बढ़ाने की दिशा दिखाई देती है। केज कल्चर का बड़ा विस्तार है जबकि 2008 की नीति में पारंपरिक तालाब आधारित मछली पालन प्रमुख था। 2026 की नीति में बड़े पैमाने पर 'केज कल्चर' को बढ़ावा दिया जा रहा है और लगभग एक लाख फिश केज स्थापित करने की योजना बताई गई है। इससे बड़े जलाशयों में

औद्योगिक स्तर पर मछली उत्पादन संभव होगा। पुरानी नीति में सहकारी समितियों और स्थानीय मछुआरों की भूमिका अधिक थी। नई नीति में निजी कंपनियों, निवेशकों और आधुनिक एक्वाकल्चर मॉडल को प्रोत्साहन दिया जा रहा है। इससे मत्स्य पालन का कॉर्पोरेटकरण बढ़ने की संभावना ज्यादा है। 2008 की नीति में तकनीकी पहल सीमित थीं। जबकि 2026 नीति में आधुनिक हैचरी,रिसर्च सेंटर,एकीकृत एक्वा पार्क, फिश फीड, बायोफ्लॉक, डिजिटल मॉनिटरिंग जैसी व्यवस्थाओं पर जोर दिया गया है। 2008 नीति का उद्देश्य पारंपरिक मछुआ समुदाय की आजीविका सुरक्षा था। प्राकृतिक आपदा होने पर पट्टा राशि में राहत जैसी व्यवस्था भी थी। 2026 नीति में उत्पादन दोगुना करने और राजस्व बढ़ाने पर ज्यादा जोर दिखाई देता है। हालांकि सरकार इसे 'मछुआ समृद्धि' से जोड़ रही है। 2008 में जलाशय स्थानीय सहकारी समितियों के नियंत्रण में अधिक थे। 2026 के मत्स्य नीति में बड़े जलाशयों के व्यावसायिक उपयोग, केज कल्चर और अनुबंध आधारित मत्स्य पालन के कारण स्थानीय मछुआरों की पारंपरिक पहुंच सीमित होने की आशंका है।

जल प्रदूषण, बाहरी मछली प्रजातियों का उपयोग, जलाशयों का निजीकरण, छोटे मछुआरों का विस्थापन जैसी खतरे संभावित हैं। समग्र रूप से देखें तो 2008 की नीति 'सामुदायिक और सहकारी मत्स्य प्रबंधन' आधारित थी, जबकि 2026 की नीति 'व्यावसायिक, तकनीक आधारित और निवेश उन्मुख मत्स्य अर्थव्यवस्था' की ओर बढ़ती दिखाई देती है। नीली क्रांति को बढ़ावा देने के लिए मध्यप्रदेश सरकार ने इस वर्ष के बजट में मत्स्य उत्पादन क्षेत्र में 412 करोड़ रुपए के निवेश का प्रावधान किया है। मध्यप्रदेश की 2026 की एकीकृत मत्स्य नीति राज्य के मत्स्य क्षेत्र को पारंपरिक आजीविका आधारित व्यवस्था से निकालकर 'ब्लू इकॉनमी' और निवेश आधारित व्यावसायिक मॉडल की ओर ले जाती दिखाई देती है। सरकार उत्पादन वृद्धि, आधुनिक तकनीक, केज कल्चर, निजी निवेश और निर्यात क्षमता को बढ़ाने को विकास का आधार मान रही है। इससे मत्स्य उत्पादन और राजस्व में वृद्धि की संभावनाएं अवश्य बनती हैं, लेकिन इसके साथ कई गंभीर सामाजिक और पारिस्थितिक प्रश्न भी उभर रहे हैं।नई नीति के कारण जलाशयों पर कॉर्पोरेट और ठेकेदार आधारित नियंत्रण बढ़ने, छोटे मछुआरों की पारंपरिक पहुंच सीमित होने तथा सहकारी समितियों की भूमिका कमजोर पड़ने की आशंका है।

मध्यप्रदेश कि राज्य मत्स्य महासंघ द्वारा 7 बडे और 19 मझौले मिलाकर कुल 26 जलाशयों का नियंत्रण किया जाता है। जिसका कुल क्षेत्रफल 2.29 लाख हेक्टेयर है। जिला पंचायतों के 79 और ग्राम पंचायतों के अन्तर्गत 3484 तालाब हैं। प्रदेश में 3.56 लाख हेक्टेयर जलक्षेत्र (जिसमें राज्य मत्स्य महासंघ के 26 जलाशय, पोखर और तालाब शामिल है) है, इसमें से 3.49 लाख हेक्टेयर जलक्षेत्र में मछली पालन किया जाता है। विधानसभा में पुछे गए सवाल के जवाब अनुसार मध्यप्रदेश के विभिन्न जलाशयों एवं तालाबों से विगत तीन वित्तीय वर्षो में 2019-20 में 3340.00, 2020-21 में 4538.197 और 2021-22 में 5381.00 मेट्रिक टन मत्स्य उत्पादन हुआ था। बरगी जलाशय में सिवनी, मंडला और जबलपुर जिले के 54 प्राथमिक मछुआरा सहकारी समिति मत्स्याखेट कार्य करती है। परन्तु विगत पांच वर्षों से जलाशय में मत्स्य उत्पादन में भारी गिरावट के कारण सैकड़ों मछुआरे रोजगार के लिए पलायन को बाध्य होते हैं। मछुआरे काम की तलाश में बाणसागर जलाशय शहडोल, माचागोरा जलाशय छिंदवाड़ा और भीमगढ़ जलाशय सिवनी निकल जाते हैं।जहां ठेकेदार बहुत ही कम दरों पर मत्स्याखेट करा कर मछुआरों का आर्थिक शोषण करता है। जबकि 90 के दशक में मध्यप्रदेश के बरगी और तवा जलाशय में मत्स्याखेट का चर्चीत सहकारी मॉडल देश के महत्वपूर्ण सामुदायिक मत्स्य प्रबंधन प्रयोगों में माना जाता है।

नर्मदा नदी पर निर्मित इस विशाल जलाशय ने विस्थापन और आजीविका संकट के बीच स्थानीय मछुआ समुदायों को रोजगार का एक बड़ा आधार प्रदान किया। विशेष रूप से प्राथमिक मछुआ सहकारी समितियों के माध्यम से जलाशय आधारित मत्स्य उत्पादन और विपणन का जो ढांचा विकसित हुआ, उसने हजारों परिवारों को प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रोजगार उपलब्ध कराया।इस मॉडल की सबसे बड़ी विशेषता यह रही कि इसमें मछुआरों को केवल मजदूर नहीं बल्कि संसाधन प्रबंधन का सहभागी माना गया। सहकारी समितियां मत्स्य बीज संचयन, मत्स्याखेट, उत्पादन प्रबंधन और विपणन जैसे कार्यों में सक्रिय भूमिका निभाती थीं। इससे स्थानीय स्तर पर सामूहिक स्वामित्व और आर्थिक भागीदारी की भावना विकसित हुई। आज जब नई मत्स्य नीतियों में केज कल्चर, निजी निवेश और व्यावसायिक उत्पादन को बढ़ावा दिया जा रहा है, तब बरगी और तवा जलाशय का अनुभव यह संकेत देता है कि विकास का मॉडल ऐसा होना चाहिए जिसमें उत्पादन वृद्धि के साथ स्थानीय मछुआरों के अधिकार, रोजगार और जलाशयों की पारिस्थितिकी भी सुरक्षित रहे। बरगी और तवा का सहकारी प्रयोग नीली क्रांति को सामाजिक न्याय और सामुदायिक भागीदारी से जोड़ने का एक महत्वपूर्ण उदाहरण है।मध्यप्रदेश के पारम्परिक मछुआरे राज्य की खाद्य सुरक्षा और ग्रामीण अर्थव्यवस्था के महत्वपूर्ण भागीदार हैं, लेकिन उनकी आर्थिक असुरक्षा, सामाजिक वंचना और संसाधनों पर घटते अधिकार गंभीर चिंता का विषय हैं। समावेशी नीतियों, संसाधनों पर न्यायपूर्ण अधिकार और आजीविका सुदृढ़ीकरण के माध्यम से ही उनके जीवन स्तर में स्थायी सुधार संभव है।

आखिर स्मार्ट शहर भी क्यों हो रहे हैं बेबस?

मानसून की चुनौती

योगेश कुमार गोयल

लेखक पत्रकार हैं।

मानसून ने इस वर्ष अपने आगमन के साथ ही देश के बड़े हिस्से में राहत से अधिक आफत का संदेश दिया है। जम्मू-कश्मीर के किश्तवाड़ से लेकर महाराष्ट्र, गुजरात, उत्तर प्रदेश, उत्तराखंड, ओडिशा और मध्य प्रदेश तक प्रकृति का रौद्र रूप साफ दिखाई दे रहा है। भारी बारिश, भूस्खलन, बादल फटने और बाढ़ जैसी घटनाओं ने यह स्पष्ट कर दिया है कि हमारा बुनियादी ढांचा और प्रशासनिक तैयारी अभी भी इस प्राकृतिक चुनौती का सामना करने में सक्षम नहीं है। जम्मू-कश्मीर के किश्तवाड़ जिले में लगातार मूसलाधार बारिश के चलते भूस्खलन की घटनाएं सामने आई हैं, जिससे राष्ट्रीय राजमार्ग-244 कई स्थानों पर क्षतिग्रस्त हो गया है। ऐसी घटनाएं न केवल आवागमन को बाधित करती हैं बल्कि यह भी दिखाती हैं कि पहाड़ी क्षेत्रों में सड़कों के निर्माण और रखरखाव में वैज्ञानिक दृष्टिकोण का अभाव है। महाराष्ट्र के पुणे जिले में भूस्खलन की घटना में लोगों की मौत और कई लोगों का रेस्क्यू इस बात का संकेत है कि हम जोखिमों को पहले से भांपने में असफल रहे हैं। महाराष्ट्र के अन्य हिस्सों में भी स्थिति भयावह है। उल्हास नदी का जलस्तर खतरे के निशान के करीब पहुंच चुका है, जिससे वांगणी के पास स्थित कुडसावरे पुल पूरी तरह जलमग्न हो गया और कई गांवों का संपर्क टूट गया। देश की आर्थिक राजधानी मुंबई में हर वर्ष की तरह इस बार भी बारिश ने जनजीवन को अस्त-व्यस्त कर दिया है लेकिन इस बार स्थिति और भी गंभीर रही है। महज दो दिनों की बारिश में ही सड़कें नदियों में तब्दील हो गई, पेड़ उखड़ गए, पुराने ढ़ांचे ढह गए और कई लोगों को अपनी जान गंवानी पड़ी।

ऐसे में यह सवाल उठना स्वाभाविक है कि क्या हर साल आने वाली इस स्थिति को हम केवल 'प्राकृतिक आपदा' कहकर टाल सकते हैं? सच्चाई यह है कि यह केवल प्रकृति का प्रकोप नहीं बल्कि हमारी प्रशासनिक लापरवाही, अनियोजित शहरीकरण और तकनीकी अक्षमता का भी परिणाम है। यदि बारिश से पहले नालों की सफाई, जल निकासी की समुचित व्यवस्था और जोखिम वाले क्षेत्रों का वैज्ञानिक मूल्यांकन समय पर किया जाए तो इन घटनाओं की गंभीरता को काफी हद तक कम किया जा सकता है।

मुंबई, पुणे या अन्य महानगरों में जलभराव की समस्या अब अस्थायी नहीं रही बल्कि स्थायी संकट बन चुकी है। इसका मूल कारण है शहरों का अनियोजित विस्तार और प्राकृतिक जल निकासी मार्गों का अतिक्रमण। जहां कभी पानी के बहाव के प्राकृतिक रास्ते थे, वहां आज कांक्रीट के जंगल खड़े हो गए हैं। नतीजतन, थोड़ी सी बारिश भी शहरों को जलमग्न कर देती है। यह स्थिति केवल मुंबई तक सीमित नहीं है बल्कि अब देश के अधिकांश शहरों में यही तस्वीर देखने को मिलती है। इस बार मानसून ने रेलवे और सड़क परिवहन को भी बुरी तरह प्रभावित किया है। मुंबई-पुणे रेल मार्ग पर चट्टानी मलबा गिरने से रेल सेवाएं बाधित हो गई। गुजरात के अमरेली में राष्ट्रीय राजमार्ग का हिस्सा बह जाना इस बात का संकेत है कि हमारी निर्माण प्रणाली प्राकृतिक आपदाओं के प्रति कितनी संवेदनशील है। यह केवल एक तकनीकी विफलता नहीं बल्कि दीर्घकालिक योजना के अभाव का परिणाम है।

यदि हम वैश्विक परिप्रेक्ष्य में देखें तो विकसित देशों ने इस समस्या से निपटने के लिए आधुनिक तकनीकों का सहारा लिया है। अमेरिका और ब्रिटेन जैसे देशों में 'लिडार' तकनीक से पहाड़ी क्षेत्रों की निगरानी की जाती है और 'रॉकफॉल बैरियर्स' के माध्यम से भूस्खलन को रोका जाता है। रेल और सड़क नेटवर्क में सेंसर आधारित प्रणाली खतरे का पूर्वानुमान लगाकर सेवाओं को नियंत्रित करती है। इसके विपरीत, भारत में आज भी अधिकतर व्यवस्थाएं प्रतिक्रियात्मक हैं अर्थात् हादसे के बाद ही कार्रवाई होती है। विश्व बैंक के अनुमानों के अनुसार, भारत को हर वर्ष बारिश से जुड़ी आपदाओं के कारण लगभग 80,000 करोड़ से 1,20,000 करोड़ रुपये तक का आर्थिक नुकसान होता है। यह आंकड़ा केवल आर्थिक क्षति का है जबकि मानवीय जीवन की हानि का मूल्यांकन करना संभव ही नहीं है। हर वर्ष सैंकड़ों लोग केवल इसलिए अपनी जान गंवा देते हैं क्योंकि हम समय रहते आवश्यक कदम नहीं उठा पाते। यह स्थिति हमें एक महत्वपूर्ण नीति परिवर्तन ('आपदा के बाद राहत' से 'आपदा से पहले तैयारी' की ओर) की ओर संकेत करती है। इसके लिए सबसे पहले शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों में 'डिजिटल ड्रेनेज ऑडिट' को अनिवार्य किया जाना चाहिए, जिससे यह स्पष्ट हो सके कि पानी का प्राकृतिक प्रवाह कहां और कैसे होता है। इसके साथ ही 'स्पंज सिटी' मॉडल को अपनाना आवश्यक है, जिसमें शहरों को इस प्रकार विकसित किया जाता है कि वे वर्षा के पानी को अवशोषित कर सकें। पहाड़ी क्षेत्रों में निर्माण कार्यों के लिए भूवैज्ञानिकों की सलाह को अनिवार्य बनाया जाना चाहिए। ढ़लानों की मजबूती, जल निकासी के उचित चैनल और वनस्पति संरक्षण जैसे उपाय भूस्खलन की घटनाओं को कम कर सकते हैं। इसके अतिरिक्त, रियल-टाइम वेदर मॉनिटरिंग सिस्टम और अर्ली वार्निंग सिस्टम को मजबूत करना भी बेहद आवश्यक है। प्रशासनिक स्तर पर भी जवाबदेही सुनिश्चित करनी होगी।

हर वर्ष मानसून से पहले नालों की सफाई और जल निकासी की व्यवस्था के लिए बजट आवंटित किया जाता है लेकिन इसका प्रभाव जमीनी स्तर पर दिखाई नहीं देता। यह केवल कागजी कार्रवाई बनकर रह जाता है। जब तक इस पर सख्ती से निगरानी और पारदर्शिता नहीं लाई जाएगी, तब तक स्थिति में सुधार की उम्मीद करना व्यर्थ होगा। यहां नागरिकों की भूमिका भी कम महत्वपूर्ण नहीं है। अतिक्रमण, कचरा प्रबंधन में लापरवाही और पर्यावरणीय नियमों की अनदेखी भी इस संकट को बढ़ाती है। यदि नागरिक स्तर पर जागरूकता और जिम्मेदारी का भाव विकसित किया जाए तो इस समस्या को काफी हद तक नियंत्रित किया जा सकता है। कुल मिलाकर, हमें यह स्वीकार करना होगा कि प्रकृति को पूरी तरह नियंत्रित करना संभव नहीं है लेकिन उसके प्रभाव को कम करना निश्चित रूप से हमारे हाथ में है। इसके लिए आवश्यक है कि हम वैज्ञानिक दृष्टिकोण, तकनीकी नवाचार और प्रशासनिक ईमानदारी को एक साथ लेकर चलें। यदि अब भी हमने समय रहते कदम नहीं उठाए तो मानसून हमारे लिए हर वर्ष राहत के बजाय आफत बनकर आता रहेगा। आज आवश्यकता इस बात की है कि सरकार, प्रशासन और समाज मिलकर एक दीर्घकालिक और ठोस रणनीति तैयार करें, तभी हम इस प्राकृतिक चुनौती को अवसर में बदल सकते हैं और आने वाली पीढ़ियों को एक सुरक्षित और संतुलित पर्यावरण दे सकते हैं।

स्वामी, सुबह सवेरे मीडिया एल.एल.पी. के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक उमेश त्रिवेदी द्वारा श्री सिद्धीविनायक प्रिंटर्स, प्लॉट नं. 26-बी, देशबंधु परिसर, प्रेस कॉम्पलेक्स, जोन-1, एम.पी.नगर, भोपाल, म.प्र. से मुद्रित एवं डी-100/46, शिवाजी नगर भोपाल से प्रकाशित।

प्रधान संपादक
उमेश त्रिवेदी
कार्यकारी प्रधान संपादक
अजय बोकिल
संपादक (मध्यप्रदेश)
विनोद तिवारी
वरिष्ठ संपादक
पंकज शुक्ला
प्रबंध संपादक
अरुण पटेल
(सभी विवादों का न्याय क्षेत्र भोपाल रहेगा)
RNI No. MPHIN/ 2003/ 10923,
Ph. No. 0755-2422692, 4059111
Email- subahsaverenews@gmail.com

'सुबह सवेरे' में प्रकाशित विचार लेखकों के निजी मत हैं। इनसे समाचार पत्र का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

दृष्टिकोण

राजेंद्र बज

लेखक स्तंभकार हैं।

प्रतिपक्ष को अपना आत्मविश्वास जागृत करने की जरूरत है

साफ दिखाई देता है कि राजनीतिक परिदृश्य में नेतृत्व की बहुआयामी कूटनीति के चलते प्रतिपक्षी दलों में एक अजीब सी निराशा व्याप्त है। राष्ट्रीय अंतरराष्ट्रीय स्तर पर आम नागरिकों को उद्वेलित कर देने वाली नीति के क्रियान्वयन के प्रति भी प्रतिपक्षी दलों में निराशा दिखाई देती है। गौरवशाली राजनीतिक पृष्ठभूमि से आच्छादित दल भी सक्षम नेतृत्व के अभाव में अपेक्षित भूमिका का निर्वहन नहीं कर पा रहा है। यही एक कारण है कि नेतृत्व की कार्यप्रणाली में हठधर्मिता दिखाई देती है। लोकतंत्र की एक विशिष्ट खासियत यह हुआ करती है कि आम नागरिकों के सम्मुख सत्ता पक्ष का सशक्त विकल्प सामने होता है। लेकिन दुर्भाग्य से इस समय अंतर्द्वंद्व में उलझा प्रतिपक्ष अपनी भूमिका को धार नहीं दे पा रहा है।

लोकतांत्रिक शासन प्रणाली में सशक्त प्रतिपक्ष, सत्तापक्ष की निरंकुशता पर प्रभावी रूप से अंकुश लगाने में सहायक सिद्ध होता है। परस्पर विपरीत विचारधारा के बावजूद सत्तापक्ष तथा प्रतिपक्ष परस्पर पूरक होते हैं। किसी एक पक्ष के कमजोर हो जाने पर लोकतंत्र को सार्थक स्वरूप नहीं दिया जा सकता। दोनों ही पक्ष अलग-अलग भूमिका का निर्वहन करते हुए व्यापक जनहित के प्रति समर्पित रहने की रीति-नीति को आत्मसात करते हैं। समान लक्ष्य के साथ भिन्न-भिन्न विचारधाराएं, अलग-अलग प्राथमिकता लिए होती है। दोनों ही पक्षों में स्वाभाविक रूप से समय-समय पर होने वाली टकराहट भी 'लोकतंत्र की प्रासंगिकता' को रेखांकित करते हुए जनकल्याण की भावनाओं को मूर्त रूप प्रदान करती है।

इन संदर्भों के साथ वर्तमान परिप्रेक्ष्य में स्वाभाविक रूप से बीते दौर की करारी हार की हताशा से आहत प्रतिपक्ष के विभिन्न घटक अपना आत्मविश्वास न खो बैठे, यह चिंता की जाना लोकतंत्र की सार्थकता के लिए अत्यंत आवश्यक है। परंपरागत रूप से जिन मुद्दों को उछालकर चुनावी वैतरणी पार की जाती रही थी, निरंतर परिवर्तित दौर में वे सारे मुद्दे सर्वथा अप्रासंगिक करार दिए जा चुके हैं। अब राजनीतिक तौर-तरीकों में सकारात्मक परिवर्तन आता दिखाई देता है। विभिन्न प्रति प्रतिपक्षी दलों को जागृत मतदाताओं की मानसिकता के अनुरूप अपनी-अपनी प्राथमिकताओं में आमूलचूल परिवर्तन कर लेना चाहिए। जनादेश द्वारा जातिवाद, तुष्टीकरण, वंशवाद तथा अलगाववाद को सर्वथा नकार दिया गया है।

दरअसल परिवर्तित जनमानस द्वारा दिए जा रहे संकेतों को समझना प्रतिपक्षी राजनीतिक दलों के लिए अत्यंत आवश्यक है। नागरिकों ने प्रकारांतर से नकारात्मक राजनीति को हतोत्साहित करते हुए, दिए जा रहे तमाम प्रलोभनों को ठुकराया है। ऐसे में प्रतिपक्षी दलों के लिए यही बेहतर रहेगा कि तर्क की कसौटी पर खरे उतरते मुद्दों के सहारे ही राजनीतिक गतिविधियां संचालित की जाए। सशक्त राष्ट्र की परिकल्पना को साकार सिद्ध करने की दिशा में जिन-जिन राजनीतिक दलों के पास जो-जो कार्ययोजनाएं हैं, उसे नागरिकों के सामने रखी जाना चाहिए। ऐसा होने पर ही करारी चोट खाए राजनीतिक दल अपने पैरों पर खड़े हो सकते हैं और समय आने पर दौड़ भी सकते हैं। अन्यथा घुटनों के सहारे टिका प्रतिपक्ष निश्चित तौर पर पंगु बनकर रह जाएगा।

मनोवैज्ञानिक रूप से करारी शिकस्त, प्रतिपक्ष का आत्मबल कुंठित कर सकती है। लेकिन प्रतिपक्ष को अपनी ऊर्जा एवं चेतना का अविरल प्रवाह जारी रखना होगा। उन्हें संभलना होगा, समर्थकों को साधे रखना होगा, अपना आत्मविश्वास जगाना होगा और लोकतंत्र की सार्थकता सुनिश्चित करने हेतु सशक्त प्रतिपक्ष की भूमिका का निर्वहन भी करना होगा। यह हमारे लोकतंत्र की परिपक्वता का ही अद्भुत चमत्कार है कि लगभग शून्य से शिखर तक का सफर वर्तमान सत्तारूढ़ पार्टी ने हमारे सामने ही पूरा किया है। दरअसल प्रतिपक्ष को आत्मविश्वास जागृत करने की नितांत आवश्यकता है। लोकतांत्रिक शासन प्रणाली में प्रतिपक्ष के सम्मुख अस्तित्व का संकट, आंशिक तौर पर ही सही किंतु लोकतंत्र के शुभचिंतकों के लिए चिंता का विषय है। कुल मिलाकर मुद्दे की बात यह कि बेहतर हो यदि सत्तापक्ष निरंकुश न हो जाए, व्यापक जनमत का समर्थन दंभ का कारण न बन जाए, साथ ही गिरते हुए को और अधिक न गिराया जाए। ऐसी चिंता दलगत राजनीति से परे राष्ट्रवादी नागरिकों के अंतर्मन में होना स्वाभाविक है। इस तथ्य को भी बखूबी समझ लिया जाना चाहिए कि देश के नागरिकों का राजनीति के प्रति जितना अधिक विरक्ति भाव होगा उतनी ही अधिक संभावना लोकतंत्र के एकतंत्र में परिवर्तित होने को लेकर होगी। इस में अति न हो, सशक्त प्रतिपक्ष की उपस्थिति ही ऐसा सुनिश्चित कर सकती है। अन्यथा स्वतंत्र भारत के इतिहास में ऐसा भी दौर आया था जिसने लोकतंत्र के नुमाइंदों के बीच जमकर कोहराम मचा कर रख दिया था। दरअसल हमें इतिहास से सतर्कता की सीख मिले तो ऐसी सीख ले लेनी चाहिए। आशा की जानी चाहिए कि लोकतंत्र की बगिया में रंग बिरंगे फूल खिलते रहे और अपनी महक बिखेरते रहे। आम नागरिक जिनका राजनीति से नाता हो या न हो लेकिन वह भी यही चाहेंगे कि सरकार सशक्त हो और प्रतिपक्ष भी सशक्त हो। सरकार प्रतिपक्ष का भय पालें और कुछ गलत न करें। प्रतिपक्ष सत्ता में आने की आतुरता का भाव लिए अपनी भूमिका को सतर्कता से निभाए। निश्चित ही जब सत्तापक्ष तथा प्रतिपक्ष अपने-अपने राजनीतिक धर्म का परिपालन करते रहेंगे तब हम विकसित भारत की परिकल्पना को साकार स्वरूप लेते हुए देखते रह सकेंगे। वर्तमान राजनीतिक संदर्भ में प्रतिपक्ष एकला चले या संयुक्त रूप से चले। लेकिन चले जरूर, चले और फिर दौड़े जरूर। क्योंकि जो आज सत्ता में हैं वे भी ऐसे ही दौर से गुजर कर आज के मुकाम तक पहुंचे हैं।

स्वस्थ लोकतंत्र को बरकरार रखने हेतु सत्तापक्ष एवं प्रतिपक्ष में अधिक अंतर नहीं होना चाहिए। निश्चित रूप से जब तक आम नागरिकों के समक्ष सत्तापक्ष का सक्षम विकल्प नहीं होगा, तब तक लोकतंत्र डावाडोल स्थिति में ही दिखाई देगा। ऐसी स्थिति सत्तापक्ष की निरंकुश मनोवृति का स्पष्ट परिचय देखने को मिल सकता है। वर्तमान राजनीतिक संदर्भ में नागरिकों का एक वर्ग ऐसा भी है जो वर्तमान नेतृत्व की कार्यप्रणाली से इत्तेफाक नहीं रखता। लेकिन किसी भी दृष्टि से आज नेतृत्व को चुनौती दिखाई नहीं देती। इसमें संदेह नहीं कि वर्तमान नेतृत्व देश के मान सम्मान और स्वाभिमान को निरंतर नए आयाम दे रहे हैं। यही नहीं अपितु विश्व के सर्वश्रेष्ठ राजनीतिज्ञों की गिनती में शुमार किए जाते हैं। वैसे एक बात में भी रत्ती भर संदेह नहीं कि कालांतर में आधुनिक भारत के वे निर्माता ही कहे जाएंगे।

बावजूद इन सबके लोकतंत्र के उत्तम स्वास्थ्य हेतु किसी न किसी रूप में आम नागरिकों के समक्ष सत्तापक्ष का विकल्प लोकतंत्र की सार्थकता को सिद्ध करने में प्रबल रूप से सहायक सिद्ध होता है। निश्चित ही हम देश के भाग्य और भविष्य को एक ही व्यक्ति पर आश्रित कैसे देख सकते हैं? कुल मिलाकर मुद्दे की बात यह कि प्रतिपक्ष अपनी बिखरी हुई शक्तियों को एकत्रित करें, यही समय की मांग है। अन्यथा देश में लोकतंत्र की जड़ें खोखली होने के आसार नजर आते हैं। बेहतर हो यदि इस दिशा में प्रतिपक्ष के दिग्गज अपने अहम का त्याग करें। वर्तमान में प्रतिपक्ष की जो स्थिति है, उससे किसी भी दृष्टि से संतुष्ट नहीं रहा जा सकता।

व्यंग्य

जवाहर चौधरी

लेखक व्यंग्यकार हैं।

छतरी एक सम्भावना है

छुट्टी का दिन है, मुख्तार सिंग वरांडे में बैठे लाठी को तेल पिला रहे हैं। हमें देखते ही वे बुलडोजर की तरह पलटे और अपना मोटा पेट अंदर खींचते हुए छाती को ज़बरिया चौड़ाया।

'अरे भिया मुख्तार सिंग जी !! मरोगे क्या !?' हमने डरने की मुद्रा में एक सादा सा सवाल किया जो इस समय देश भर में जड़ें जमाए बैठा है।

'अरे कैसी बातें करते हो ! तुमको क्यों मारेंगे !? न तुम कभी धार्मिक मामलों में कुछ बोलते हो और न ही चलती राजनीति में फच्चर मारते हो। तुम जैसे लोग ही तो हमारी ताकत हो। क्या कहते हैं.... बैक बोन हो हमारी।' वे बोले।

'पड़ोसी भी तो हैं भिया आपके।'

'पड़ोसी वड़ोसी से कोई मतलब नहीं है, आदमी सई होना चिये बस। गलत पड़ोसी परमानेंट हेडक होता है। आदमी हो या मुल्क।'

'लाठी के साथ आपकी भंगिमा देख कर मुझे लगा कि...'

'भंगिमा तो रखना पड़ती है। भंगिमा का ही जमाना है। गधे अगर घोड़े की भंगिमा रखें तो सामने वाले उसे खच्चर तो मान ही लेते हैं। धीरे धीरे लोकतंत्र भूलो, हम लोग अब भंगिमातंत्र में जी रहे हैं। आधे से ज्यादा काम तो भंगिमा से हो जाता है। आदमी लुच्चा, लफंगा, बेईमान, झूठा-लबार सब चल जाता है, बस भंगिमा से सच्चाई और ईमानदारी के फूल झरना चइये। हत्यारे लोग आजकल बड़े चाणक्य हो गए हैं, आदमी को मार देते हैं और उसकी शोकसभा में फूल भी चढ़ा आते हैं। ये है भंगिमा का मजा।'

'हम लोग तो आम आदमी है मुख्तार सिंह जी। हम क्या जाने क्या है भंगिमा और क्या है पॉलिटिक्स।'

'यह भी आम आदमी की एक भंगिमा है। 'एड़ा बन के पेड़ा खा लेते हैं' और किसी को पता भी नहीं चलता है। कोई नेता दिखता है तो हाथ जोड़ने की भंगिमा में खड़े हो जाते हैं और अंदर ही अंदर गाली बकते हैं। किसी भी दफ्तर में चले जाओ, टेबल के ऊपर ईमानदार का बाप और टेबल के नीचे अपने बाप का भी नहीं। आजकल भक्तों की भंगिमा में चोर बैठे होते हैं और भगवान तक को पता नहीं चलता है। भंगिमा जनता के सेवक की और असली काम लूट लूट कर तिजोरी भरने का। दुनिया सदमे में है लेकिन भक्तों को स्वर्ग दिख रहा है।'

अभी वो और भी खरनाक ज्ञान देने के मूड में थे लेकिन हमने बात बदली। 'आप ठीक कह रहे हैं लेकिन यह तो बताइए इतनी महंगाई में लाठी को तेल क्यों पिला रहे हैं !?'

'ये क्या लाठी लाठी बोल रहे हो !! लाठी बूढ़े और कमजोर लोगों के पास होती है। इसे दण्ड कहिये। दण्ड हाथ में हो तो भंगिमा शौर्यपूर्ण हो जाती है। और तेल पिलाने से दण्ड समृद्ध होता है। सूखी दुबली लाठी पिछड़े गरीब के समान होती है। देखना एक दिन हर हाथ में समृद्ध दण्ड होगा और हम विश्वगुरु बन जाएंगे।'

'दण्ड से हम विश्वगुरु कैसे बन जाएंगे !?'

'बताया ना भंगिमा बहुत बड़ी चीज होती है।... तुम्हारे पास दण्ड है?'

'नहीं, मेरे पास छतरी है।'

'छतरी का क्या करोगे। जब तेज हवा चलती है तो छतरी तोतों कि तरह उड़ जाती है। इसलिए दण्ड रखा करो।'

'बारिश में दण्ड मुझे भीगने से कैसे बचाएगा !?'

'छुपने छोड़ो। तुम्हें मुख्यधारा में आना चईये, भंगिमा बनाओ, दण्ड रखो, कमर कसो।'

'रख लेता मुख्तार सिंग जी, मगर तेल बहुत महँगा है। आपने अभी बताया कि दण्ड को तेल पिलाना पड़ता है। हमें तो बघार में भी कटौती करना पड़ती है।'

'कोई बात नहीं, तुम ये दण्ड ले जाओ, भंगिमा बनाओ और छतरी यहीं छोड़ जाओ।'

'मुख्तार सिंग जी आप रहने दीजिये, मुझे दण्ड नहीं चाहिए। मतलब मेरे हाथ में दण्ड शोभा नहीं देगा। और छतरी का आप क्या करोगे ! वो तो उड़ जाती है तोतों की तरह !'

'जब दण्ड से काम नहीं चलेगा तब छतरी एक सम्भावना है।... तुम नहीं समझोगे।'

भूमिका

डॉ.जवाहर कर्नावट

निदेशक,अंतरराष्ट्रीय हिंदी केंद्र,
रबींद्रनाथ टैगोर विश्वविद्यालय,भोपाल
(वैश्विक हिंदी पत्रकारिता के अध्येता)

हिंदी की वैश्विक पत्रकारिता: प्रिंट से ऑनलाइन की यात्रा

इंटरनेट पर भाषा प्रौद्योगिकी के नए स्वरूप और यूनिकोड के प्रयोग ने पिछले 30 वर्षों में विदेशों में हिंदी की मुद्रित पत्रकारिता से ऑनलाइन पत्रकारिता की ओर तेजी से कदम बढ़ाए हैं।

विश्व के अलग-अलग कोनों में हिंदी मीडिया के विस्तार ने हिंदी के वैश्विक प्रचार-प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह किया है। विदेश में हिंदी पत्रकारिता की शुरुआत लंदन से 1883 में प्रतापगढ़ जनपद की एक देशी रियासत कालाकांकेर के राजा रामपाल सिंह ने 'हिंदोस्तान' नामक त्रैमासिक प्रकाशन से प्रारंभ की थी जो 1885 तक प्रकाशित होता रहा। वर्ष1898 में त्रिनिदाद-टोबेगो से 'हिन्दोस्तान कोहिनूर अखबार' दैनिक रूप में प्रकाशित हुआ। वर्ष 1903 में दक्षिण अफ्रीका से प्रकाशित, साप्ताहिक 'इंडियन ओपिनियन' में महात्मा गांधी ने चार भाषाओं (हिंदी, गुजराती, तमिल और अंग्रेजी) का समावेश कर एक नया इतिहास बनाया। वर्ष 1913 में अमेरिका से प्रकाशित 'गदर' ने भारत की आजादी के संघर्ष हेतु हिंदी के अलावा अनेक भाषाओं में प्रकाशन निकाले। साधनाभाव के दौर में हस्तलिखित पत्रिकाओं ने भी हिंदी पत्रकारिता को सम्बल प्रदान किया। मॉरीशस से 'दुर्गा' ब्रिटेन से 'प्रवासिनी', अमेरिका से 'विश्वा', हंगरी से 'दिन' आदि पत्रिकाओं ने हिंदी की पताका को फहराए रखा। फिजी से 'शांतिदूत' साप्ताहिक का 1935 से 85 वर्षों तक प्रकाशित होना एक ऐतिहासिक घटना के रूप में दर्ज है। विदेश में हिंदी पत्रकारिता के 142 वर्षों के इतिहास में लगभग 200 पत्र-पत्रिकाओं के प्रकाशन ने हिंदी को वैश्विक विस्तार प्रदान किया।

इंटरनेट पर भाषा प्रौद्योगिकी के नए स्वरूप और यूनिकोड के प्रयोग ने पिछले 30 वर्षों में विदेशों में हिंदी की मुद्रित पत्रकारिता से ऑनलाइन पत्रकारिता की ओर तेजी से कदम बढ़ाए हैं। न्यूजीलैंड के ऑकलैंड शहर से श्री रोहित कुमार हैप्पी के संपादन में प्रकाशित 'भारत दर्शन' पत्रिका के वेब संस्करण को इंटरनेट पर विश्व की प्रथम हिंदी पत्रिका होने का श्रेय प्राप्त हुआ। दिसंबर 1998 में 'भारत दर्शन' स्वयं के डोमेन (Bharatdarshan. co.nz) पर आरंभ हो गया। 'भारत दर्शन' के अंकों में काव्य, बाल साहित्य, कहानी, विविध आलेख, भारतीय त्यौहार एवं मेलों आदि पर सामग्री निरंतर 25 वर्षों से उपलब्ध कराई जा रही है। इस पत्रिका के डोमेन पर पुराने सभी अंक भी उपलब्ध हैं। इसी प्रकार वर्ष 2000 में संयुक्त अरब अमीरात से श्रीमती पूर्णिमा बर्मन के संपादन में 'अभिव्यक्ति' और 'अनुभूति' पत्रिका की शुरुआत वेब माध्यम से हुई। उस समय हिंदी के मानक फॉण्ट नहीं होने के कारण सामग्री की इमेज बनाकर वेब पर अपलोड की जाती थी। यह पत्रिका विश्व के अनेक देशों में लोकप्रिय हुई। 'अभिव्यक्ति' पत्रिका को ई-मेल से बड़ी संख्या में कविताएं मिल रही थी। वेब पर कविताओं की प्रचुरता देख कविताओं की एक अलग पत्रिका 'अनुभूति' की शुरुआत 2001 में हुई। प्रारंभिक वर्षों में ही भारत, जापान, फ्रांस, यू.के., नार्वे, कनाडा, यूएसए, यूएई, मलेशिया आदि अनेक देशों के शौकिया और व्यावसायिक हिंदी कवि तथा लेखक इस पत्रिका से जुड़कर सहयोग करने लगे। 2007 है। इस पत्रिका के 162 अंक जारी हो चुके हैं और 500 से अधिक समकालीन लेखकों की रचनाएं प्रकाशित हो चुकी है। हाल ही में इंग्लैंड की सुप्रसिद्ध संस्था 'वातायन' ने अप्रैल 2025 से 'वातायनम्' तिमाही पत्रिका की शुरुआत लंदन से की है। इसका प्रथम अंक भारत के और ऑस्ट्रेलिया के प्रमुख रचनाकारों से सजा हुआ है। दिव्या माथुर जी के संपादन में इस पत्रिका के 2 अंक जारी हो चुके हैं।

कनाडा से 'साहित्य कुंज' ऑनलाइन पत्रिका पिछले 22 वर्षों से जारी हो रही है। इस मासिक पत्रिका के संपादक श्री सुमन घई हैं। पत्रिका में कनाडा, अमेरिका, ब्रिटेन, भारत आदि अनेक देशों के रचनाकारों की रचनाएं भी प्रकाशित होती हैं। अभी तक इसके 282 अंक प्रसारित हो चुके हैं। काव्य, साहित्य, शायरी, कथा साहित्य, व्यंग, अनूदित साहित्य, बाल साहित्य, नाट्य साहित्य, समीक्षा, साक्षात्कार आदि विधाओं का समावेश 'साहित्य कुंज' में होता है। कनाडा के टोरंटो शहर से ही वर्ष 2019 से 'पुस्तक रिसर्च जनरल' प्रत्येक तिमाही ऑनलाइन प्रकाशित हो रहा है। इस शोध त्रैमासिक पत्रिका में हिंदी, संस्कृत, भारतीय संस्कृति आदि विषयों पर आलेख सम्मिलित होते हैं। 'पुस्तक भारती' के संस्थापक श्री रत्नाकर नराले इस पत्रिका के संपादक हैं। जापान से डिजिटल रूप में प्रकाशित तिमाही पत्रिका 'हिंदी की गूंज' मुद्रित के साथ ही डिजिटल रूप में भी जारी होती है। इस 64 पृष्ठीय पत्रिका में साहित्य की विभिन्न विधाओं पर रचनाएं प्रकाशित होती है किंतु अधिकांश रचनाकार भारत के ही होते हैं।

अमेरिका हिंदी की ऑनलाइन पत्रिकाओं के लिए सर्वाधिक समृद्ध देश है। यहाँ से 1999 में 'उद्गार' ऑनलाइन पत्रिका की शुरुआत हुई। कुछ और भी ऑनलाइन पत्रिकाएँ छुटपुट व्यक्तगत प्रयासों से जारी हुई किंतु अल्पजीवी रहीं। वर्ष 2016 से श्री अनुराग शर्मा के मुख्य संपादन में पिट्सबर्ग से हिंदी-अंग्रेजी में जारी पत्रिका 'सेतु' ने अनेक कीर्तिमान बनाए हैं। विश्व भर के प्रवासी और स्थानीय साहित्यकार, लेखक, पत्रकार और विशेषज्ञ इसमें लेखन करते हैं। इस पत्रिका ने अपने विशिष्ट तेवर और शब्दानुशासन से अलग पहचान बनाई है। इस पत्रिका को अभी तक 51 लाख 31 हजार हिट्स मिल चुके हैं। विश्व हिंदी ज्योति संस्था, केलिफोर्निया से हिंदी 'कोस्तुभ' त्रैमासिक पत्रिका की शुरुआत मार्च 2021 में 'रंग विशेषांक' के साथ हुई। इसके अनेक विशेषांक (आस्था, फुहार, ज्योतिर्गमय, गुरू, शिष्य, नव कोपल, मकरंद आदि) जारी हो चुके हैं। जून 2022 में न्यूजर्सी के स्वयं सेवी समूह 'हिंदी से प्यार' द्वारा श्री अनूप भार्गव के संपादन में 'अनन्य' पत्रिका का प्रथम अंक जारी हुआ। इस आनलाइन पत्रिका को न्यूयार्क स्थित भारत के प्रधान कौंसलावास की वेबसाइट पर भी रखा गया है। 'अनन्य' पत्रिका के ऑस्ट्रेलिया, ब्रिटेन, चीन, रूस, सिंगापुर, तंजानिया, केन्या, न्यूजीलैंड और कैनेडा संस्करण भी जारी हो रहे हैं।

सन् 2018 में सिंगापुर से प्रथम हिंदी पत्रिका 'सिंगापुर संगम' की शुरुआत ऑनलाइन ही हुई। नेशनल यूनिविर्सिटी ऑफ सिंगापुर की हिंदी प्राध्यापक डॉ. संध्या सिंह के संपादन में पत्रिका हिंदी के वैश्विक मंच पर अपनी विशिष्ट पहचान बना चुकी है। पिछले 8 वर्षों से प्रवासी विशेषांक, भोजपुरी विशेषांक विश्व में हिंदी विशेषांक, लघु कथा विशेषांक आदि के साथ पत्रिका के 29 अंक जारी हो चुके हैं।

सन् 2022में नॉटनल (शीर्ष ई-बुक प्लेटफार्म) के अंतर्गत जापान, जर्मनी, इटली, चीन, पुर्तगाल, कनाडा आदि के हिंदी प्राध्यापकों के सहयोग से 'अंतरदेश' हिंदी पत्रिका की शुरुआत 'जर्मनी विशेषांक' के रूप में हुई। वर्ष2024 में इस पत्रिका के जापान और कनाडा विशेषांक अत्यंत लोकप्रिय हुए। वर्ष 2025 में विश्व सिनेमा विशेषांक और अनुवाद विशेषांक भी प्रशंसनीय रहे। वर्तमान में इस पत्रिका का संपादन कनाडा से डॉ. हंसा दीप और जापान से डॉ. वेदप्रकाश सिंह कर रहे हैं।

ऑस्ट्रेलिया से डॉ. भावना कुंवर के संपादन में 'ऑस्ट्रेलियांचल' त्रैमासिक ई पत्रिका का प्रथम अंक 15 अगस्त 2020 को स्वतंत्रता दिवस विशेषांक के रूप में जारी हुआ। पत्रिका का उद्देश्य विश्व भर में हिंदी साहित्य का प्रसार है। इस पत्रिका के भी अनेक विशेषांक (यथा प्रवासी, स्वतंत्रता दिवस, गणतंत्र दिवस, दीपावली, होली आदि) जारी हो चुके हैं।

विक्टोरिया, ऑस्ट्रेलिया से ही 'सृजन ऑस्ट्रेलिया' वेब पत्रिका वर्ष 2020 से सुश्री गरिमा मनीषी द्वारा जारी की जा रही है। यह एक बहुविषयक, विशेषज्ञों द्वारा समीक्षित अन्तरराष्ट्रीय ई पत्रिका है। इसकी मुख्य संपादक श्रीमती पूनम चतुर्वेदी तथा मार्गदर्शक डॉ. शैलेशशुक्ला हैं। वैश्विक हिंदी अभियान के अंतर्गत इस पत्रिका के बैनर तले 300 से अधिक कार्यक्रम वैश्विक स्तर पर आयोजित हो चुके हैं।

दोहा (कतर) से 'नवचेतना' त्रैमासिक पत्रिका 2020 से निरंतर जारी हो रही है। कतर के अलावा अन्य देशों से रचनाकार इसमें अपनी रचनाएं भेजते हैं। पत्रिका कतर के हिंदी विद्यार्थियों के लिए प्रतियोगिताएँ भी आयोजित करती है। इसी प्रकार साइप्रस से भी 'अभिव्यक्ति' ई पत्रिका के कुछ अंक सन् 2004 में जारी हुए। अब संपूर्ण विश्व में ऑनलाइन पत्रिकाओं के माध्यम से हिंदी भाषा और साहित्य का व्यापक प्रसार देखने को मिलता है।

सवाल शब्द के भरोसे का

सवाल यह भी है कि यदि ए.आई. को ही सबकुछ करना है, तो पत्रकारों की रचनात्मकता का क्या होगा? और यदि रचनात्मकता ग़ायब है, तो ऐसी शुष्क और संवेदनहीन ख़बरों से पाठक कैसे जुड़ेगा?

प्रतिबद्धता

कैलाश मंडलेकर

व्यंग्यकार-कवि

मुझे याद है मेरे पिता भोर होते ही कुर्सी लगाकर दरवाज़े के पास बैठ जाया करते थे और जब तक हॉकर अख़बार नहीं डालता, वे चाय तक नहीं पीते थे। उनकी चाय ठण्डी हो जाया करती थी। यह उन दिनों की बात है जब पत्रकारिता व्यवसाय नहीं था और अख़बारों का काम सिर्फ़ ख़बर देना था, ख़बर को बेचना नहीं। ख़बर देने और ख़बर बेचने में बहुत फ़र्क़ है। आज ख़बरों की विश्वसनीयता लगातार गिरती जा रही है; अब अख़बार चलाना केवल व्यवसाय रह गया है। अख़बार की जनता के साथ जो प्रतिबद्धता हुआ करती थी, वह सूचना क्रान्ति के इस दौर में समाप्त होती जा रही है। जल्सा 'उदन्त मार्तण्ड' का ही क्यों हो, स्वतांता के दौर के उन समस्त अख़बारों के लिए भी सम्मान होना चाहिए जिन्होंने स्वतंत्रता संग्राम को एक व्यापक जन-आन्दोलन में बदलने का प्रयास किया। पत्रकारिता के गौरवशाली अतीत की बात करें तो भारतेन्दु की 'कवि वचन सुधा' को कैसे भूल सकते हैं। भारतेन्दु ने जिस निर्भीकता के साथ इसे जन-व्यापी बनाया, उसे भुलाया नहीं जा सकता। और खण्डवा का होने के नाते मैं 'कर्मवीर' को लेकर अक्सर नॉस्टेल्जिक हो जाया करता हूँ।

प्रिंट मीडिया की बात करें तो इसमें कोई सन्देह नहीं कि इसने केवल सूचना का प्रसार ही नहीं किया, बल्कि सामाजिक और राजनीतिक बदलाव में अहम भूमिका भी निभाई। लेकिन वैचारिक विनिमय का यह विश्वसनीय ज़रिया अब अपनी उपादेयता खोता जा रहा है। अतीत में अख़बारों के मार्फ़त जिस देशव्यापी अक्षर-युद्ध की शुरुआत हुई थी और तोप के मुक़ाबले अख़बार निकालने की जिस मुहिम को चलाया गया था, वह अपनी मारक क्षमता खोता जा रहा है।

इधर इलेक्ट्रॉनिक मीडिया एक मनोरंजक मीडिया बनकर रह गया है। देश में पर्यावरण, जल-संकट, शिक्षा और स्वास्थ्य जैसे कोई मुद्दे नहीं बचे हैं जिन पर विचार-मंथन किया जाये। गाँवों और क़स्बों की आवाज़ यहाँ से ग़ायब है। सवाल यह भी है कि यदि ए.आई. को ही सबकुछ करना है, तो पत्रकारों की रचनात्मकता का क्या होगा? और यदि रचनात्मकता ग़ायब है, तो ऐसी शुष्क और संवेदनहीन ख़बरों से पाठक कैसे जुड़ेगा?

विश्व नीति

संजय सिंह राठौर

सचिव, विश्व रंग सचिवालय

अंतरराष्ट्रीय हिन्दी केन्द्र और ओलंपियाड

टैगोर अंतरराष्ट्रीय हिन्दी केन्द्र के अंतर्गत 'हिन्दी शिक्षण पाठ्यक्रम' के साथ-साथ हिन्दी पठन-पाठन के लिए और भी रोचक और पठनीय डिजिटल सामग्री का निर्माण किया जा रहा है। लोगों तक इसकी पहुँच को भी आसान बनाया गया है।

सर्व विदित है कि विश्व में हिन्दी की स्वीकार्यता बढ़ती जा रही है। भारत सरकार की राष्ट्रीय शिक्षा नीति में भी भाषा शिक्षण को कौशल के रूप में रेखांकित किया गया है। विदेशों में भारतीय संस्कृति को जानने और हिन्दी सीखने का रुझान काफी बढ़ रहा है। इसी तरह भारत के हिन्दीतर भाषी राज्यों खासकर उत्तर पूर्वी एवं दक्षिण के राज्यों में भी हिन्दी सीखने वालों की मांग बहुत बढ़ी है।

हिन्दी की विश्वव्यापी स्थिति को सुदृढ़ करने हेतु 'विश्वरंग' के अंतर्गत 'टैगोर अंतरराष्ट्रीय हिन्दी केन्द्र' की स्थापना रबीन्द्रनाथ टैगोर विश्वविद्यालय, भोपाल के परिसर में की गई है। उल्लेखनीय है कि विश्वरंग महोत्सव, 2023 में रमेश पोखरियाल 'निशंक', पूर्व शिक्षा मंत्री, भारत सरकार के करकमलों से इसका शुभारम्भ किया गया। अब इस केन्द्र के अंतर्गत विश्व के 30 से अधिक देशों की संस्थाओं और विश्वविद्यालयों में हिन्दी के प्रचार-प्रसार और विधिवत पठन-पाठन के लिए संबद्धता प्राप्त कर अपने देश-ब्रिटेन, अमेरिका, नीदरलैंड्स, सिंगापुर, मॉरीशस, रूस, सूरीनाम, बेल्जियन, यूएई, ऑस्ट्रेलिया, आयरलैंड, कनाडा, न्यूजीलैंड, नेपाल, स्पेन, स्विट्जरलैंड, श्रीलंका, जापान, थाइलैंड, मलेशिया, पुर्तगाल, यूक्रेन, उज्बेकिस्तान, चीन, वियतनाम, जर्मनी, कतर, केन्या, इंडोनेशिया आदि में अंतरराष्ट्रीय हिन्दी केन्द्रों की स्थापना कर ली गई है।

इसके अंतर्गत वैश्विक स्तर पर हिन्दी शिक्षण के लिए रचनात्मकता और पठनीयता पर विशेष ध्यान केंद्रित करते हुए 'हिन्दी शिक्षण पाठ्यक्रम' का निर्माण अत्यंत गंभीरता के साथ किया गया है। इसके लिए व्यवस्थित परीक्षा और स्टैंडर्ड सर्टिफिकेशन की व्यवस्था भी की गई है। इस हिन्दी शिक्षण पाठ्यक्रम के द्वारा ऑनलाइन ऑफलाइन दोनों माध्यम से बहुत ही रोचकता के साथ हिन्दी सीखी जा सकेगी। इसके लिए 'हिन्दी शिक्षण पाठ्यक्रम' को वैश्विक परिदृश्य के अनुसार हिन्दी, अंग्रेजी और रोमन लिपि में प्रवासी भारतीयों और हिन्दी सीखने वाले विभिन्न देशों के स्थानीय परिवेश को समाहित करते हुए डिजिटल स्वरूप में ही विकसित किया गया है। यह 'हिन्दी शिक्षण पाठ्यक्रम' एंड्रॉइड फोन पर एप के जरिए भी हिन्दी शिक्षण के लिए वैश्विक स्तर पर उपलब्ध होगा। हिन्दी ओलंपियाड का आयोजन इस दिशा में एक कारगर पहल है। पिछली दो कड़ियों की गतिविधियों के तहत दुनिया भर के उत्साही युवा इस नेटवर्क से जुड़ें हैं। आकर्षक पुरस्कारों ने प्रतिभागियों में नया उत्साह जगाया है।

टैगोर अंतरराष्ट्रीय हिन्दी केन्द्र के अंतर्गत 'हिन्दी शिक्षण पाठ्यक्रम' के साथ-साथ हिन्दी पठन-पाठन के लिए और भी रोचक और पठनीय डिजिटल सामग्री का निर्माण किया जा रहा है। लोगों तक इसकी पहुँच को भी आसान बनाया गया है। हमारे नेटवर्क का मूल आधार हिन्दी ही हैं। अंतरराष्ट्रीय हिन्दी केन्द्र अन्य देशों के हिन्दी पाठ्यक्रमों का प्रमाणीकरण भी करेगा। इसकी शुरुआत यू.के. हिन्दी समिति के पाठ्यक्रम से की गई है। केन्द्र के माध्यम से विदेशी भाषाओं के साहित्य को हिन्दी में अनुवाद करने की परियोजना को भी मूर्त रूप दिया जाएगा। यह केन्द्र वैश्विक स्तर पर प्रवासी भारतीयों की हिन्दी भाषा एवं साहित्य की गतिविधियों को एक मंच पर लाने का महत्वपूर्ण कार्य भी करेगा। वैश्विक स्तर पर हिन्दी के लिए रचनात्मक भूमिका निभा रहे डॉ. जवाहर कर्नावट को टैगोर अंतरराष्ट्रीय हिन्दी केन्द्र का निदेशक बनाया गया है।

विचार

अनिल त्रिवेदी

लेखक अभिभाषक हैं।

राजनीति और धर्म का मूल जीवन का अध्यात्म है

डॉक्टर राममनोहर लोहिया ने कहा था राजनीति अल्पकालीन धर्म है और धर्म दीर्घकालीन राजनीति। राजनीति और धर्म ने काल के प्रवाह में जीवन को गहराई से सजाया संवारा और सतत मानव जीवन के समक्ष प्रस्तुत चुनौतियां का समाधान निकाला है। राजनीति और धर्म ने कमजोर से कमजोर परिस्थिति वाले नागरिक को भी बेहतरी के सपने देखने और अपने सपनों को साकार करने का आनंदमयी साधन प्रदान किया है। आज का अधिकांश राजनीतिक नेतृत्व और धार्मिक समूह भांति-भांति के रंग रूप की पताकाएं फहराकर धर्म कर्म की इतिश्री समझने लगे हैं। इस तरह की ताकतें एकजुट होकर समूची दुनिया में राजनीति और धर्म के मूल स्वरूप को ही एक तरह से बदलने में लगे हैं। देश और दुनिया भर में राजनैतिक और धार्मिक नेतृत्व करने वाले अधिकांश समूहों ने राजनीति और धर्म की गहराई और मर्म को अपने मूल स्वरूप से उलट एकदम भिन्न पर लगभग पूरी तरह एक ऐसी उथली मनःस्थिति के करीब पहुंचा दिया हैं जिससे बाहर निकलना आज की दुनिया की सबसे बड़ी चुनौती है। राजनीति यानि एक तरह से सत्ता की जोड़-तोड़ का अंधा एवं यत्रवत खेल और धर्म यानी अध्यात्म से दूर अशांति, और अकारण लोभ लालच मय असहिष्णुता की पराकाष्ठा का अविवेकी हल्ला हो गया है। यह स्थिति या परिस्थिति तो राजनीति और धर्म की मूल अवधारणा किसी भी तरह से नहीं मानी जा सकती है। राजनीति और धर्म दोनों ही अपने मूल स्वरूप से उलट एक भिन्न स्थिति में लगभग पहुंच गए हैं। दोनों की मूल भूमिका लोक समाज की चेतना और वैचारिक सम्पन्नता को निरन्तर आगे बढ़ाने वाली होना चाहिए। पर आज के कालखंड में दोनों ही लोकसमाज मे एक तरह से प्रायः आपसी मनमुटाव , वैमनस्य और नाहक वितण्डावाद के पोषक बनते हुए आभासित होते या दिखाई पड़ते है। इसीलिए आज राजनीति और धर्म दोनों ने देश और दुनिया में जो रूप धारण कर लिया है,उससे लोक समाज एक अत्यंत जटिल यांत्रिक भूल-भुलैया में निरन्तर उलझता जा रहा है। राजनीति एक तरह से यंत्रवत,अकारण उत्तेजित तथा ऊलजलूल बयानबाजी करने वाले अविचारशील व्यक्तिओं का एक बड़ा हिस्सा या जमावड़ा बनती जा रही है। जिसका कुल नतीजा निष्क्रिय भीड़भाड़ वाली या अकारण उत्तेजित भीड़ की मनोदशाग्रस्त, अधिकांश मनुष्य वर्तमान समय में लगातार उलझते ही जा रहे है। लोकसमाज में सामान्य सहज विचार और विवेक का आग्रह लगातार क्षीण हो रहा है। मनुष्य जीवन को विवेक सम्मत तरिके से समस्या सुलझाने की प्रेरणा देना राजनीति का मूल काम है जिसे सत्ता की अंधी दौड़ में निरन्तर दौड़ती हुई राजनीतिक जमातों ने पूरी तरह उलट दिया है। धर्म पताका हवा में लहराते रहने मात्र से धर्म की आध्यात्मिक भूमिका मनुष्य के मन में स्वतः ही विकसित नहीं हो सकती।

धर्म मनुष्य के प्राकृतिक स्वरूप और मूल चेतना का जीवंत विस्तार है और आध्यात्मिक भूमिका की बुनियाद या आधारशिला है। धर्म मनुष्य जीवन की आध्यात्मिक भूमिका का निर्धारण और विस्तार करता है। धर्म एक तरह से मानव जीवन की आचार संहिता और मनुष्य मात्र के प्राकृतिक स्वरूप को व्यवस्थित रूप में जीवन के दर्शन और आचरण में उतारने का व्यवहारिक रूप स्वरूप हैं। एक सवाल मन में यह भी उठता है कि धर्म का धर्म क्या है? क्या धर्म मनुष्य मात्र तक ही सीमित है या धर्म समूचे जगत के लिए है। जैसे हवा का धर्म निरन्तर हर कहीं मौजूद रहना है। जल का धर्म भी किसी न किसी रूप में हर कहीं भूमि और भुवन में बने रहना है। वायु और जल किसी न किसी रूप में इस धरती पर मौजूद वातावरण और जीवन के विभिन्न रूपों में चाहे वह जीव जगत हो या वनस्पति जगत हो दोनों का अस्तित्व वायु और जल के अभाव में संभव ही नहीं है। इसी तरह एकता और अनेकता एक-दूसरे से वायु और जल की तरह ही आपस में रची-बसी है उसको एक-दूसरे से अलग नहीं किया जा सकता है। मनुष्य अपने आप में एक ही रूप स्वरूप में होते हुए भी अनेक रूप स्वरूप में जगत में बना रहता है। मनुष्य और वनस्पति का धर्म एक ही है जीवन की निरन्तरता को कायम रखना। क्या मनुष्य या जीव और वनस्पति के अभाव में जीवन संभव हो सकता है? अनेक जीव-जन्तुओं और वनस्पति जगत के जीवन के प्रवाह से ही जीवन या जीवन की निरन्तरता बनी रहती है। तो इस तरह से सहजता से समझा जा सकता है कि अनेकता और एकता दोनों ही जीवन की निरन्तरता या प्रवाह का ही मूल रूप है हम इस अर्थ में एक और अनेक को एक-दूसरे से अलग नहीं कर सकते। राजनीति और धर्म को हम खंडित रुप में देखने परखने और अनुभूत करने के कारण दोनों को मूलतः एक-दूसरे से अलग ही समझने लगे हैं। दोनों ही मूलतः जीवन के मूल प्रवाह से ही जन्मे हैं और कालक्रम अनुसार एक दूसरे से लिपट कर अपने गुण धर्म को सदैव मूल रूप में कायम रखते हैं और कालक्रम में विरोधाभासी रुप से अपने मूल गुण धर्म से विचलित होते हुए आभासित होते दिखाई पड़ते हैं।

राजनीति एक तरह से यंत्रवत,अकारण उत्तेजित तथा ऊलजलूल बयानबाजी करने वाले अविचारशील व्यक्तिओं का एक बड़ा हिस्सा या जमावड़ा बनती जा रही है। जिसका कुल नतीजा निष्क्रिय भीड़-भाड़ वाली या अकारण उत्तेजित भीड़ की मनोदशाग्रस्त, अधिकांश मनुष्य वर्तमान समय में लगातार उलझते ही जा रहे है।

राजनीति और धर्म इस जगत में जीवन की ऐसी अनोखी मानवीय गतिविधियां हैं जो जीवन काल में शांति और अशांति से परे रहकर जीवन को आध्यात्मिक साधना की दुनिया में निरंतर ले जाने का मार्ग प्रशस्त करती है। राजनीति और धर्म हमारे जीवन का क्षणिक तमाशा या कोरी हलचल न होकर इस जगत में जीवन का गहरा सनातन अध्यात्म है। जैसे जल की एक बूंद और वायु या धूल का एक कण की ताकत हमें दिखाई नहीं देती पर जगत और जीवन में जो भी कुछ धटता है वह पंचतत्व के सूक्ष्म स्वरूप के विराट साकार स्वरूप में आ जाने और पुनः मूल स्वरूप में विलीन हो जाने का अंतहीन सिलसिला ही है। राजनीति और धर्म अध्यात्म के विस्तार और संकुचित होते रहने की अनंत लहरें हैं। लहरों का आना- जाना आभासी दुनिया का एक एक क्षण या कण है जिसमें जीव और जीवन रचा बसा है। यही वह मूल विचार हैं जिसे हम जीवन और जगत का अध्यात्म मान सकते हैं।

चिंतन

विजय बहादुर सिंह

लेखक साहित्यकार व आलोचक हैं।

'जय राम' और 'जय श्रीराम' के भावनात्मक फर्क को समझें

कबीर और गाँधी के राम क्या अयोध्या वाले राम हैं? जो आदिकवि वाल्मीकि और अकबरकालीन कवि तुलसी के राम हैं, क्या वही राम हैं, जो एक विशेष सत्तादल और सत्ता राजनीति के प्रतीक पुरुष बनाए जाकर इन दिनों अयोध्या के भव्य मंदिर में प्राण प्रतिष्ठित कर दिए गए हैं? सत्ता विशेष की अपनी वैचारिक राजनीति द्वारा लाए गए राम और वाल्मीकि और तुलसी के राम क्या एक ही हैं?

उत्तर भारत के गाँवों में 'राम राम' या 'जयराम' की जो बंदगी दो लोगों के मिलने पर की जाती है, तो वह किस राम की याद की जाती है और इस याद के पीछे की परम्परा क्या है और इसका रहस्य क्या है? भारत के लोग जब 'जय राम' कहते हैं तो क्यों कहते हैं और उनके कहने के पीछे का मंतव्य क्या रहता है? राम को लेकर इधर तीन-चार दशकों से एक और नया नारा 'जय श्रीराम' का भी सुनाई देने लगा है, जो राजनीतिक क्षेत्र से चल कर आया है। इस नारे को सुनकर अब तक जय राम या जय सीताराम कह एक दूसरे का अभिवादन करने वाले अचकचा और आतंकित हो उठते हैं। अन्य धर्म विश्वासियों के लिए जो राम अब तक इमामे हिन्द (धर्म पुरुष) थे, कैसे अचानक त्रासकारी और संतापकारी हो उठे? जो अब तक सत्य और धर्म की साकार मूर्ति बन भारत के लोगों के हृदय सिंहासन पर विराज रहे थे, वे अकस्मात् केवल इस नारे के चलते भयकारी ही नहीं, पराये भी लगने लगे। लेकिन क्यों? हिन्दू होने के एहसास से भर कर अपने आप से पूछने लगता हूँ कि ये जो नए राम हैं, उनका रिश्ता क्या उस लोक और अवाम से जुड़ता है, जो उन्हें धर्माचार का मानदंड माने चलता चला आ रहा था? क्या उसके अपने राम संतापकारी और आक्रामक राम थे? क्या उन्हें अपनी जय ही सबकी जय लगती थी या सबकी जय को ही वे अपनी भी जय माना करते थे? अगर विशाल हिन्दू लोकसमाज के राम ही जिसमें कृषि, उद्योग, व्यापार, धर्म और राजनीति सबके अपने राम हैं, जिसमें आसपड़ोस और जात कुजात सबके जय की कामना है, तब ये कौन सा टुकड़ा है हिन्दू समाज का , जो अपनी जय को ही सबकी और समूचे देश की जय मानता है? कैसे यह दावा करता है कि राम उसके द्वारा लाए गए हैं, वाल्मीकि, कबीर, तुलसी और गाँधी द्वारा नहीं? अब अगर ये राम इस नई अयोध्या में रहें न रहें तब भी भारत में चिरकाल से रहते आए हैं और रहते रहेंगे। ये किसी मठ, मंदिर और सत्ता राजनीति की दाँव पेंच से पनपाए और उसी के द्वारा पाले पोसे गए राम नहीं, भारत के उदात्त लोकस्वप्न और लोक मर्यादा के मानदंड बनकर उसी लोकचित्त के सिंहासन पर पहले की ही तरह बैठे भी रहेंगे। ये वे राम हैं जिसे लोक ने वाल्मीकि, कबीर तुलसी और गाँधी से प्राप्त किया है। आश्चर्य यह कि अयोध्या वाले मंदिर पर राम को लेकरआदिकवि वाल्मीकि का जो सनातन वाक्य लिखा गया है उसका आशय है कि राम शरीरधारी धर्म हैं-'रामो विग्रहवान् धर्मः' । अरण्य काण्ड में राम इसे समझाते भी हैं सत्य ही सनातन राजवृत्त है, इसलिए राज्य की नींव सत्य पर टिकी है। सत्य से ही लोकप्रतिष्ठित है। ऋषि और देव सत्य को ही श्रेष्ठ मानते हैं। (जरा यहीं पर भारत सरकार का यह महावाक्य भी याद करिए- सत्यमेव जयते)। यहीं राम यह भी कहते हैं कि असत्यवादी और अनृतवादी से मनुष्य ऐसे डरते हैं जैसे जहरीले सर्प से। जबकि सत्य ही लोक का ईश्वर है। राम यहीं यह संकल्प लेते हैं-मेरे लिए यह असंभव है कि लोभ से, मोह से, अज्ञान से मैं सत्य की मर्यादा से विरत हो उठूँ अगर कभी भी ऐसा करूँ तो मैं अपने क्षात्र- धर्म से पतित हो जाऊँगा। मेरे लिए यह कर्मभूमि है। यहां आकर शुभकर्म करना हीश्रेयकारी है।

राम अपने कथन को और भी अधिक साफ करते हुए कहते हैं--सत्य, धर्म, शौर्य, भूतानुकंपा और प्रिय वचन, यही धर्म है। भूतानुकंपा यानी प्राणिमात्र पर अनुकंपा। यही भारत देश और उसके आदर्श शासक की परंपरागत पहचान है। भारत के लोगों के परम्परागत राम तो यही हैं। इसलिए महान शायर इकबाल ने अगर उन्हें इमामे हिंद कहा तो इन्हीं सारे अर्थों में कहा। अब भारत के लोगों की प्रिय अयोध्या- सो भी इसलिए कि उस नगरी से राम कभी जुड़े थे-अब अगर चन्द राजनेताओं और संघों,परिषदों और न्यासों की ही अयोध्या बची रह गई हो, उस राम और अयोध्या पर अकेले उसका ही हक है, ये राम उसके द्वारा लाए गए उसके अपने राम हैं, शेष हिन्दू लोक और समाज को न उन पर बोलने का हक है, न सोचने का, तब मान लेना चाहिए कि ले जाओ तुम अपने राम और अपनी इस अयोध्या को। रखो अपने पास। हम सबके राम केवल अयोध्या के मंदिर वाले राम नहीं, प्राणी प्राणी में बसे कृपालु, लोक हितकारी और सत्यवादी राम हैं। वे अयोध्या से पहले भी थे और अयोध्या अगर कभी नहीं रही तब भी रहेंगे। तुम्हारी यह अयोध्या और तुम्हारे ये 'जय श्रीराम' तुम्हें ही मुबारक।इनको नारा और बैनर बनाकर अपनी सत्ता -राजनीति का मोहरा बना चुके तुम्हारे इन राम से भला उसआम हिन्दू मन और जातियों की आस्था से क्या संबंध? ऐसे राम तुम्हें ही मुबारक।

ऊर्जा मंत्री प्रद्युम्न सिंह तोमर ने किया 33/11 के.वी. सनखेड़ी विद्युत उपकेंद्र का लोकार्पण

भोपाल । ऊर्जा मंत्री श्री प्रद्युम्न सिंह तोमर ने रायसेन जिले में साँची के ग्राम सनखेड़ी में एस.एस.टी.डी. योजना के अंतर्गत नव निर्मित 33/11 के.वी. विद्युत उपकेंद्र (5 एम.वी.ए.) का लोकार्पण किया। इस अवसर पर पूर्व मंत्री एवं स्थानीय विधायक, डॉ. प्रभुराम चौधरी उपस्थित रहे। लगभग 2 करोड़ 90 लाख रुपये की लागत से निर्मित इस उपकेंद्र के साथ 10 किलोमीटर लंबी 33 के.वी. विद्युत लाइन का निर्माण भी किया गया है। नवीन उपकेंद्र से तीन फीडरों के माध्यम से विद्युत आपूर्ति की जाएगी, जिनमें दो कृषि फीडर एवं एक घरेलू फीडर शामिल हैं। नवनिर्मित उपकेंद्र के प्रारंभ होने से रायसेन जिले के बिशनखेड़ी, बिजौरी, सनखेड़ी, देवराखेड़ी, आकाशखेड़ा, रामगढ़, सिरोनिया, मढुआखेड़ा एवं हिम्मतगढ़ सहित एक दर्जन से अधिक ग्रामों के कृषि एवं घरेलू उपभोक्ताओं को गुणवत्तापूर्ण एवं विश्वसनीय विद्युत आपूर्ति उपलब्ध होगी। कृषि फीडरों के माध्यम से किसानों को बेहतर विद्युत आपूर्ति मिलेगी, वहीं घरेलू उपभोक्ताओं को भी निर्बाध बिजली का लाभ प्राप्त होगा। अब तक इन ग्रामों को मेहगांव उपकेंद्र से अन्य गांवों के साथ विद्युत आपूर्ति की जाती थी। नवीन उपकेंद्र के शुरू होने से न केवल एक दर्जन से अधिक गांवों की विद्युत व्यवस्था सुदृढ़ होगी, बल्कि मेहगांव उपकेंद्र से जुड़े अन्य गांवों की विद्युत आपूर्ति की गुणवत्ता में भी उल्लेखनीय सुधार आएगा।

पंडित आशीष पचौरी को पितृशोक

● पंडित राजेन्द्र पचौरी का निधन

बैतूल। मप्र जनअभियान परिषद एवं हार्टफुलनेस संस्था से जुड़े समाजसेवी पंडित आशीष पचौरी के पिताजी 74 वर्षीय श्री राजेंद्र पचौरी जी का गुरुवार को प्रातः 11 बजे नागपुर के निजी अस्पताल में उपचार के दौरान निधन हो गया। वे पिछले लंबे समय से बीमार चल रहे थे। वे अपने पीछे धर्मपत्नी, भाई-भाभी, एक पुत्र एवं चार पुत्रिया-दामाद सहित नाती-पोतो का भरा-पूरा परिवार छोड़ गए। उनका अंतिम संस्कार शुक्रवार को सुबह 10 बजे उनके पैतृक ग्राम मछेराकलां, बनखेड़ी, तहसील पिपरिया, जिला नर्मदापुरम में विधिविधान से किया जाएगा। पंडित राजेंद्र पचौरी के निधन पर शहर के ब्राह्मण समाज के समाजिक बंधुओं, गणमान्य नागरिकों ने शोक व्यक्त करते हुए शोक संतप्त परिवार को यह दुखद घड़ी को सहन करने की शक्ति ईश्वर से प्रदान करने की कामना की है।

हनुमान डोल मंदिर परिसर में 21 पौधे लगाए गए

बैतूल। हनुमान डोल स्थित प्रसिद्ध चमत्कारी हनुमान मंदिर परिसर में मंदिर समिति द्वारा 21 पौधों का रोपण किया गया। पौधों की सुरक्षा के लिए लोहे की जाली लगाई गई है। जिन पौधों का रोपण किया गया उसमें चीकू, जाम, अनार, जामुन, आंवला, नीम आदि प्रजाति के पौधे शामिल हैं। मंदिर के पंडित विजेंद्र द्विवेदी के मंत्रोपचार के साथ हुआ पौधारोपण किया गया। इस मौके पर मंदिर समिति के पदाधिकारी धर्मेंद्र गोठी, अनिल दीक्षित, शैलेश गुबरेले के अलावा मनोज गौतम, पंडित विजेंद्र द्विवेदी, गोलू यादव,हरीश सोनकपुरिया, भीम यादव, लकी मिश्रा, शंकर चवरिया, मकडू, ललित (भयू) यादव एवं पंडरी बारस्कर भी उपस्थित थे।

जिले में पिछले 24 घंटे में औसतन 27.7 मिमी वर्षा दर्ज, अब तक औसतन 290.2 मिमी वर्षा दर्ज

बैतूल। जिले में पिछले 24 घंटे के दौरान औसतन 27.7 मिमी वर्षा दर्ज की गई। अधीक्षक, भू-अभिलेख ने बताया कि 8 जुलाई प्रातः 8 बजे से 9 जुलाई प्रातः 8 बजे तक जिले के विभिन्न वर्षामापी केंद्रों पर वर्षा रिकॉर्ड की गई। उन्होंने बताया कि बैतूल में 14.4 मिमी, घोड़ाडोंगरी में 16.0 मिमी, चिचोली में 36.0 मिमी, शाहपुर में 9.0 मिमी, मुलताई में 43.6 मिमी, प्रभात पट्टन में 21.2 मिमी, आमला में 23.0 मिमी, भैंसदेही में 23.0 मिमी, आठनेर में 45.3 मिमी तथा भीमपुर में 45.0 मिमी वर्षा दर्ज की गई है। जिले में वर्षा ऋतु 2026-27 में अब तक औसतन 290.2 मिमी वर्षा दर्ज की जा चुकी है। वहीं गत वर्ष 2025-26 में अब तक 336.4 मिमी वर्षा दर्ज हुई थी।

उल्लेखनीय है कि जिले की सामान्य औसत वर्षा 1083.9 मिमी है तथा गत वर्ष की सामान्य औसत वर्षा 1097.4 मिमी रही थी।

जेल विभाग में 10 वर्ष बाद पदोन्नति

● विभिन्न संवर्गों के अधिकारियों एवं कर्मचारियों के पदोन्नति आदेश चरणबद्ध रूप से होंगे जारी

भोपाल (नप्र)। मध्यप्रदेश शासन के पदोन्नति संबंधी निर्णय के अनुपालन में जेल विभाग में लगभग 10 वर्षों के अंतराल के बाद अधिकारियों एवं कर्मचारियों की पदोन्नति प्रक्रिया प्रारंभ कर दी गई है। जेल मुख्यालय द्वारा विभिन्न संवर्गों के पात्र अधिकारियों एवं कर्मचारियों के पदोन्नति आदेश जारी किए गए हैं। यह निर्णय विभागीय अधिकारियों एवं कर्मचारियों के मनोबल को सुदृढ़ करने के साथ-साथ प्रशासनिक दक्षता एवं कार्यकुशलता को और अधिक प्रभावी बनाएगा। जेल मुख्यालय द्वारा जारी आदेशों के अनुसार सहायक ग्रेड-1, स्टेनो टाइपिस्ट, लेखापाल, उप अधीक्षक (उद्योग), वरिष्ठ बुनाई प्रशिक्षक, वरिष्ठ बढ़ईगिरी प्रशिक्षक, दफ्तरी तथा जमादार के पदों पर पात्र अधिकारियों एवं कर्मचारियों को पदोन्नत किया गया है। पदोन्नति आदेश जारी होने के साथ ही संबंधित अधिकारियों एवं कर्मचारियों को उनके नवीन पदों के अनुरूप दायित्व सौंपने की प्रक्रिया भी प्रारंभ कर दी गई है। जेल विभाग द्वारा पदोन्नति की संपूर्ण प्रक्रिया शासन के निर्देशों के अनुरूप पारदर्शी, निष्पक्ष एवं समयबद्ध ढंग से संचालित की जा रही है। विभाग पात्र अधिकारियों एवं कर्मचारियों के पदोन्नति प्रकरणों का निरंतर परीक्षण एवं निराकरण कर रहा है। आगामी समय में अन्य पात्र अधिकारियों एवं कर्मचारियों के पदोन्नति आदेश भी चरणबद्ध रूप से जारी किए जाएंगे, ताकि प्रत्येक पात्र अधिकारी एवं कर्मचारी को समय पर पदोन्नति का लाभ मिल सके। महानिदेशक जेल श्री वरूण कपूर ने सभी पदोन्नत अधिकारियों एवं कर्मचारियों को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं देते हुए कहा कि पदोन्नति केवल अधिकार नहीं, बल्कि अधिक उत्तरदायित्व के साथ कार्य करने का अवसर भी है।

'स्वाधीनता के गान' में गूँजा वतन परस्ती का पैगाम

● वंदेमातरम् के सामूहिक जयकारों और लहराते तिरंगों के बीच गहराया देशभक्ति का रोमांच ● आरएनटीयू, एसजीएसयू और विश्वरंग की अनूठी सांस्कृतिक सौगात

भोपाल। बादल, बयार और बौछारों से गमकती गुरूवार की शाम राजधानी के आसमान पर देशभक्ति का सतरंगी इन्द्रधनुष खिला। शब्द, स्वर, लय-गतियों और देह-मुद्राओं का जादुई सम्मोहन जगाते नौनिहाल तथा युवा कलाकारों ने रंगमंच पर आज़ादी के महासमर की गाथा रच दी। ये ''स्वाधीनता के गान'' की रंगोमहक से भरी एक सुंदर सौगात थी। रबीन्द्रनाथ टैगोर विश्वविद्यालय और विश्वरंग फाउण्डेशन के संयोजन में तैयार हुई अनूठी इस प्रस्तुति को देखने शहर के कलाप्रेमियों का हुजूम रवीन्द्र भवन में उमड़ आया। हर गीत पर तालियाँ बजी, नृत्य की थिरकन जागी और भारत माता के जयकारों की गुंजार सभागार में फैल गयी। समापन पर जैसे 'वंदेमातरम्' की प्रस्तुति शुरू हुई दर्शकों के हाथों में भारत का तिरंगा लहरा उठा।

हिन्दी पत्रकारिता की दो सदी के निमित्त शब्द की सांस्कृतिक यात्रा और राष्ट्र के प्रति उसकी रचनात्मक भूमिका पर केन्द्रित समारोहों की श्रृंखला में कविता, नृत्य और संगीत का यह रूपक अभिव्यक्ति की अद्वितीय मिसाल बन गया। वरिष्ठ कवि-कथाकार संतोष चौबे की मुख्य परिकल्पना, प्रसिद्ध कथक नृत्यांगना क्षमा मालवीय का नृत्य संयोजन, संतोष कौशिक और राजू राव का संगीत तथा जाने-माने कला समीक्षक विनय उपाध्याय की धीर-गंभीर आवाज़ में बढ़त लेती वतन परस्ती की कहानी रोमांचक अहसास में बदल गयी। पुरू कथक नृत्य अकादेमी की पिचहत्तर से अधिक नृत्यांगनाओं ने अपनी मनोहारी भाव-मुद्राओं से दर्शकों का मन जीत लिया। रंगकर्मी अनूप जोशी का प्रकाशन आकल्पन, उमेश तरकसवार के संगीत संयोजन तथा आईसेक्ट स्टुडियो के तकनीकी समन्वयक ने पूरी प्रस्तुति को बेहतर प्रदर्शन में ढाला।

जब शब्द देशभक्ति बन जाएँ, जब कविता आंदोलन बन जाए और जब नृत्य बलिदान की गाथा कहे- तब इतिहास सिर्फ़ पढ़ा नहीं जाता, जिया जाता है। रबीन्द्रनाथ टैगोर विश्वविद्यालय ने ऐसा ही दृश्य रच दिया। भारतेन्दु से लेकर निराला और माखनलाल चतुर्वेदी से लेकर सुभद्रा कुमारी चौहान तक बाहर कवियों की पंक्तियाँ यहाँ केवल पढ़ी और गायी नहीं गई नृत्य और संगीत की भाषा में भी उनके गहरे आशय उभरकर सामने आए। इस सभा का संदेश था कि नई पीढ़ी को समझाना ज़रूरी है कि स्वाधीनता हमें विरासत में नहीं मिली, उसे शब्द, गीतों और बलिदानों से कमाया गया है। आज के बच्चे जब ''वीरों का कैसा हो वसंत'' पर थिरकते हैं, तो लगता है वह चेतना अब भी जीवित है।

कुलाधिपति संतोष चौबे ने अपने उद्बोधन में कहा कि यही वो समय है जब हम उन कविताओं को भी याद करें जिनकी ओजस्वी आवाजें गुलामी के अंधेरों में भारत के जन मन के लिए आत्म जागृति की अग्निशिखा बनीं। कलम के सिपाही आगे आए। स्वाधीनता के गान का यह प्रसंग शब्द की सत्ता के प्रति युवा पीढ़ी का विश्वास जगाना और उसके साधकों के प्रति सामूहिक कृतज्ञता का अवसर है।

इस अवसर पर आईसेक्ट पब्लिकेशन द्वारा आज़ादी के अमृत महोत्सव के उपलक्ष्य में प्रकाशित पुस्तक 'स्वाधीनता के गान' का लोकार्पण भी हुआ। हिन्दी के 34 कवियों की पचास से भी अधिक देशभक्ति की कविताओं का यह संग्रह साहित्यकार श्रीराम परिहार तथा रामवल्लभ आचार्य ने तैयार किया है। परामर्श संतोष चौबे और समन्वय विनय उपाध्याय का रहा। 'स्वाधीनता के गान' समारोह दरअसल रबीन्द्रनाथ टैगोर विश्वविद्यालय के कुलाधिपति की एक विशेष परियोजना की रचनात्मक परिणति है। आज़ादी के अमृत महोत्सव के निमित्त विचार आया कि आधुनिक हिंदी की कविता यात्रा को देश भक्ति के संदर्भ में गहराई से देखा-परखा और प्रस्तुत किया जाए। इस अभियान में भारतेन्दु हरिश्चन्द्र के समय का सिरा थामते हुए वीरेन्द्र मिश्र तक हिंदी की ध्वजा थामने वाले कवियों की रचनाओं का संग्रह तैयार हुआ।

ये रहे स्वाधीनता के गान...

- भारत दुर्दशा- भारतेन्दु हरिश्चन्द्र
- उरूजे कामयाबी पर- जगदम्बा प्रसाद मिश्र
- मस्तक ऊँचा रहे मही का- मैथिलीशरण गुप्त
- हिमाद्रि तुंग श्रृंग- जयशंकर प्रसाद
- ज्योति भूमि जय भारत- सुमित्रानंदन पंत
- जागो फिर एक बार- सूर्यकांत त्रिपाठी निराला
- वीरों का कैसा हो वसंत- सुभद्राकुमारी चौहान
- बढ़े चलो, बढ़े चलो- सोहनलाल द्विवेदी
- जाग तुझको दूर जाना है- महादेवी वर्मा
- मेरे नगपति, मेरे विशाल- रामधारी सिंह दिनकर
- चाह नहीं मैं सुरबाला- माखनलाल चतुर्वेदी
- वंदेमातरम्- बंकिमचन्द्र चटर्जी

पत्रकार कल्याण परिषद का अंतरसंभागीय सम्मेलन 12 जुलाई को हरदा में

बैतूल सहित कई जिलों के पत्रकार होंगे शामिल

बैतूल/भौंरा। पत्रकार कल्याण परिषद द्वारा आगामी 12 जुलाई रविवार को हरदा स्थित द रॉयल पाम रिसॉर्ट एंड गार्डन में अंतरसंभागीय सम्मेलन आयोजित किया जाएगा। सम्मेलन का समय प्रातः 11 बजे से दोपहर 3 बजे तक निर्धारित किया गया है। कार्यक्रम में हरदा, नर्मदापुरम, बैतूल, खंडवा, सिवनी एवं देवास सहित विभिन्न जिलों के पत्रकारों को आमंत्रित किया गया है। पत्रकार कल्याण परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष वेदान्ती त्रिपाठी के मुख्य आतिथ्य में आयोजित होने वाले इस सम्मेलन में पत्रकार हितों से जुड़े विभिन्न विषयों पर मंथन किया जाएगा। संगठन की ओर से पत्रकार सुरक्षा कानून लागू करने, पत्रकारों के उत्पीडऩ पर रोक लगाने तथा पत्रकारों के विरुद्ध झूठे मुकदमों पर प्रभावी कार्रवाई जैसे मुद्दों को प्रमुखता से उठाया जाएगा। पत्रकार कल्याण परिषद के राष्ट्रीय प्रभारी सैयद महमूद अली चिश्ती ने सभी पत्रकार साथियों से सम्मेलन में अधिक से अधिक संख्या में शामिल होने की अपील की है। उन्होंने कहा कि यह सम्मेलन पत्रकारों की एकजुटता, अधिकारों और सुरक्षा से जुड़े महत्वपूर्ण मुद्दों पर विचार-विमर्श का सशक्त मंच बनेगा। उन्होंने कहा कि पत्रकारों की सक्रिय भागीदारी से संगठन और अधिक मजबूत होगा तथा पत्रकार हितों की आवाज को प्रभावी ढंग से उठाया जा सकेगा। पत्रकार कल्याण परिषद के बैतूल जिलाध्यक्ष कैलाश प्रसाद अग्निहोत्री ने बताया कि सम्मेलन का उद्देश्य पत्रकारों को एक मंच पर संगठित कर उनके अधिकारों, सुरक्षा और सम्मान से जुड़े विषयों पर व्यापक चर्चा करना है। उन्होंने बैतूल जिले के सभी पत्रकारों से सम्मेलन में अधिक से अधिक संख्या में शामिल होने की अपील करते हुए कहा कि ऐसे आयोजन पत्रकार एकता को मजबूत करने के साथ-साथ संगठन को और अधिक सशक्त बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। कार्यक्रम में संगठन के संभागों एवं जिलों के पदाधिकारी भी उपस्थित रहेंगे।

सेफ क्लिक अभियान में उत्कृष्ट प्रदर्शन पर मिला राज्य स्तरीय सम्मान

बैतूल। मध्यप्रदेश पुलिस के प्रदेशव्यापी सेफ क्लिक 2.0 साइबर सुरक्षा जनजागरूकता अभियान में उत्कृष्ट प्रदर्शन के लिए बैतूल पुलिस को सम्मानित किया गया है। बुधवार को भोपाल में आयोजित राज्य स्तरीय समारोह में बैतूल पुलिस को मध्यम श्रेणी के जिलों में दूसरा स्थान मिला। दतिया ने प्रथम स्थान हासिल किया, जबकि मेट्रो श्रेणी में भोपाल और इंदौर पुलिस को भी सम्मानित किया गया। पुलिस मुख्यालय द्वारा आयोजित इस सम्मान समारोह में पुलिस महानिदेशक कैलाश मकवाणा मुख्य अतिथि थे। एडीजी (साइबर) साई मनोहर और पुलिस आयुक्त भोपाल संजय कुमार सहित अन्य वरिष्ठ अधिकारियों ने साइबर अपराधों की रोकथाम में जनजागरूकता और समय पर शिकायत दर्ज कराने के महत्व पर जोर दिया। बैतूल की ओर से डीएसपी (अजाक) शैफा हाशमी और साइबर सेल के आरक्षक दीपेंद्र सिंह ने प्रशस्ति-पत्र एवं सम्मान ग्रहण किया। पुलिस अधीक्षक वीरेंद्र जैन प्रशासनिक व्यस्तताओं के कारण समारोह में उपस्थित नहीं हो सके। बैतूल पुलिस ने जिले के सभी थाना और चौकी क्षेत्रों में व्यापक जनजागरूकता अभियान चलाया। इसके तहत स्कूलों, कॉलेजों, बैंकों, शासकीय कार्यालयों, ग्राम पंचायतों, बाजारों और अन्य सार्वजनिक स्थानों पर लगातार जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किए गए। अभियान के दौरान साइबर सेफ्टी वॉक, साइबर क्विज, साइबर सुरक्षा शपथ, साइबर प्रदर्शनी, जनसंवाद और रैलियों जैसे विभिन्न नवाचारों का उपयोग किया गया। इन गतिविधियों के माध्यम से समाज के अलग-अलग वर्गों तक साइबर सुरक्षा का संदेश प्रभावी ढंग से पहुंचाया गया।

300 से ज्यादा सोशल मीडिया पोस्ट किए- सोशल मीडिया पर भी बैतूल पुलिस ने सक्रिय भूमिका निभाई। 300 से अधिक जागरूकता पोस्ट, वीडियो और रील्स जारी किए गए, जिनके जरिए लगभग 22.99 लाख (करीब 23 लाख) लोगों तक साइबर सुरक्षा का संदेश पहुंचा। इसी प्रभावी जनसंपर्क और जनभागीदारी के आधार पर बैतूल पुलिस को यह प्रदेश स्तरीय सम्मान मिला। पुलिस अधीक्षक वीरेंद्र जैन ने इस उपलब्धि का श्रेय जिले के सभी राजपत्रित अधिकारियों, थाना एवं चौकी प्रभारियों, पुलिस अधिकारियों-कर्मचारियों, साइबर सेल, मीडिया प्रतिनिधियों, स्वयंसेवकों, शिक्षकों, विद्यार्थियों, सामाजिक संगठनों और जागरूक नागरिकों को दिया। जिला पुलिस ने नागरिकों से अपील की है कि किसी भी प्रकार की साइबर ठगी होने पर तुरंत साइबर हेल्पलाइन 1930 पर कॉल करें।

तहसील का घेराव करने जा रहे कांग्रेस कार्यकर्ताओं पर चली वाटर कैनन

किसानों, नशे, भ्रष्टाचार समेत 9 सूत्रीय मांगों को लेकर था प्रदर्शन

बैतूल। चिचोली में गुरुवार को कांग्रेस ने किसानों की समस्याओं, क्षेत्र में बढ़ते नशे के कारोबार और नगर परिषद में कथित भ्रष्टाचार समेत 9 सूत्रीय मांगों को लेकर प्रदर्शन किया।

कांग्रेस कार्यकर्ताओं ने तहसील कार्यालय का घेराव करने का प्रयास किया। इस दौरान पुलिस ने उन्हें रोकने के लिए वाटर कैनन का इस्तेमाल किया। बाद में राज्यपाल के नाम संबोधित ज्ञापन एसडीएम को सौंपा गया। प्रदर्शन की शुरुआत बाजार चौक पर सभा से हुई। सभा में कांग्रेस नेताओं ने किसानों की समस्याओं, खाद-बीज वितरण व्यवस्था, नगर परिषद में कथित भ्रष्टाचार, बढ़ते नशे के कारोबार, बिजली कटौती, वन भूमि के पट्टों और पेट्रोल में एथेनॉल मिश्रण जैसे मुद्दों को उठाया। इसके बाद बस स्टैंड पर नुक्कड़ सभा हुई और फिर बाजार चौक से जय स्तंभ चौक तक रैली निकाली गई। रैली जब तहसील कार्यालय पहुंची तो पुलिस ने बैरिकेड लगाकर प्रदर्शनकारियों को रोक दिया। कुछ कार्यकर्ताओं ने बैरिकेड पार करने की कोशिश की। इसके बाद पुलिस ने स्थिति नियंत्रित करने के लिए वाटर कैनन का उपयोग किया। इस दौरान पुलिस और प्रदर्शनकारियों के बीच धक्का-मुक्की और नारेबाजी भी हुई। प्रदर्शन का नेतृत्व जिला कांग्रेस अध्यक्ष निलय डागा, विधानसभा प्रभारी हर्षवर्धन बघेल, ब्लॉक कांग्रेस ग्रामीण अध्यक्ष सुभाष यादव, शहर कांग्रेस अध्यक्ष राहुल पटेल, राजेंद्र जायसवाल, बटनू पटेल, अनिल भुसारी, पूर्व विधायक ब्रह्मा भलावी, रमेश ककौडिया, राहुल उइके, एनएसयूआई प्रदेश सचिव हर्ष भुसारी और रूपेश आर्य सहित कई कांग्रेस नेताओं ने किया।

इन मुद्दों को लेकर प्रदर्शन - कांग्रेस नेताओं ने एसडीएम के माध्यम से राज्यपाल के नाम 9 सूत्रीय ज्ञापन सौंपा। ज्ञापन में किसानों को ई-टोकन प्रणाली से खाद-बीज वितरण में हो रही परेशानी दूर करने, एमडी ड्रग्स और अवैध शराब के कारोबार पर कार्रवाई, अयोध्या स्थित श्रीराम लला मंदिर के दान पात्र चोरी मामले में दोषियों पर सख्त कार्रवाई, नगर परिषद चिचोली में कथित भ्रष्टाचार की निष्पक्ष जांच, नीट परीक्षा पेपर लीक मामले में कार्रवाई, मुख्यमंत्री और उनके परिवार की कथित भूमि खरीद की न्यायिक जांच, वन ग्रामों के हितग्राहियों को पट्टे देने, पेट्रोल में एथेनॉल मिश्रण की नीति पर पुनर्विचार तथा बिजली कटौती रोकने और बढ़े हुए बिजली बिलों में राहत देने की मांग की गई। कांग्रेस नेताओं ने कहा कि यदि मांगों पर जल्द कार्रवाई नहीं हुई तो आंदोलन को और तेज किया जाएगा। वहीं प्रशासन ने ज्ञापन लेकर मांगों को शासन तक पहुंचाने का आश्वासन दिया।

कोहेफिजा में स्कूल वैन का एक्सीडेंट, महिला स्टाफ घायल

● भोपाल गर्ल्स स्कूल के 6 बच्चे सुरक्षित निकाले गए, दूसरे वाहन को बचाने में खोया कंट्रोल

भोपाल (नप्र)। भोपाल के कोहेफिजा थाना क्षेत्र में गुरुवार सुबह भोपाल गर्ल्स स्कूल की एक वैन हादसे का शिकार हो गई। पंचवटी से बच्चों को लेकर जा रही वैन कोहेफिजा थाने के सामने फ्लाईओवर पर अनियंत्रित होकर बिजली के खंभे से टकरा गई। हादसे में वैन में सवार 6 बच्चे सुरक्षित रहे, जबकि आगे की सीट पर बैठी स्कूल की एक महिला स्टाफ सदस्य के सिर में चोट आई है।

राहगीरों ने की मदद - हादसे के बाद मौके पर अफरा-तफरी मच गई। राहगीरों ने तुरंत बच्चों को वैन से बाहर निकाला और घायल महिला को अस्पताल पहुंचाया। सूचना मिलते ही पुलिस भी मौके पर पहुंच गई। बच्चों को दूसरी गाड़ी से सुरक्षित उनके गंतव्य के लिए रवाना कर दिया गया।

बड़े वाहन से बचने के दौरान हुआ हादसा - कोहेफिजा थाना प्रभारी केजी शुक्ला ने बताया कि शुरुआती जांच में सामने आया है कि वैन के सामने अचानक एक बड़ा वाहन आ गया था। उसे बचाने की कोशिश में चालक ने वाहन से नियंत्रण खो दिया और वैन बिजली के खंभे से टकरा गई।

ब्रेक खराब होने की भी आशंका - पुलिस के मुताबिक, वैन के ब्रेक में तकनीकी खराबी होने की भी आशंका है। चालक ने बड़ा हादसा टालने के लिए वैन को खंभे से टकराकर रोकने की कोशिश की।

संक्षिप्त समाचार

लंबित पेंशन प्रकरणों का प्राथमिकता से करें निराकरण : कलेक्टर डॉ. सोनवणे

बैतूल (निप्र)। कलेक्टर डॉ सौरभ संजय सोनवणे ने मंगलवार को कलेक्ट्रेट सभाकक्ष में जिले के विभिन्न विभागों में लंबित पेंशन प्रकरणों की विस्तृत समीक्षा की। बैठक में उन्होंने विभागवार लंबित प्रकरणों की स्थिति, उनके निराकरण की प्रगति तथा लंबित रहने के कारणों की जानकारी ली। कलेक्टर डॉ. सोनवणे ने समीक्षा के दौरान स्वास्थ्य विभाग में लंबित पेंशन प्रकरणों पर नाराजगी व्यक्त की। उन्होंने संबंधित बाबू को कारण बताओ नोटिस जारी करने, एक माह का वेतन रोकने तथा स्थापना शाखा को चेंज करने के निर्देश दिए। इसके अलावा बैतूल जनपद में लंबित पेंशन प्रकरण पर सीईओ को कारण बताओ सूचना पत्र जारी किए जाने के निर्देश दिए। साथ ही उन्होंने सभी विभागों को निर्देशित किया कि पेंशन प्रकरणों का समय-सीमा में निराकरण सुनिश्चित करें, ताकि हितग्राहियों को अनावश्यक परेशानी का सामना न करना पड़े। कलेक्टर ने कहा कि जिन प्रकरणों में विभागीय स्तर पर किसी प्रकार की समस्या आ रही है, उनका समन्वय स्थापित कर शीघ्र समाधान किया जाए। बैठक में अपर कलेक्टर श्रीमती वंदना जाट, संयुक्त कलेक्टर श्री मकसूद अहमद सहित विभागीय अधिकारी, कर्मचारी उपस्थित थे।

फरार आरोपियों की गिरफ्तारी के लिये इनाम घोषित

हरदा (निप्र)। पुलिस अधीक्षक श्री शशांक ने दो प्रकरणों में फरार आरोपियों की गिरफ्तारी हेतु इनाम घोषित किये है। उन्होने थाना टिमरनी के अपराध क्रमांक 180/2026 धारा 326 (फ) बी.एन.एस. में फरार आरोपी मुन्नाखान पिता गफ्फार खान निवासी पोखरनी तथा थाना हंडिया के अपराध क्रमांक 245/2026 धारा 137(2) बी.एन.एस. में फरार अज्ञात आरोपी की तलाश एवं पतारसी के लिये 3-3 हजार रूपये का इनाम घोषित किया है। जारी उद्घोषणा में कहा गया है कि जो व्यक्ति इन आरोपियों को गिरफ्तार करेगा या करवाएगा या ऐसी सूचना देगा, जिसके आधार पर आरोपी की गिरफ्तारी संभव हो सके, ऐसे सूचनाकर्ता को आरोपी की गिरफ्तारी के लिये इनाम की राशि से पुरस्कृत किया जाएगा। यदि सूचनाकर्ता चाहेगा तो उनका नाम गोपनीय रखा जाएगा। पुरस्कार वितरण के संबंध में अंतिम निर्णय पुलिस अधीक्षक जिला हरदा का मान्य होगा।

स्वास्थ्य राज्यमंत्री पटेल ने की उदयपुरा विधानसभा में चल रहे विकास कार्यो समीक्षा

रायसेन (निप्र)। स्वास्थ्य राज्यमंत्री श्री नरेन्द्र शिवाजी पटेल ने मंगलवार को बरेली स्थित तहसील कार्यालय में आयोजित बैठक में विभिन्न विभागों की जनकल्याणकारी योजनाओं के क्रियान्वयन तथा जनहितैषी विकास कार्यो की विस्तृत समीक्षा कर अधिकारियों को दिशा-निर्देश दिए। उन्होंने उदयपुरा विधानसभा क्षेत्र में विभागवार संचालित योजनाओं तथा निर्माण कार्यो की समीक्षा करते हुए अधिकारियों से कहा कि योजनाओं के क्रियान्वयन में किसी भी प्रकार की लापरवाही ना हो, सरकार की योजनाओं का लाभ लोगों तक सुगमता से पहुंचाना सुनिश्चित करें। साथ ही निर्माण कार्यो को गुणवत्ता के साथ समय पर पूर्ण कराएं। स्वास्थ्य राज्यमंत्री श्री पटेल ने पंचायत एवं ग्रामीण विकास विभाग, स्वास्थ्य विभाग, कृषि विभाग, लोक निर्माण विभाग, ग्रामीण यांत्रिकी सेवा सहित अन्य विभागों के विधानसभा क्षेत्र में संचालित कार्यो तथा योजनाओं की समीक्षा की। बैठक में एसडीएम श्री अंकित जैन सहित अन्य अधिकारी उपस्थित रहे।

पिछड़ा वर्ग विभाग से संबंधित दो आवेदनों का तत्काल निराकरण

विदिशा (निप्र)। कलेक्टर श्री अंशुल गुप्ता ने जनसुनवाई में आज पिछड़ा वर्ग विभाग से जुड़े दो आवेदनों का त्वरित निराकरण कर संवेदनशील प्रशासन का उदाहरण प्रस्तुत किया है। रामकली मीणा ने ओबीसी कन्या छात्रावास में प्रवेश के लिए आवेदन दिया था। कलेक्टर के निर्देश पर संबंधित अधिकारियों ने तत्काल कार्रवाई करते हुए छात्रा का प्रवेश सुनिश्चित कराया, जिससे उसकी शिक्षा जारी रखने का मार्ग प्रशस्त हुआ वहीं मोनिका धाकड़ ने आर्थिक सहायता के लिए आवेदन प्रस्तुत किया। इस पर भी मौके पर ही आवश्यक प्रक्रिया पूरी कर सहायता उपलब्ध कराने की कार्रवाई प्रारंभ की गई। दोनों आवेदनों के त्वरित समाधान से हितग्राहियों को राहत मिली और जनसुनवाई के माध्यम से आमजन की समस्याओं के प्रभावी एवं समयबद्ध निराकरण की प्रशासनिक प्रतिबद्धता स्पष्ट हुई।

ग्राम स्वास्थ्य एवं पोषण दिवस पर शिविर लगाकर किया गया 1291 बच्चों का टीकाकरण

सीहोर (निप्र)। स्वास्थ्य विभाग द्वारा जिलेभर में विभिन्न स्वास्थ्य संस्थाओं एवं अनेक स्थानों पर प्रत्येक मंगलवार एवं शुक्रवार को शिविर लगाकर गर्भवती महिलाओं एवं बच्चों के विभिन्न बीमारियों से बचाव के लिए टीकाकरण किया जा रहा है।

वज्रपात से सुरक्षा

स्कूलों में एक साथ गूंजा जागरूकता का संदेश

बच्चों को सिखाए आकाशीय बिजली से बचाव के गुर

विदिशा (निप्र)। वर्तमान वर्षा ऋतु के दृष्टिगत आकाशीय बिजली (तड़ित) गिरने की घटनाओं से बच्चों को सुरक्षित रखने के लिए विदिशा जिला प्रशासन बेहद गंभीर है। कलेक्टर अंशुल गुप्ता एवं अनुविभागीय अधिकारी (एसडीएम) नटेरन अजय प्रताप सिंह पटेल के कुशल निर्देशन में मंगलवार को ब्लॉक नटेरन के प्रत्येक स्कूल में एक साथ सुबह 11:00 बजे विशेष जागरूकता अभियान का आयोजन किया गया। इस महाअभियान के तहत शासकीय और अशासकीय (प्राथमिक, माध्यमिक, हाई स्कूल व हायर सेकेंडरी) स्कूलों के बच्चों को आकाशीय बिजली और वज्रपात से बचने के उपाय सिखाए गए। अधिकारियों के निर्देशानुसार , आपदा प्रबंधन से संबंधित विशेष पत्रक/पोस्टर ब्लॉक के सभी स्कूलों में प्रमुखता से चस्पा कराए गए हैं और बच्चों के बीच भी इनका वितरण किया गया है ताकि वे घर-परिवार और समाज को भी जागरूक कर सकें।

सांदीपनि स्कूल में बीआरसी ने बच्चों को दी लाइव ट्रेनिंग : इस महाअभियान के अंतर्गत विकासखंड स्रोत समन्वयक (बीआरसी) ईश्वर शर्मा ने सांदीपनि स्कूल कैंपस-2 में पहुंचकर बच्चों को आपदा प्रबंधन के व्यावहारिक तरीके बताए। उन्होंने बच्चों को समझाया कि बिजली चमकने या कड़कने के दौरान घबराने की बजाय सतर्क रहना जरूरी है। बीआरसी शर्मा ने स्कूल परिसर के भीतर और बाहर रहने के दौरान बरती जाने वाली सावधानियों पर विस्तार से प्रकाश डाला।

विभाग द्वारा जारी: 'क्या करें' और 'क्या न करें' के मुख्य बिंदु : शिक्षकों और बच्चों को आपदा प्रबंधन प्राधिकरण तथा होमगार्ड एवं स्ङश्चत्र्ङ्म जिला विदिशा द्वारा जारी निम्नलिखित महत्वपूर्ण गाइडलाइंस का पालन करने की समझाइश दी गई।

यदि आप स्कूल/इमारत के अंदर हैं (सुरक्षा उपाय) - बिजली चमकने या कड़कने के दौरान खिड़कियों, दरवाजों, बरामदों और खुली छतों से तुरंत दूर हट जाएं। पानी के स्रोतों जैसे नल, सिंक, वॉशबेसिन या प्लंबिंग सिस्टम (पाइप आदि) को छूने से बचें।

टीवी, कंप्यूटर, प्रिंटर आदि विद्युत उपकरणों के प्लग तुरंत निकाल दें। कॉर्ड (तार) वाले लैंडलाइन फोन का इस्तेमाल बिल्कुल न करें।

यदि आप बाहर या खुले मैदान में हैं - खेल के मैदान या रास्ते में सबसे ऊंचे या अकेले पेड़ों के नीचे कतई शरण न लें, क्योंकि ये बिजली को अपनी ओर आकर्षित करते हैं। सुरक्षित स्थान का चयन करते हुए यथाशीघ्र किसी पक्के मकान या सुरक्षित इमारत के अंदर जाएं। यदि पक्की इमारत न हो, तो किसी नीची जगह या गड्ढे में झुककर बैठ जाएं। लोहे की छड़ें, साइकिल, धातु की बाड़ या लोहे की ताड़ी वाले छातों से तुरंत दूर हट जाएं। नदी, तालाब, झील या जलभराव वाले क्षेत्रों से तुरंत बाहर निकलें।

आवागमन (वाहन) के दौरान सावधानी - बस या कार जैसे मेटल (लोहे) की बंद छत वाले वाहनों के अंदर बैठना पूरी तरह सुरक्षित है, बशर्ते उसकी खिड़कियां पूरी तरह बंद हों। बाइक, साइकिल, ऑटो या ट्रैक्टर जैसे बिना छत वाले वाहनों से यात्रा करना जानलेवा हो सकता है, तुरंत किसी पक्के मकान में शरण लें। आपातकालीन विशेष मुद्रा - यदि कोई बच्चा या व्यक्ति खुले मैदान में फंस गया हो और आसपास कोई पक्की इमारत न हो, तो वह जमीन पर उकड़ू होकर बैठ जाए, अपने सिर को घुटनों के बीच रख ले और कानों को हाथों से मजबूती से बंद कर ले। ध्यान रहे, जमीन पर लेटना बिल्कुल नहीं है।

विशेष नोट - बिजली कड़कने की आवाज बंद होने के कम से कम 30 मिनट बाद तक सभी बच्चे और शिक्षक सुरक्षित स्थान पर ही रहें। किसी भी प्रकार की आपदा या वज्रपात की तुरंत जानकारी के लिए प्रशासन द्वारा **दामिनी ऐप डाउनलोड करने की सलाह दी गई है। साथ ही आपातकालीन हेल्पलाइन नंबर 1070 और 1079 पर कॉल कर मदद ली जा सकती है।

इस वृहद आयोजन को सफल बनाने में संकुल प्राचार्य, जनशिक्षक, संस्था प्रमुखों व समस्त शिक्षक स्टाफ का विशेष योगदान रहा।

अनुकंपा नियुक्ति के लंबित प्रकरणों का शीघ्र निराकरण करें : कलेक्टर सोमेश मिश्रा

दस्तावेजों की चेकलिस्ट तैयार कर प्रक्रिया को बनाया जाए सरल, पात्र आवेदकों को जल्द मिले नियुक्ति

नर्मदापुरम (निप्र)। कलेक्टर श्री सोमेश मिश्रा ने कलेक्ट्रेट सभाकक्ष में आयोजित समीक्षा बैठक में अनुकंपा नियुक्ति के लंबित प्रकरणों की विस्तृत समीक्षा करते हुए संबंधित अधिकारियों को सभी प्रकरणों का शीघ्र निराकरण सुनिश्चित करने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि सेवा के दौरान असमय निधन होने वाले शासकीय सेवकों के आश्रितों को समय पर अनुकंपा नियुक्ति उपलब्ध कराना प्रशासन की महत्वपूर्ण जिम्मेदारी है और इसमें किसी भी प्रकार की अनावश्यक देरी नहीं होनी चाहिए। बैठक में जानकारी दी गई कि जिले में वर्तमान में दस्तावेजों की कमी के कारण अनुकंपा नियुक्ति के 56 प्रकरण लंबित हैं। इस पर कलेक्टर श्री मिश्रा ने संबंधित विभागों को निर्देशित किया कि लंबित मामलों में आवश्यक दस्तावेजों की पूर्ति शीघ्र कराते हुए पात्र आवेदकों को जल्द से जल्द नियुक्ति प्रदान करने की कार्रवाई सुनिश्चित की जाए। कलेक्टर श्री मिश्रा ने अनुकंपा नियुक्ति की प्रक्रिया को अधिक सरल, पारदर्शी एवं सुगम बनाने के लिए आवश्यक दस्तावेजों की चेकलिस्ट तैयार करने के निर्देश भी दिए। उन्होंने कहा कि स्पष्ट चेकलिस्ट उपलब्ध होने से आवेदकों को आवश्यक दस्तावेजों की जानकारी पहले से मिल सकेगी तथा कागजी औपचारिकताओं के कारण होने वाली अनावश्यक देरी से बचा जा सकेगा। उन्होंने सभी संबंधित अधिकारियों को निर्देश दिए कि प्रत्येक लंबित प्रकरण की नियमित समीक्षा करते हुए कमियों का त्वरित निराकरण करें और पात्र आवेदकों को शीघ्र नियुक्ति पत्र उपलब्ध कराना सुनिश्चित करें। कलेक्टर ने कहा कि संवेदनशीलता एवं प्राथमिकता के साथ कार्य करते हुए अनुकंपा नियुक्ति के प्रकरणों का समयबद्ध निराकरण किया जाए, ताकि प्रभावित परिवारों को शीघ्र राहत मिल सके।

दीक्षारंभ समारोह में नवप्रवेशित विद्यार्थियों का हुआ आत्मीय स्वागत

विदिशा (निप्र)। प्रधानमंत्री कॉलेज ऑफ एक्सीलेंस, शासकीय महाविद्यालय, विदिशा में शैक्षणिक सत्र 2026-27 के नवप्रवेशित विद्यार्थियों के स्वागत एवं मार्गदर्शन के उद्देश्य से दीक्षारंभ समारोह का भव्य आयोजन प्राचार्य डॉ. वनिता बाजपेई के मार्गदर्शन में संपन्न हुआ। समारोह का उद्देश्य विद्यार्थियों को महाविद्यालय की शैक्षणिक व्यवस्था, राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020, छात्र हितग्राही योजनाओं तथा उपलब्ध सुविधाओं और विविध गतिविधियों से परिचित कराते हुए उन्हें उच्च शिक्षा के नए वातावरण के लिए प्रेरित एवं तैयार करना था। कार्यक्रम का शुभारंभ माँ सरस्वती के चित्र पर माल्यार्पण एवं दीप प्रज्ज्वलन के साथ हुआ।

इसके पश्चात नवप्रवेशित विद्यार्थियों का आत्मीय स्वागत किया गया। विद्यार्थियों को महाविद्यालय के गौरवशाली इतिहास, उल्लेखनीय उपलब्धियों, समृद्ध पुस्तकालय, आधुनिक प्रयोगशालाओं, खेल सुविधाओं, आईटी अवसंरचना, ई-लाइब्रेरी सहित उपलब्ध शैक्षणिक संसाधनों की विस्तृत जानकारी प्रदान की गई। अपने प्रेरक उद्बोधन में प्राचार्य डॉ. वनिता बाजपेई ने विद्यार्थियों को उच्च शिक्षा विभाग के उद्देश्यों, महाविद्यालय की कार्यप्रणाली तथा भारतीय ज्ञान परंपरा के महत्व से अवगत कराया। उन्होंने विद्यार्थियों से अनुशासन, नियमित अध्ययन, नैतिक मूल्यों एवं सकारात्मक सोच के साथ अपने शैक्षणिक जीवन को आगे बढ़ाने का आह्वान किया। उन्होंने कहा कि महाविद्यालय केवल डिग्री प्राप्त करने का माध्यम नहीं, बल्कि व्यक्तित्व निर्माण, नेतृत्व क्षमता विकसित करने और समाज के प्रति जिम्मेदार नागरिक बनने का सशक्त मंच है। समारोह में विद्यार्थियों को राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 (NEP-2020) के प्रमुख प्रावधानों, अकादमिक बैंक ऑफ क्रेडिट , विषय चयन प्रक्रिया, बहुविषयक शिक्षा, कौशल विकास, इंटर्नशिप तथा रोजगारोन्मुखी अवसरों की विस्तृत जानकारी दी गई।

साथ ही पोस्ट मैट्रिक छात्रवृत्ति, गाँव की बेटी योजना, प्रतिभा किरण योजना, मुख्यमंत्री मेधावी विद्यार्थी योजना, अल्पसंख्यक छात्रवृत्ति एवं दिव्यांग छात्रवृत्ति सहित विभिन्न छात्र हितग्राही योजनाओं के बारे में विस्तार से बताया गया, ताकि अधिक से अधिक विद्यार्थी इन योजनाओं का लाभ प्राप्त कर सकें।

सभी एसडीएम मूंग उपार्जन केंद्रों का सतत निरीक्षण कर व्यवस्थाओं का जायज़ा ले: कलेक्टर सोमेश मिश्रा

- जिले में क्षतिग्रस्त सड़कों की मरम्मतीकरण का कार्य शीघ्र पूरा किया जाए संभावित बाढ़ की स्थिति पर आपदा प्रबंधन दल सतत निगरानी रखें निर्देश टीएल में आए पत्रों का समयसीमा में निराकरण करने के दिए निर्देश

नर्मदापुरम (निप्र)। कलेक्टर श्री सोमेश मिश्रा ने आयोजित समय अवधि पत्रों की समीक्षा बैठक में सभी विभागीय अधिकारियों को मुख्यमंत्री हेल्पलाइन के लंबित प्रकरणों का त्वरित, गुणवत्तापूर्ण एवं संतोषजनक निराकरण सुनिश्चित करने के निर्देश दिए। उन्होंने शासन की जनकल्याणकारी योजनाओं के प्रभावी, पारदर्शी एवं समयबद्ध क्रियान्वयन पर विशेष रूप से फोकस करने के निर्देश देते हुए कहा कि अधिकारी जिम्मेदारीपूर्वक कार्य करें।

बैठक में कलेक्टर श्री मिश्रा ने सभी अनुविभागीय अधिकारियों (एसडीएम) एवं तहसीलदारों को मूंग उपार्जन केंद्रों का नियमित निरीक्षण करने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि अधिकारी स्वयं उपार्जन केंद्रों पर पहुंचकर किसानों से संवाद करें, उनकी समस्याओं को समझें तथा उनका मौके पर ही निराकरण सुनिश्चित करें। टी.एल. बैठक के दौरान कलेक्टर ने निर्देशित किया कि सभी मूंग उपार्जन केंद्रों पर किसानों के लिए आवश्यक मूलभूत सुविधाओं के साथ तौल कांटा, सर्वेयर, बारदाने (बोरे) एवं अन्य आवश्यक व्यवस्थाएं अनिवार्य रूप से उपलब्ध रहें, ताकि किसानों को उपार्जन प्रक्रिया के दौरान किसी प्रकार की असुविधा का सामना न करना पड़े। उन्होंने जिले के सभी पात्र किसानों का फसल बीमा सुनिश्चित कराने के निर्देश देते हुए अधिकारियों को बीमा कंपनियों के साथ बेहतर समन्वय स्थापित करने को कहा। कलेक्टर ने स्पष्ट निर्देश दिए कि फसल क्षति की स्थिति में किसी भी किसान का बीमा दावा तकनीकी अथवा अन्य कारणों से निरस्त न हो तथा सभी पात्र किसानों को समय पर बीमा लाभ प्राप्त हो।

बैठक में जिले की क्षतिग्रस्त सड़कों की स्थिति की समीक्षा करते हुए कलेक्टर ने लोक निर्माण विभाग एवं मध्यप्रदेश सड़क विकास निगम के अधिकारियों को गड्ढों की तत्काल मरम्मत एवं सड़क सुधार कार्य शीघ्र प्रारंभ करने के निर्देश दिए। उन्होंने सड़कों पर घूम रहे आवारा पशुओं को पकड़कर कांजी हाउस अथवा संबंधित गौशालाओं में भेजने तथा पशुपालकों द्वारा पशुओं को खुला छोड़ने की स्थिति में नियमानुसार जुर्माने की सख्त कार्रवाई करने के निर्देश भी सभी एसडीएम को दिए। मानसून के दौरान संभावित बाढ़ की स्थिति को देखते हुए कलेक्टर ने सभी संबंधित विभागों को सतर्क एवं सक्रिय रहने के निर्देश दिए। उन्होंने निचले क्षेत्रों की निरंतर निगरानी, आवश्यक सुरक्षा प्रबंध सुनिश्चित करने तथा आपदा प्रबंधन दल द्वारा मॉक ड्रिल आयोजित कर आपातकालीन परिस्थितियों में त्वरित प्रतिक्रिया क्षमता का परीक्षण करने के निर्देश दिए। साथ ही आमजन की सहायता के लिए संचालित 24म7 बाढ़ हेल्पलाइन की सक्रियता एवं कार्यप्रणाली की नियमित जांच सुनिश्चित करने को कहा।

बैठक में जिला पंचायत के मुख्य कार्यपालन अधिकारी श्री हिमांशु जैन, अपर कलेक्टर श्री राजेश शुक्ला, अपर कलेक्टर श्री अनिल जैन, संयुक्त कलेक्टर श्री देवेंद्र प्रताप सिंह सहित विभिन्न विभागों के अधिकारी उपस्थित रहे।

ग्रीष्मकालीन फसलों की बौनी बनी किसानों के लिए मुनाफे की कुंजी

विदिशा (निप्र)। कलेक्टर श्री अंशुल गुप्ता के निर्देशन में जिले में कृषि नवाचारों और फसल विविधीकरण को बढ़ावा देने के प्रयास लगातार सफल हो रहे हैं। इन प्रयासों का सकारात्मक परिणाम अब किसानों की आय में स्पष्ट रूप से दिखाई देने लगा है। विकासखंड नटेरन की ग्राम पंचायत साढ़ेर के प्रगतिशील कृषक श्री वीरेंद्र सिंह जाट ने ग्रीष्मकालीन (जायद) फसलों में फसल विविधीकरण अपनाकर यह साबित कर दिया कि सही फसल चयन, वैज्ञानिक सलाह और आधुनिक तकनीकों के माध्यम से कम लागत में भी अधिक लाभ अर्जित किया जा सकता है। विगत वर्षों से श्री जाट ने ग्रीष्मकालीन मूंग की खेती करते आ रहे थे, लेकिन पिछले दो वर्षों में उत्पादन में लगातार गिरावट आने लगी। ऐसे में कृषि विभाग के क्षेत्रीय कृषि विस्तार अधिकारी श्री अनिल बघेल ने नियमित क्षेत्र भ्रमण कर उन्हें ग्रीष्मकालीन उड़द की उन्नत किस्म आईपीयू-13-1 (IPU-13-1) की खेती करने की सलाह दी। विभाग द्वारा एक हेक्टेयर क्षेत्र के लिए उन्नत बीज भी उपलब्ध कराया गया।

जिला चिकित्सालय में अत्याधुनिक फेको तकनीक से निःशुल्क मोतियाबिंद सर्जरी शुरू

अब जिले में ही मिलेगी महानगरों जैसी नेत्र चिकित्सा सुविधा

विदिशा (निप्र)। विदिशा जिले के नागरिकों को आधुनिक एवं गुणवत्तापूर्ण स्वास्थ्य सेवाएं उपलब्ध कराने की दिशा में जिला चिकित्सालय विदिशा ने एक और महत्वपूर्ण उपलब्धि हासिल की है। अब अस्पताल में अत्याधुनिक फेको तकनीक से मोतियाबिंद की निःशुल्क सर्जरी प्रारंभ कर दी गई है। इस नई सुविधा के शुरू होने से अब मरीजों को आधुनिक मोतियाबिंद ऑपरेशन के लिए भोपाल, इंदौर या अन्य बड़े शहरों का रुख नहीं करना पड़ेगा, बल्कि उन्हें अपने ही जिले में विश्वस्तरीय उपचार उपलब्ध होगा।

कलेक्टर एवं जिला स्वास्थ्य समिति के अध्यक्ष श्री अंशुल गुप्ता ने जिलेवासियों से अपील करते हुए कहा कि मोतियाबिंद एक सामान्य लेकिन समय पर उपचार योग्य बीमारी है। यदि किसी व्यक्ति को धुंधला दिखाई देना, तेज रोशनी में परेशानी होना, रात में कम दिखाई देना अथवा पढ़ने-लिखने में कठिनाई जैसी समस्याएं महसूस हो रही हों, तो वे बिना किसी संकोच के जिला चिकित्सालय विदिशा के नेत्र रोग विभाग में पहुंचकर अपनी आंखों की जांच कराएं। आवश्यकता पड़ने पर उन्हें अत्याधुनिक फेको तकनीक से पूरी तरह निःशुल्क ऑपरेशन की सुविधा उपलब्ध कराई जाएगी। उन्होंने कहा कि किसी भी नागरिक को केवल मोतियाबिंद के कारण अपनी दृष्टि खोने की आवश्यकता नहीं है। समय पर जांच और उपचार से आंखों की रोशनी सुरक्षित रखी जा सकती है। उन्होंने सभी नागरिकों से अपने परिवार के बुजुर्गों एवं जरूरतमंद लोगों को भी इस सुविधा का लाभ दिलाने के लिए प्रेरित करने का आग्रह किया। मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी डॉ. रामहित कुमार ने बताया कि प्रत्येक पात्र मरीज तक गुणवत्तापूर्ण स्वास्थ्य सेवाएं पहुंचाना स्वास्थ्य विभाग की सर्वोच्च प्राथमिकता है। फेको तकनीक की शुरुआत जिले के स्वास्थ्य क्षेत्र के लिए एक महत्वपूर्ण उपलब्धि है। इससे मरीजों को आधुनिक सर्जरी की सुविधा स्थानीय स्तर पर ही उपलब्ध होगी तथा अनावश्यक आर्थिक एवं समय संबंधी परेशानियों से भी राहत मिलेगी।

सिविल सर्जन डॉ. अनूप वर्मा ने बताया कि फेको तकनीक मोतियाबिंद ऑपरेशन की आधुनिक, सुरक्षित एवं प्रभावी पद्धति है। इसमें आंख में अत्यंत छोटा चीरा लगाकर अल्ट्रासोनिक तकनीक से मोतियाबिंद को हटाया जाता है। इस प्रक्रिया में सामान्यतः टांके लगाने की आवश्यकता नहीं पड़ती, दर्द बहुत कम होता है, संक्रमण का जोखिम घट जाता है तथा मरीज कम समय में स्वस्थ होकर अपनी सामान्य दिनचर्या में लौट सकता है। नेत्र रोग विशेषज्ञ डॉ. राकेश साहू ने बताया कि मोतियाबिंद का समय पर उपचार दृष्टि को सुरक्षित रखने के लिए अत्यंत आवश्यक है। यदि किसी व्यक्ति को धुंधला दिखाई देना, रात में देखने में कठिनाई, तेज रोशनी से चुभन या पढ़ने-लिखने में परेशानी जैसी समस्याएं महसूस हो रही हों, तो उन्हें तुरंत जिला चिकित्सालय के नेत्र रोग विभाग में जांच करानी चाहिए। जांच के बाद आवश्यकता अनुसार फेको तकनीक से निःशुल्क सर्जरी की जाएगी।

जनहित में अपील

'धुंधली नज़र को न करें नज़रअंदाज़ l आज ही जिला चिकित्सालय विदिशा के नेत्र रोग विभाग में अपनी आंखों की जांच कराएं और अत्याधुनिक फेको तकनीक से नि :शुल्क मोतियाबिंद ऑपरेशन कराकर अपनी अमूल्य दृष्टि सुरक्षित रखें l समय पर उपचार ही उज्ज्वल भविष्य की कुंजी है l'

हिंदी पत्रकारिता की द्विशताब्दी हर हिंदी भाषी के लिए गर्व का विषय है। ये दो सौ साल न केवल हिंदी बल्कि समूचे भारतीयों की नव चेतना जागरण और सांस्कृतिक उपलब्धियों के सार्थक साल भी हैं। हिंदी पत्रकारिता की यह द्विशताब्दी दैनिक समाचार पत्रों से लेकर सांस्कृतिक पत्रिकाओं के ऐतिहासिक अवदान से परिपूर्ण है। इस पुनीत अवसर पर रबीद्रनाथ टैगोर विवि तथा ग्लोबल स्किल्स यूनिवर्सिटी भोपाल द्वारा राजधानी में तीन दिवसीय सारस्वत आयोजन किया जा रहा है। विवि स्वयं चार गंभीर पत्रिकाओं रंगसंवाद, विश्व संवाद, इलेक्ट्रॉनिकी और वनमाली कथा का प्रकाशन करता है। हिंदी पत्रकारिता के दो सौ साल पूर्ण होने पर आयोजित यह समागम वास्तव में हिंदी पत्रकारिता का आत्मावलोकन और आदरांजलि भी है। इसमें स्वाधीनता गान से लेकर समकालीन हिंदी पत्रकारिता के विभिन्न आयामों पर 10 सत्रों में चर्चा होगी। जिसमे हिंदी के अनेक प्रतिष्ठित लेखक, कवि, आलोचक, पत्रकार और कलाकार अपने विचार साझा करेंगे। इसी महती आयोजन के उपलक्ष में यह विशेष आयोजन-

पाठक - संस्कृति का प्रस्थान

'उदन्त मार्तण्ड' ने हिन्दी पत्रकारिता की ठोस नींव रखी

विगत दो सौ वर्षों में हिन्दी पत्रकारिता का आशातीत विस्तार और विकास हुआ है।

विजयदत्त श्रीधर
पत्रकार, संस्थापक-सप्रे समाचार पत्र संग्रहालय

'हिन्दुस्तानियों के हित के हेत': यह हिन्दी, पत्रकारिता की आदि-प्रतिज्ञा है। इसी संकल्प के साथ 30 मई 1826 को हिन्दी का पहला समाचार-पत्र 'उदन्त मार्तण्ड' प्रकाशित था। युगल किशोर शुक्ल को हिन्दी का प्रथम सम्पादक होने का गौरव प्राप्त हुआ। जनवरी 1931 तक यही माना जाता रहा था कि हिन्दी पत्रकारिता की शुरुआत 1845 में काशी से प्रकाशित होने वाले 'बनारस अख़बार' से हुई। लेकिन 'मॉडर्न रिव्यू' के सहायक सम्पादक ब्रजेन्द्रनाथ बंद्योपाध्याय जब भारतीय भाषाओं की पत्रकार-कला का इतिहास लिख रहे थे, तब उनकी शोध दृष्टि में 'उदन्त मार्तण्ड' की फ़ाइल आई। तब यह तथ्य सामने आया कि हिन्दी का पहला समाचार-पत्र 'उदन्त मार्तण्ड' है।

'विशाल भारत' के सन् 1931 के फ़रवरी, मार्च, अप्रैल और मई चार अंकों में ब्रजेन्द्रनाथ बंद्योपाध्याय के शोध-आलेख प्रकाशित हुए। तदनुसार 'उदन्त मार्तण्ड' का प्रवेशांक 30 मई 1826 को प्रकाशित हुआ था। 30-20 सेंटीमीटर फ़ुलस्केप आकार के आठ पृष्ठों के इस समाचार-पत्र के मुखपृष्ठ पर बड़े अक्षरों में सबसे ऊपर 'उदन्त मार्तण्ड' नाम होता था। इसके नीचे संस्कृत में लिखा जाता था- दिवाकांत कान्ति बिनाध्वान्तमन्तं नचाप्नोति तद्वज्जगत्यज्ञ लोकः। समाचार सेवामृते ज्ञत्वमाप्तुं नशक्नोति तस्मात्करोमीति यत्नं।। इसका अर्थ है- सूर्य के प्रकाश के बिना जिस तरह अँधेरा नहीं मिटता, उसी तरह समाचार-सेवा के बिना अज्ञ जन जानकार नहीं बन सकते। इसलिए मैं यह समाचार-पत्र प्रकाशनरूपी प्रयत्न कर रहा हूँ। अर्थात् 'उदन्त मार्तण्ड' का तात्पर्य है समाचार-सूर्य।

'उदन्त मार्तण्ड' ने हिन्दी पत्रकारिता की ठोस नींव रखी। विगत दो सौ वर्षों में हिन्दी पत्रकारिता का आशातीत विस्तार और विकास हुआ है। हिन्दी पत्रकारिता ने दो बड़े काम किये। एक, देश और दुनिया के हालात और हलचलों में दिलचस्पी लेने वाला पाठक-वर्ग तैयार किया। दूसरे, भाषा को नया रूप दिया और साफ़-सुथरे, सुस्पष्ट और समर्थ गद्य की परम्परा का विकास किया।

हिन्दी पत्रकारिता के लिए यह गौरव की बात है कि उसके मूर्धन्य सम्पादकों में हिन्दीतरभाषी मनीषियों का भी अवदान है। मराठी के माधवराव सप्रे, बाबूराव विष्णु पराड़कर, लक्ष्मण नारायण गर्दे बांग्ला के राजा राममोहन राय, केशवचन्द्र सेन, अमृतलाल चक्रवर्ती, गुजराती के स्वामी दयानन्द सरस्वती, महात्मा गांधी, कन्नड़ के नारायण दत्त, तेलुगु के बालशीरि रेड्डी आदि मनीषियों की लम्बी श्रृंखला है। भारतेन्दु को हिन्दी नवजागरण का अग्रदूत माना जाता है। हिन्दी के शब्द-भण्डार को समृद्ध करने में 'आज' (1920, काशी) के सम्पादकों की महती भूमिका है। हिन्दी गद्य के विन्यास और वर्तनी की एकरूपता के लिए 'सरस्वती' सम्पादक, महावीर प्रसाद द्विवेदी ने कठिन साधना की। गणेशशंकर विद्यार्थी का 'प्रताप' और माखनलाल चतुर्वेदी का 'कर्मवीर' भी हिन्दी पत्रकारिता के गौरव हैं।

रंगसंवाद

शब्द संस्कृति में साझा पत्रिकाएँ

रबीन्द्रनाथ टैगोर विश्वविद्यालय ने शब्द की सत्ता को सर्वोपरि मानते हुए अपनी शैक्षणिक प्रवृतियों में पत्रकारिता के भी नए आयाम जोड़े हैं। ज्ञान-विज्ञान के तकनीकी संजाल में शब्द संस्कृति की अनुष्ठानिक गरिमा का प्रमाण इस संस्थान द्वारा हिन्दी में प्रकाशित महत्वपूर्ण पत्रिकाएँ हैं- इलेक्ट्रॉनिकी आपके लिए (विज्ञान तथा तकनीक), रंग संवाद (कला-संस्कृति), वनमाली कथा (साहित्य तथा विचार) और विश्व रंग संवाद (अन्तरराष्ट्रीय विमर्श)।

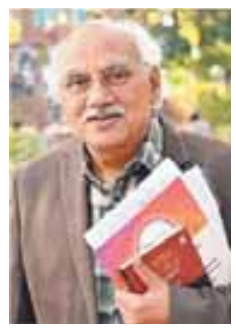

संतोष चौबे
साहित्यकार, कुलाधिपति-रबीन्द्रनाथ टैगोर विश्वविद्यालय

दो शताब्दियों के अन्तराल में पत्रकारिता के साथ जुड़े राष्ट्रहित और लोकहित का आदर्श, अनेक नवाचारों, प्रयोगों, चुनौतियों और परिवर्तन की नयी आहटों के बीच अपनी भूमिका का निर्वाह करता रहा है। हिन्दी की यह हुँकार इकहरी नहीं, बल्कि भारतीय भाषाओं को साथ लेकर उठी सामूहिक आवाज़ बनीं। यह उद्घोष स्वाधीनता संघर्ष के लिए जितना आन्दोलनकारी बना, उतना ही भारत की यशोगामी विरासत और नई प्रगति के लिए, ज्ञान-विज्ञान की प्रशस्त दिशाओं के लिए नई प्रेरणा का प्रतीक भी बना। समाचार और विचार के युग्म को साधती हिन्दी पत्रकारिता के सामने सूचना संचार क्रान्ति की दस्तक के साथ अनेक नए माध्यमों, नए विषयों और नई भाव-मुद्राओं का विन्यास भी प्रकट हुआ। इन सबके बीच शब्द अपनी भूमिका निभाता रहा है।

रबीन्द्रनाथ टैगोर विश्वविद्यालय ने शब्द की सत्ता को सर्वोपरि मानते हुए अपनी शैक्षणिक प्रवृतियों में पत्रकारिता के भी नए आयाम जोड़े हैं। ज्ञान-विज्ञान के तकनीकी संजाल में शब्द संस्कृति की अनुष्ठानिक गरिमा का प्रमाण इस संस्थान द्वारा हिन्दी में प्रकाशित महत्वपूर्ण पत्रिकाएँ हैं- इलेक्ट्रॉनिकी आपके लिए (विज्ञान तथा तकनीक), रंग संवाद (कला-संस्कृति), वनमाली कथा (साहित्य तथा विचार) और विश्व रंग संवाद (अन्तरराष्ट्रीय विमर्श)। हिन्दी के संसार में इन पत्रिकाओं की प्रतिष्ठा असंदिग्ध है। देश-विदेश में प्रसारित, लोकप्रिय तथा पुरस्कृत इन पत्रिकाओं के साथ ही स्थानीय संवाद तथा सम्प्रेषण के उद्देश्य से भी अनेक पत्र-परिपत्रों का नियमित प्रकाशन होता रहा है। टैगोर विश्व विद्यालय और विश्व रंग फाउण्डेशन के इन प्रकाशनों ने राष्ट्रीय-अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर सामाजिक, सांस्कृतिक और साहित्यिक संस्कारों को पोषित करते हुए हज़ारों-लाखों पाठक तैयार किये हैं। अत्युक्ति नहीं कि हिन्दी में एक साथ चार पत्रिकाएँ प्रकाशित करने वाला पहला और अकेला शैक्षणिक संस्थान रबीन्द्रनाथ टैगोर विश्वविद्यालय है।

हिन्दी पत्रकारिता के पितृ पुरूष युगल किशोर शुक्ल द्वारा सम्पादित 'उदन्त मार्तण्ड' की महान विरासत को अपने दृष्टि पथ में रखते हुए तथा अपनी सांस्थानिक पत्रिकाओं का विषय सन्दर्भ लेते हुए रबीन्द्रनाथ टैगोर विश्वविद्यालय लगातार स्थानीय और विश्विक सक्रियता बनाए हुए है। साहित्य, संस्कृति और विज्ञान केन्द्रित पत्रकारिता के साथ ही समकालीन परिदृश्य में मीडिया की भूमिका तथा उसके प्रभाव को देखने-समझने और नई उद्भावनाओं के साथ जुड़कर अपने उपक्रमों को नई गति तथा उर्जा देने की पहल लगातार बनी हुई है। 'विश्व रंग' भी इस दिशा में एक महत्वपूर्ण मंच बन गया है।

आईसेक्ट प्रकाशनों के संपादकगण

कुणालसिंह संपादक-वनमाली कथा

लीलाधर मंडलोई संपादक- विश्व संवाद

विनय उपाध्याय संपादक-रंगसंवाद

विनीता चौबे संपादक-इलेक्ट्रॉनिकी

रंगसंवाद

सम्पादकीय विवेक की पुर्नस्थापना आवश्यक

पत्रकारिता का भविष्य नई तकनीकों में नहीं, बल्कि उस पुराने सम्पादकीय विवेक की पुर्नस्थापना में निहित है जिसने कभी यह स्वीकार किया था कि प्रेस की स्वतंत्रता और प्रेस की ज़िम्मेदारी एक-दूसरे से अलग नहीं की जा सकती। यही वह मूल्य है जिसकी पुनर्खोज आज पहले से कहीं अधिक आवश्यक है।

मनोज श्रीवास्तव
कवि-चिंतक, प्रशासनिक अधिकारी

अब सम्पादक लगभग समाप्त हो गया। संयुक्त राज्य अमेरिका में तीन सौ से अधिक समाचारपत्रों में सम्पादकीय छपना ही बन्द हो गया। किसी समय सम्पादकीय का कॉलम ख़ाली छोड़ देना ही बहुत बड़ा नैतिक साहस था। आज कोई भी व्यक्ति कोई भी आरोप लगा सकता है। कुछ ही मिनटों में लाखों लोग उसे साझा कर सकते हैं। यदि वह असत्य सिद्ध हो जाए, तो उसका खण्डन कभी उसी गति से नहीं फैलता। यहाँ प्रतिनिधित्व वास्तविकता से अधिक प्रभावशाली हो जाता है। अब न्यायालय के निर्णय देने से पहले ही, समाज अपना निर्णय सुना देता है। कोई अभियुक्त अदालत में निर्दोष सिद्ध हो जाए, तब भी उसकी सार्वजनिक छवि नष्ट हो चुकी होती है। यही कारण है कि मानहानि आज केवल कानूनी समस्या नहीं रही, वह अस्तित्वगत समस्या बन गई है। प्रतिष्ठा वर्षों में बनती है, एक वायरल वीडियो उसे कुछ मिनटों में समाप्त कर सकता है। समाधान केवल पुरानी पत्रकारिता की वापसी नहीं है। समय बदल चुका है। लेकिन पत्रकारिता का मूल सिद्धान्त नहीं बदलना चाहिए। यदि किसी वक्तव्य से किसी व्यक्ति की प्रतिष्ठा प्रभावित होती है, तो पत्रकार का दायित्व केवल उसे रेखांकित करना नहीं, बल्कि उसकी जाँच करना भी है। लोकतंत्र में प्रेस का दायित्व केवल सूचना का प्रवाह सुनिश्चित करना नहीं, बल्कि सूचना को सत्यापन, सन्दर्भ और नैतिक उत्तरदायित्व की कसौटी पर परखना भी है। जब यह उत्तरदायित्व संस्थान से हटकर केवल वक्ता या दर्शक पर छोड़ दिया जाता है, तब सार्वजनिक क्षेत्र में सत्य का स्थान शोर ले लेता है, विमर्श का स्थान उत्तेजना और न्याय का स्थान पूर्वाग्रह।

पत्रकारिता का भविष्य नई तकनीकों में नहीं, बल्कि उस पुराने सम्पादकीय विवेक की पुर्नस्थापना में निहित है जिसने कभी यह स्वीकार किया था कि प्रेस की स्वतंत्रता और प्रेस की ज़िम्मेदारी एक-दूसरे से अलग नहीं की जा सकती। यही वह मूल्य है जिसकी पुनर्खोज आज पहले से कहीं अधिक आवश्यक है।

रंगसंवाद

जहाँ हर पृष्ठ सांस्कृतिक दस्तावेज है

'रंग संवाद' ने लोक संचार के पारम्परिक माध्यमों की अहमियत और इनके साथ जीवन जीने की कला के बीच सम्प्रेषण का पुल बनते हुए अपना कारवाँ जारी रखा है। सोलहवें सोपान पर भी यह संवाद बना रहेगा... रंगों के साथ, रागों के साथ, समय और संस्कृति के साथ।

विनय उपाध्याय
संपादक- 'रंग संवाद'

पन्द्रह बरस बीत गए...। समय की इस संधि पर 'रंग संवाद' की यशगामी यात्रा को देखना कितना सुखद है! प्रसन्नता, संतोष और आश्वस्ति इसलिए भी कि सांस्कृतिक संवाद की एक व्यापक, समावेशी और निर्विवाद ज़मीन इस पत्रिका ने तैयार की। यह क्षण बीते पड़ावों को याद करने और नई मंज़िलों के नक्श गढ़ने का है। यह भाव उन कलाविद लेखकों, रचनाकारों और अनुरागी पाठकों के लिए, जो इस अविराम, अनथक यात्रा में साथ रहे। जिनका होना इस महादेश की आत्मा और अस्मिता के पक्ष में 'रंग संवाद' के रचनात्मक मनोबल को पुरअसर करना है। यही वो ताक़त है कि जिसकी बदौलत यह पत्रिका अपनी शपथ पर क़ायम है। ईनाम-इकराम तो इसके नसीब में जुड़े ही, बड़ा हासिल पाठकों का घना होता कुनबा है। हर तिमाही 'रंग संवाद' को पाने-देखने और पढ़ने की प्यास, उत्कण्ठा, कौतुहल इस कदर गहराते हैं कि इस इसरार और अपनापे पर निहाल ही हुआ जा सकता है। यह परस्परता 'रंग संवाद' की उपलब्धि है।

इस संस्करण में हिन्दी पत्रकारिता की दो सदी का प्रसंग भी जुड़ रहा है। हिन्दी पत्रकारिता के दिशाहारा हो जाने और उसकी लोकतांत्रिक छवि पर लगाए जा रहे बेसाख्ता लाँछनों के कुहासे में 'रंग संवाद' का बेदाग़, बेरोक, बदस्तूर अपनी तयशुदा डगर पर चलते रहना उस यक़ीन में शामिल होना है जिसका दो सौ साल पहले बंगभूमि पर 'उदन्त मार्तण्ड' के रूप में बीजारोपण हुआ था। 'रंग संवाद' उसी बीज के सघन वृक्ष की एक सब्ज़ शाख़ है।

समय, संस्कृति और सृजन एक-दूसरे की साँसें हैं। समय, संस्कृति को आकार देता है, संस्कृति सृजन को प्रेरणा देती है और सृजन समय की धारा में अपना निशान छोड़ जाता है। इन तीनों की आपसदारी में पत्रिका एक सेतु का काम करती है। पत्रिका समय को बाँधती है। आज का विचार कल का दस्तावेज़ बन जाता है। कोशिश इस पत्रिका को एक ऐसा कोलाज बनाने की रही जहाँ हर रंग-रेशा, हर तिनका अपने वजूद में अलहदा रहे, लेकिन जो तसवीर बने तो अपने मक़सद में मानीखेज़ लगे। यह समय पन्द्रह साल की एक पत्रिका की उम्र को याद करना नहीं, सांस्कृतिक हस्तक्षेप की गाथा को सुनने का है, जो संगीत की तान से शुरू हुई, इसमें नृत्य की थिरकन का रोमांच जागा, नाटक के संवाद में समय की धड़कनें सुनाई दी और चित्रकला के रंगों में सारी क़ायनात रौशन हो उठी!

यह रंग संवाद में संग्रहित सामग्री का अभिप्रमाण ही रहा कि पत्रिका के कुछ अंकों के किताबी संस्करण प्रकाशित हुए। पाठकों और शोधार्थियों ने इसका भरपूर स्वागत किया। केन्द्र सरकार तथा अनेक सांस्कृतिक उपक्रमों ने 'रंगलोक का महानायक', 'रंगमंच के राही', 'आनंदधारा', 'परम्परा और परिवेश' जैसी दस्तावेज़ी किताबों की अनुशंसा करते हुए इन्हें लोकव्यापी बनाने में सहयोग किया।

पन्द्रह साल में 'रंग संवाद' ने भोपाल की चौपाल से निकलकर दूर देशों की सरहदों तक अपने पाँव पसारे। कलाकारों और साहित्यकारों की बिरादरी, शिक्षा संस्थान, संग्रहालयों की दीर्घाओं और देश भर के पुस्तकालयों में इसने अपनी जगह बनाई। ये उपलब्धि हमारी नहीं, उस सामूहिक चेतना की है जिसने कला को समय की धूल में दबने नहीं दिया। रास्ता कठिन था। डिजिटल युग ने काग़ज़ को चुनौती दी, समय की आपाधापी ने अवकाश छीना। पर हमने जाना कि संस्कृति की गति रुकती नहीं, रूप बदलती प्रशस्त पथ पर चलती रहती है। ...तो अंक छपते रहे, संवाद चलते रहे।

'रंग संवाद' ने लोक संचार के पारम्परिक माध्यमों की अहमियत और इनके साथ जीवन जीने की कला के बीच सम्प्रेषण का पुल बनते हुए अपना कारवाँ जारी रखा है। सोलहवें सोपान पर भी यह संवाद बना रहेगा... रंगों के साथ, रागों के साथ, समय और संस्कृति के साथ।